संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 116 पुष्पम्

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

(शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी)

(Seminar Proceeding)

8-9 मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

डॉ. विचारी लाल मीणा

डॉ. पिंकी मलिक

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

शोध-प्रकाशनविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 116 पुष्प

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

(शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी)

(Seminar Proceeding)

8-9 मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

डॉ. विचारी लाल मीणा

डॉ. पिंकी मलिक

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-93-6

मूल्यम् : ₹ 300.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

प्ररोचना

अनन्तशास्त्रं बहु वेदितव्यं स्वलपश्च कालो बहवश्च विघ्नाः।
यत्सारभूतं तदुपासितव्यं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।।

सारभूतस्य ग्रहणमेव उत्तमव्यक्तित्त्वस्य परिचायकं भवति। शास्त्राणि अनन्तानि विद्यन्ते तत्रापि ज्ञेयमस्ति बहु किमपि कालः अल्पीयान् वर्तते बाधाः नैकाः विद्यन्ते। तत्र हि उपयोगिसारतत्त्वस्य विवेकपूर्वकं ग्रहणं कर्तव्यम्। भारतीयवाङ्मयस्यास्य बोधनक्रमः निश्चितो वर्तते। कथञ्च केन प्रकारेण भारतीयज्ञानं (वेदः) ज्ञेयम्? तदर्थं विद्वद्भिः अस्य सुष्ठुतया वर्गीकरणं कृतम्। यथा विष्णुगुप्तः कौटिल्यः चतुर्धा विभागं कुरुते। 1. आन्वीक्षिकी 2. त्रयी 3. वार्ता 4. दण्डनीतिश्चेति। याज्ञवल्क्येन अमुष्य चतुर्दशप्रकाराः प्रोक्ताः।

पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।।

तत्र हि वायुपुराणे मुख्यत्वेन चतुर्दशविद्यानां चर्चा विहिता किञ्च उपाङ्गं संकलय्य अष्टादशविद्याविभागाः प्राप्यन्ते।

तद्यथा–

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसान्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।

आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेत्यनुक्रमात्।
अर्थशास्त्रं परं तस्मात् विद्यास्वष्टादश स्मृताः।।

षडङ्गानि विद्यन्ते शिक्षा, कल्पः व्याकरणम्, निरुक्तम्, छन्दः, ज्योतिषञ्चेति इमानि सर्वाण्यपि अङ्गानि वेदज्ञानप्राप्तये सहायकानि भवन्ति। शिक्षाशास्त्रं स्वरवर्णादि-उच्चारणप्रक्रियायाः बोधकं भवति। इदं वर्तमान-शिक्षाशास्त्रं (Education) इत्यस्मात् भिन्नं विद्यते। किञ्च आधुनिक-शिक्षाशास्त्रस्यपि कार्यं ज्ञेयप्रक्रियायाः सरलीकरणं सुगमीकरणञ्च विद्यते।

अयं खलु विद्याविभागः वर्तमानपाठ्यचर्यानिर्माणस्य सङ्केतको वर्तते। व्यक्तिः समयानुगुणम् आवश्यकतानुसारं सम्बद्धविद्याभागस्य अनुसरणं कृत्वा स्वस्य भविष्यं सुदृढीकर्तुं नितरां प्रयतते। वर्तमानशिक्षाप्रक्रियायाः मुख्यम् अनिवार्यभूतं च घटकं पाठ्यचर्या वर्तते। या शिक्षाप्रक्रियां सदैव निर्देशितां निश्चिताञ्च कर्तुं युज्यते। शिक्षाव्यवस्थायां अध्यापकशिक्षायाः महत्त्वपूर्णं स्थानं तदर्थं वर्तते यतोहि इयं शिक्षा सर्वशिक्षाणां मूलभूता वर्तते। अध्यापकशिक्षा शिक्षकनिर्माणे संलग्ना वर्तते तथा शिक्षकः भाविष्यस्य निर्माणे संलग्नो वर्तते। अनेनैव प्रकारेण अध्यापकशिक्षायाः भूमिका कस्यापि राष्ट्रस्य उन्नत्यै महत्त्वपूर्णा भवति।

शिक्षाग्रहणाय तथा ग्राहणाय प्राचीनार्वाचीनविधिषु संगोष्ठ्याः (सेमिनार) महत्त्वभूतं स्थानं वरीवर्ति। यत्र अधिगमकर्तारः अधिगमकारयितारश्च स्वविचाराणां विस्तारं तथा परेषां विचाराणाम् आधारं समाप्नुवन्ति। अस्यैव उद्देश्यस्य पूर्तये अस्माकं विश्वविद्यालयस्य शिक्षासंकायेन (वर्तमानशिक्षापीठेन) **द्विवर्षीयाध्यापकशिक्षापाठ्यक्रमान्तर्गते समीक्षात्मकविश्लेषणविषये** (द्विवर्षीय 8-9/2018 अध्यापकशिक्षाकार्यक्रमः समीक्षात्मकविश्लेषण विषय पर) द्विदिवसीयायाः राष्ट्रियसङ्गोष्ठ्याः समायोजनं मार्चमासस्य 8.9.2018 दिनाङ्कयोः अकारि। यत्र सम्पूर्णदेशस्य विभिन्नविश्वविद्यालयानां विद्वद्भिः विदुषीभिः स्वीयं शोधपत्रमुपस्थापितम्। तेषु कतिचन शोधपत्राणि संगोष्ठिकार्यक्रमवृत्ते प्रकाश्यन्ते इति निर्णयः अस्मदीयं हृदयतलं नितराम् आह्लादयति। अयं विषयः नूनमेव आनन्दप्रदः। यैः अस्यां संगोष्ठ्यां भागः गृहीतः ते लाभान्विताः अभवन् किञ्च पुस्तकरूपेण प्रकाशिते सति अयं लाभः सर्वेभ्यः शिक्षाप्रेमिभ्यः भृशं प्राप्स्यते। अस्मिन्नवसरे अहं शिक्षासंकायस्य सर्वेभ्यः कार्यसमर्पितसदस्येभ्यः वर्धापनानि धन्यवादकुसुमानि च प्रयच्छामि।

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः,

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,

केन्द्रीयविश्वविद्यालयः, नवदेहली-110016

सम्पादकीय

'अच्छी पुस्तकें जीवंत देव प्रतिमाएँ हैं। उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।' शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकों का विशिष्ट स्थान है। इसके माध्यम से चिन्तकों के चिन्तन को दीर्घकाल के लिए संजोया जाता है। जिससे अन्य व्यक्तियों को लाभ मिलता है। अथवा यूँ कहें कि आने वाली पीढ़ी को भी उन अच्छे विचारों से लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त होता है। अत: एक अच्छी पुस्तक सच्चे मित्र की तरह सदैव मार्गदर्शन करती है। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर ही 'संगोष्ठी कार्यवृत्त' को पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराए जाने का निर्णय प्रशंसनीय है।

शिक्षा व्यवस्था किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के उन्नयन का मुख्य कारण मानी गयी है। शिक्षा व्यवस्था को मूर्तरूप देने में पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, जो समय सापेक्ष होता है। पाठ्यचर्या का निर्माण तथा उसके कार्यान्वयन में शिक्षक की भूमिका मुख्य होती है। शिक्षकों को तैयार करने के लिए अध्यापक-शिक्षा कटिबद्ध है। जिसमें परिवर्तन, कालक्रम में अपेक्षित होता है। इसको ध्यान में रखकर 'राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षापरिषद्' (NCTE) ने जस्टिस वर्मा समिति के सुझाव के अनुसार 2014 में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में आमूलचूल परिवर्तन किया तथा देश भर के सभी अध्यापक शिक्षा संस्थानों में इसे लागू किया गया।

परिवर्तित पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाईयों की समीक्षा की दृष्टि से श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली द्वारा दिनांक 8-9 मार्च 2018 को "द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक

विश्लेषण" शीर्षक से द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें देशभर के विद्वानों ने अपने-अपने विश्लेषणात्मक पत्र प्रस्तुत किए। उनमें से उत्कृष्ट 22 पत्रों जो क्रमशः संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में हैं, इस पुस्तक में संकलित कर प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि इसका लाभ देश के विविध संस्थानों, शिक्षकों तथा छात्रों को प्राप्त हो सकेगा। इस कार्य में संलग्न सभी संकाय सदस्यों को मैं बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ।

-प्रो. सदन सिंह

शिक्षापीठाध्यक्ष,

श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.विद्यालय, नई दिल्ली

प्रतिवेदन

राष्ट्रीय संगोष्ठी (8-9 मार्च, 2018)

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा **"द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम समीक्षात्मक विश्लेषण"** विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कुल आठ सत्रों में किया गया। जिसमें उद्घाटन तथा समापन सत्र सहित चार तकनीकी सत्र, एक तकनीकी समानान्तर सत्र एवं एक पैनल परिचर्चा सत्र सम्पन्न हुए। संगोष्ठी के सभी उपविषयों से जुड़े कुल 34 पत्र प्रस्तुत किये गये। इस संगोष्ठी का शुभारम्भ दिनांक 8 मार्च, 2018 को प्रातः 10.00 बजे कुलपति महोदय द्वारा उद्घाटन सत्र से किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि **प्रो. सोहनवीर चौधरी** जी (पूर्व उपाध्यक्ष, एन.सी.टी.ई.) तथा अध्यक्ष **प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय** जी (कुलपति, ला.बा.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली) थे। अतिथियों का स्वागत शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष **प्रो. रमेश प्रसाद पाठक** जी ने अपने स्वागत भाषण से किया। उन्होंने द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्यों तथा चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए चिन्तनशील अध्यापक बनने की आवश्यकता पर बल दिया। मुख्य अतिथि **प्रो. सोहनवीर चौधरी** जी ने अपने वक्तव्य में अध्यापक शिक्षा से जुड़े संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा करते हुए कहा कि अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम को निर्धारित करते समय अध्यापकों की सहभागिता अवश्य होनी चाहिए ताकि पाठ्यक्रम अभिकल्पन व्यावहारिक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए किया जा सके। साथ ही उन्होंने अध्यापक शिक्षा के भारतीय प्रतिमान को विकसित करने पर बल दिया जिससे ऐसे प्रभावशाली अध्यापक बनाये जा सके जिनमें ज्ञान, कौशल एवं मानवीय मूल्य समाहित हों।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कुलपति **प्रो. आर.के. पाण्डेय** जी ने तप एवं स्वाध्याय को अध्यापक के लिए आवश्यक बताया। अच्छे काव्य के सृजन में जिस प्रकार प्रतिभा, व्युत्पत्ति तथा निपुणता आवश्यक है उसी प्रकार अध्यापक में गुणवत्ता के लिए ज्ञान की पिपासा, अनुभव तथा अभ्यास अनिवार्य तत्त्व है। साथ ही उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता को वर्षो में न मापा जाये। कम समय में भी गुणवत्ता लायी जा सकती है यदि अध्यापक अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सजग होकर अध्ययन-अध्यापन में संलग्न रहें। उद्घाटन सत्र का समापन **प्रो. नागेन्द्र झा** जी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

प्रथम तकनीकी सत्र **प्रो. सन्तोष मित्तल जी** (पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र, रा.सं.सं.जयपुर) की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ तथा मुख्य वक्ता **प्रो. राजेन्द्र पाल जी** (अध्यक्ष, शैक्षिक शोध प्रभाग, एन.सी.ई. आर. टी.) ने अध्यापक शिक्षा में इन्टरनेट या संचार माध्यमों के द्वारा आकलन एवं मूल्यांकन युक्तियों की चर्चा करते हुए ऑनलाइन परीक्षा पर बल दिया तथा प्रत्येक अध्यापक शिक्षा संस्था में ICT की प्रयोगशाला जैसी मूलभूत सुविधाओं का होना तथा उनका प्रयोग आवश्यक बताया। तत्पश्चात विभाग से **प्रो. रचना वर्मा मोहन** (संगोष्ठी संयोजिका) ने द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक विश्लेषण करते हुए इसके क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों तथा प्रभावी व्यूह रचनाओं पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में विभाग से **डॉ. पिंकी मलिक** एवं **डॉ. प्रदीप झा** ने विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु युक्तियों पर अपना पक्ष प्रस्तुत किया। शोध छात्रा **नविता** तथा **सन्तोष काण्डपाल** ने अध्यापक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग तथा **नवीन आर्य** ने पाठ्यक्रम में योग शिक्षा के महत्त्व पर पत्र प्रस्तुत किया।

पैनल परिचर्चा सत्र **प्रो. राजेन्द्र पाल** जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ तथा मुख्य वक्ता **प्रो. सन्तोष मित्तल** जी ने अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता संवर्धन हेतु, नवाचारी अभ्यासों के अन्तर्गत मल्टीमीडिया अधिगम प्रक्रिया, दल, सहयोगात्मक एवं सहभागिता

आधारित अधिगम, व्यक्तिगत विकास, सम्प्रेषण आधारित अभ्यास, परावर्ती अध्यापक प्रतिमान तथा संकल्पना चित्रण आदि विधियों के प्रयोग पर बल दिया। इसी सत्र के दूसरे मुख्य वक्ता **प्रो. धनंजय जोशी** जी (शिक्षाशास्त्र विभाग, इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय) ने शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में जल्दी-जल्दी होने वाले परिवर्तनों से शिक्षण जगत् पर पड़ने वाले नकरात्मक प्रभाव के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हुए पाठ्यक्रम निर्माण में शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को सम्मिलित करने पर बल दिया।

तकनीकी सत्र-2 **प्रो. धनञ्जय जोशी** जी की अध्यक्षता में विभागीय अध्यापिका **डॉ. कुसुम यदुलाल** ने परिवर्तन एवं प्रबन्धन, **डॉ. विमलेश शर्मा** ने नवाचारी अभ्यासों तथा **डॉ. तमन्ना कौशल** ने द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की चुनौतियों से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किये। इसी क्रम में विभाग से **डॉ. आरती शर्मा** ने द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा छात्राध्यापकों की क्षमताओं का विकास विषय पर पत्र प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **श्रीमती पूजा सिंघल** ने विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम के विविध पक्षों की चुनौतियों पर अपने विचार प्रकट किये। शोध छात्रा **मंजू कुमारी** ने विभिन्न शिक्षण कौशलों तथा शिक्षाचार्य द्वितीय वर्ष के छात्र **मनोज जोशी** ने एक वर्षीय एवं द्विवर्षीय पाठ्यक्रम का विश्लेषण विषय पर अपने पत्र प्रस्तुत किये।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तकनीकी सत्र-3 माननीय **प्रो. के.पी. पाण्डेय जी** (पूर्व कुलपति, मा.गा. काशी विद्यापीठ, वाराणसी) की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। मुख्य वक्ता **प्रो. वी.पी. भारद्वाज** जी (विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी.) ने अध्यापक शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों की दक्षता संवर्धन पर बल देते हुए छात्रों में जिज्ञासु प्रवृत्ति को उत्पन्न करना आवश्यक बताया। सत्य एवं मूल्य आधारित शिक्षा संस्थाओं की स्थापना पर बल दिया। इसी सत्र में दूसरी मुख्य वक्ता **प्रो. सरोज पाण्डेय** जी (निदेशिका, स्कूल ऑफ एजूकेशन, इग्नू) ने अपने वक्तव्य में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में परिवर्तन को आवश्यकता आधारित बनाने पर बल दिया। साथ ही आपने

व्यवहारवादी उपागम के स्थान पर वायगोत्सकी के सामाजिक रचनावाद उपागम को पाठ्यक्रम में अपनाने हेतु सुझाव दिये ताकि छात्र के सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान की जाये। उन्होंने यह भी कहा कि आनन्द पूर्ण (Joyful) अधिगम तथा मानवीय (Humane) अध्यापक वर्तमान समय की आवश्यकता है अतः शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम तथा कार्यान्वयन युक्तियों में समन्वय होने पर ही यह सम्भव है। इसी सत्र में **डॉ. सविता राय** ने नवाचारी अभ्यास, **डॉ. प्रेम सिंह सिकरवार** ने पाठ्यक्रम की गुणवत्ता की चुनौतियों पर पत्र प्रस्तुत किये। शोध छात्रा यास्मीन ने विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम तथा **गुरिन्दर** ने नवाचारी अभ्यास विषय पर पत्र प्रस्तुत किये।

अपने अध्यक्षीय भाषण में **प्रो. के.पी. पाण्डेय** जी ने अध्यापक में प्रतिबद्धता तथा ज्ञान के संकल्प के महत्त्व को बताते हुए अध्यापकों की सोच बदलने पर बल दिया। उन्होंने पाठ्यक्रम के तीनों पक्षों (सैद्धान्तिक, शिक्षणशास्त्र तथा प्रयोगिक कार्य) के समन्वय पर बल दिया। साथ ही विद्यालय तथा अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के मध्य सम्बन्ध विकसित करना आवश्यक बताया जिससे दोनों की गुणवत्ता बढ़ायी जा सके। चतुर्थ तकनीकी सत्र में **प्रो. के.पी. पाण्डेय** जी की अध्यक्षता में **प्रो. ओ.पी. पाण्डेय** (पूर्व ओ.एस.डी., प्रधानमंत्री कार्यालय) जी ने कहा कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में आने वाली समस्याओं तथा उनके समाधान हेतु सुझावों को मंत्रालय स्तर तक पहुँचाया जाये जिससे आगामी चार वर्षीय पाठ्यक्रम का अभिकल्पन करते समय इन पक्षों को पर्याप्त महत्त्व दिया जाये जिससे वास्तव में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को संवर्धित किया जा सके। तत्पश्चात् विभाग से **डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज** ने पाठ्यक्रम के घटकों पर आधारित प्रभावी क्रियान्वयन युक्तियों पर पत्र प्रस्तुत किया। इसी क्रम में **डॉ. शिवदत्त आर्य** ने विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम की चुनौतियों तथा उनके समाधान, **डॉ. विचारी लाल मीना** ने अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यास, **श्री अजय कुमार** ने शिक्षण की व्यूह रचनाओं तथा विभिन्न कौशलों एवं

डॉ. भारती कौशल ने अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की समस्याओं एवं समाधान विषयों पर पत्र प्रस्तुत किये। शोध छात्र **सनत कुमार झा, गोविन्द दास, प्रियंका सेठ** ने नवाचारी अभ्यासों पर अपने पत्र प्रस्तुत किये तथा शिक्षाचार्य (द्वितीय वर्ष) **धर्मेश** एवं **विश्वामित्र** (प्रथम वर्ष) ने क्रमशः नवाचारों एवं अध्यापक शिक्षा में NCTE की भूमिका पर अपने विचार प्रकट किये।

तकनीकी समानान्तर सत्र-4 **प्रो. सरोज पाण्डेय** जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सत्र में **प्रो. के. भरत भूषण** ने विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में समस्याओं तथा परिष्करण के उपायों एवं **प्रो. रजनी जोशी चौधरी** ने द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इसी क्रम में विभाग से **डॉ. सुरेन्द्र महतो** ने पाठ्यचर्चा में भाषा-शिक्षणशास्त्र, **कु. ममता** ने विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता के मुद्दे, **श्री जितेन्द्र कुमार** ने मूल्यांकन व्यूहरचनाओं, **डॉ. रतन सिंह** ने पाठ्यक्रम के मुख्य घटकों के विश्लेषण पर पत्र प्रस्तुत किये। शोध छात्र **दयानिधि तिवारी** तथा **आफिया** (शोध छात्रा, जामिया, मिलिया इसलामिया) ने नवाचार अभ्यास तथा मूल्यांकन एवं नयी तालीम के सन्दर्भ में विचार व्यक्त किये।

शिक्षाचार्य (प्रथम वर्ष) छात्र **पुष्पेन्द्र रावत** ने पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु विधियों तथा व्यूह रचनाओं पर पत्र प्रस्तुत किया। **प्रो. सरोज पाण्डेय** जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन हेतु चारवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने से पूर्व विद्यालयों तथा शिक्षा संस्थाओं के मध्य **MOU हस्ताक्षरित** करने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सुचारू रूप से सम्पादित किया जा सके।

समापन सत्र **प्रो. आर.पी. पाठक** जी के स्वागत भाषण से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात **प्रो. रचना वर्मा मोहन** द्वारा द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन संक्षेप में प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि **प्रो. ओ.पी.पाण्डेय** जी ने अपने वक्तव्य में जीवन के उदात्त मूल्यों को

शिक्षा में निर्धारण करने पर बल देते हुए स्वत्व के विकास को अध्यापक में आवश्यक बताया। अध्यापक को पूर्ण समर्पण भाव रखते हुए छात्र को अज्ञ से प्रज्ञ बनाना आवश्यक है। अपने अध्यक्षीय भाषण में कुलपति **प्रो. आर.के. पाण्डेय** जी ने कहा है कि गुरु को अपने त्याग तथा तपस्या द्वारा छात्रों को अभिप्रेरित करना चाहिए। भारतीयता का संस्कार विवेक का मूल आधार है अतः छात्र को संस्कारवान् बनाना अध्यापक का कार्य है। अन्त में प्रो. के. भरत भूषण द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में वैचारिक मंथन से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं-

1. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के मुख्य घटकों का विश्लेषण करके उसमें निहित गुणवत्ता संवर्धन के विविध पक्षों को चिहिन्त करके उनका उचित प्रकार से क्रियान्वयन करना।

2. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु अधिगमकर्ता केन्द्रित उपागमों यथा- रचनावादी अधिगम, सहयोगात्मक तथा सहभागिता आधारित अधिगम, अनुभवजन्य अधिगम, समस्या समाधान, सामाजिक पूछताछ प्रणाली, संकल्पना चित्रण, रचनात्मक लेखन, जाँच पड़ताल प्रणाली तथा सम्मिश्रित अधिगम (Blended learning) आदि का प्रयोग करना जिससे वर्तमान पाठ्यक्रम में लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

3. आकलन एवं मूल्यांकन व्यूह रचनाओं के अन्तर्गत Online आकलन एवं मूल्यांकन करना तथा रचनावादी परिप्रेक्ष्य में सतत एवं निरन्तर मूल्यांकन पर बल देना।

4. नवाचारी अभ्यासों के संदर्भ में समस्या समाधान आधारित अभ्यास, प्रायोजना कार्य, सम्प्रेषण आधारित अभ्यास, व्यक्तित्व विकास हेतु शिविर आयोजन तथा परावर्ती शिक्षण का प्रयोग करना।

5. विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता लाने हेतु इस कार्यक्रम के पूर्व, क्रियान्वयन के समय तथा पश्चात् में होने वाली

विविध क्रियाओं की उपयुक्त प्रकार से रूपरेखा Hand Book के रूप में निर्मित करना तथा इसके सभी क्रियाकलापों हेतु निरन्तर पृष्ठपोषण प्रदान करना एवं मूल्यांकन करना।

6. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उनका अभिकल्पन करते समय शिक्षाविदों, अध्यापक शिक्षकों, विद्यालय के शिक्षकों तथा प्रशासकों को सम्मिलित करने की अनिवार्यता होना।

उपरोक्त विचारणीय बिन्दु द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को अवश्य ही नया स्वरूप प्रदान करेंगे तथा इस वैचारिक मंथन से प्राप्त निष्कर्षो का व्यावहारिक स्वरूप अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता को नि:सन्देह सुनिश्चित करेगा।

-प्रो. रचना वर्मा मोहन

(संगोष्ठी संयोजिका)

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्ररोचना	iii
	सम्पादकीय	v
	प्रतिवेदन	vii
	संस्कृत	
1.	अध्यापकशिक्षायां नवाचारात्मकाभ्यासाः –प्रो. सन्तोषमित्तल	1
	हिन्दी	
2.	अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास –प्रो. विमलेश शर्मा	10
3.	अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यास –डॉ. विचारी लाल मीना	16
4.	अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभाविता एवं नवाचारी अभ्यास –डॉ. सविता राय	24
5.	अध्यापकशिक्षा पाठ्यचर्या : भाषा शिक्षणशास्त्र –डॉ. सुरेन्द्र महतो	34
6.	अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में चुनौतियाँ –डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार	43

7. विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे एवं चुनौतियाँ 52
—डॉ. शिवदत्त आर्य

8. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा छात्राध्यापकों की दक्षताओं का ह्रास या विकास 57
—डॉ. आरती शर्मा

9. अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम 69
—डॉ. प्रदीप कुमार झा

10. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समस्याएँ एवं उनके समाधान 75
—डॉ. भारती कौशल

11. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के मुख्य घटकों का विश्लेषण 84
—डॉ. रतनसिंह

12. अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास 92
—सनत कुमार झा

13. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम की गुणवत्ता विकास हेतु उपाय 97
—यासमीन अशरफ

14. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योगशिक्षा की आवश्यकता 110
—नवीन आर्य

English

15. Two Years Teacher Education Curriculum and Strategies for Effective Implementation - A Critical Analysis 121
–Prof. Rachna Verma Mohan

16. Critical Appraisal of Curriculum, Implementation and Assessment of Two-year Teacher Education Programme 132
–Prof. Rajani Joshi Chaudhary

17. Challanges in Implementation of Two Year New Curriculum : Bachelor of Education 142
–Dr. Tamanna Kaushal

18. School Internship During Two Year B.Ed. Programme : Issues and Concerns 151
–Dr. Pinki Malik

19. Importance of Teaching Methods and Strategies for Effective Implementation of Curriculum 162
–Ajay Kumar

20. Improvising Assessment Strategies 168
–Jitender Kumar

21. Innovative Practice in Teacher Education Programme 178
–Manju Kumari

22. Evaluation and Rationale of Nai Taleem in the Contemporary context of Teacher Education in India 185
–Afiya Jamal

✦✦✦

अध्यापकशिक्षायां नवाचारात्मकाभ्यासाः

(Innovative Practices in Teacher Education)

–प्रो. सन्तोषमित्तल

शिक्षाशास्त्रविभागः,
राष्ट्रिय–संस्कृत–संथानम्
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

शिक्षायाः उद्देश्यानि समयस्य परिस्थितीनामानुसारं परिवर्त्यमानानि दृश्यन्ते। तदनुसारेण शिक्षाव्यवस्थायां, शिक्षक–प्रशिक्षणप्रक्रियायां, शिक्षणविधिषु च परिवर्तनमपेक्ष्यते। वर्तमानप्रौद्योगिकयुगे कक्षाधारितशिक्षायाः वातावरणं शनैः शनैः जालाधारितेन (Web Based) सान्द्रमुद्रिकाधारितेन (C.D. Based) स्वचालितगत्या पाटिमकक्षारूपत्वेन (Smartclass) च अधिगमस्य प्रक्रियां परिवर्तयत् दृश्यते। परिवर्तितकक्षायाः स्वरूपं ध्यात्वा शिक्षणं कथं नवीनतमोगमैः आकर्षकं, रुचिकरं, सरलञ्च करणीयम् इति अस्माभिः चिन्तनीयम्। सन्दर्भेऽस्मिन् नवचिन्तनस्य आवश्यकता वर्तते। यथोक्तम्– **'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्'**। वस्तुतः **क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः** भवति। साम्प्रतं पुरातनं रक्षणं नूतनेन सह तस्य समन्वयञ्च नितराम् आवश्यकम्। महाविद्यालयानां विश्वविद्यालयानां गुणवत्तासंवर्धनाय इदम् आवश्यकं वर्तते यत् सततं नवाचाराणां प्रयोगः शिक्षणे भवेत्, शोधोन्मुखिचिन्तनं भवेत् यैः छात्राः सक्रियाः स्युः, सततमुन्नतिपथं गच्छेयुः। 'राष्ट्रीय मूल्याङ्कन एवं प्रत्यायन परिषद्' NAAC (National Accredation and Assessment) इयं संस्था उच्चशिक्षायाः गुणवत्तासंवर्धनाय विश्वविद्यालयानां महाविद्यालयानाञ्च निरीक्षणं करोति मुख्यः निम्न–लिखितसप्तबिन्दूनामाधारेण आकलनं करोति च –

1. पाठ्यक्रमस्य पक्षाः (Curricular aspects)

2. शिक्षणाधिगमः मूल्याङ्कनञ्च (Teaching learning and evaluation)
3. अनुसन्धानं, परामर्शः, विस्तारसेवाः (Research consultancy and extension services)
4. आधारभूतसंरचना अधिगमसंसाधनानि च (Infrastructure and learning resources)
5. छात्राणाङ्कृते सहायताप्रगतिश्च (Students support and progress)
6. सञ्चालनं नेतृत्वञ्च (Governance and leardership)
7. नवाचारात्मकाभ्यासः (Innovative practices)

पत्रेऽस्मिन् अध्यापकशिक्षायां नवाचारात्मकाभ्यासाः विषयेऽस्मिन् चर्चिता वर्तन्ते। वर्तमानकाले बालकाः शैशवावस्थातः आधुनिकतमोपकरणैः ज्ञानं प्राप्नुवन्ति यथोक्तम्–

Children have grown up with remote control and they spend more time in computers internet, playing video games etc. than reading books, even toys are now filled with bottoms and blinking lights.

अतः प्रश्नः समागच्छति यत् कथम् एतादृशानां बालकानाङ्कृते शिक्षा प्रदेया? अध्यापकशिक्षायाः स्वरूपं कीदृशं भवेत्? उत्तरं वर्तते यत् **'नवचिन्तनाधारितम्'** वस्तुतः Innovation 'शब्दोऽयं लैटिनभाषायाः' 'Innovare' शब्देन निष्पन्नो वर्तते यस्य अर्थोऽस्ति– 'to change something into something new'

अध्यापकशिक्षाकार्यक्रमे नवाचारात्मकाभ्यासः भवितुं शक्यते यथा–

1. सूक्ष्मशिक्षणाभ्यासः–

शिक्षणं कला विज्ञानञ्चापि वर्तते। कलायाः रूपं स्वीकर्तृणां शिक्षाशास्त्रिणाम् अनुसारं शिक्षकाः जन्मजाताः भवन्ति तथा तेषु विशिष्टशिक्षणकौशलानि विद्यमानानि भवन्ति। विज्ञानस्य रूपं स्वीकर्तृणां शिक्षाशास्त्रिणां प्रशिक्षणेन निर्मिताः भवन्ति। तेषु विशिष्टकौशलानां विकासः

कर्तुं शक्यते। अस्याः द्वितीयधारणायाः आगमनं विज्ञानस्य प्रौद्योगिकविकासस्य च प्रभावेण शिक्षाजगति अभवत्। अनया दृष्ट्या शिक्षकप्रशिक्षणसंस्थानाम् उत्तरदायित्वमपि अधिकं वर्धते।

विभिन्नानां शिक्षणकौशलानाम् अभ्यासाय **'व्यावसायिकक्षमतोन्नयनम्'** इत्यस्मै अवसरः प्रदीयते। छात्राध्यापकाः छात्राध्यापिकाश्च विभिन्नानां कौशलानाम् अभ्यासं कृत्वा सूक्ष्मपाठानां समीक्षणञ्च विधाय एव अन्तःवृत्त्याभ्यास्य/प्रशिक्षुतायाः (Internship) कृते वा गच्छन्ति।

2. समस्यासमाधानोपागमाधारिताभ्यासः-

समस्यासमाधानम् एकः जटिलव्यवहारो विद्यते। व्यवहारेऽस्मिन् अनेकाः मनोवैज्ञानिकप्रतिक्रियाः सम्मिलिताः भवन्ति। छात्राणां समक्षम् एतादृश्यः सामाजिकपरिस्थितयः प्रादुर्भवन्ति। यासु सः स्वयं चिन्तन-तर्क निरीक्षणादीनां माध्यमेन समस्यायाः समाधानं प्राप्तुं शक्नोति। समस्यासमाधानं सार्थकज्ञानं प्रदर्शयति। अस्मिन् मौलिकचिन्तनं निहितं भवति। अस्य कृते शिक्षणव्यवस्था चिन्तनस्तरे क्रियते। यया छात्राः महत्त्वपूर्णशैक्षिकसमस्यायाः समाधानार्थं निवारणार्थं वा प्रयत्नं कुर्वन्ति तथा शिक्षकाः स्वयमेव शिक्षणाय प्रेरिताः भवन्ति। शिक्षणोपकरणैः तेषां शिक्षणं प्रभावपूर्णं भवति। बहुमाध्यमीय-अधिगमप्रक्रिया कथं प्रचलति इत्यस्मिन् विषये कॉन्फ्यूशियस महाभागेनोक्तम् -

I hear and I forget (मया श्रुतं विस्मृतञ्च)

I see and I belive (मया दृष्टं विश्वस्तञ्च)

I do and I understand (मया विहितं अवबुद्धञ्च)

Multimedia technology as an innovative teaching and learning strategy is a problem based learning environment by giving the students a multimedia project to train them in the skill set.

बहुमाध्यमद्वारा अनुदेशनात्मकोपागमाधारिताभ्यासः भवति, अनुदेशनप्रविधिमाध्यमेन ज्ञानात्मकोद्देश्यानि अत्यन्तप्रभावशालिविधिना प्राप्तुं शक्यन्ते। दृश्यश्रव्यसाधनानाम् उपयोगेन प्रतिपादितस्य अनुदेशनप्रविधेः

विषये स्पष्टकल्पना प्राप्तुं शक्यते। अनुदेशनात्मकोपागमः शिक्षणसाधनानाम् उपयोगविषये सैद्धान्तिकव्यवहारिकसूचनाः प्रयच्छन्तीति वक्तुं शक्यते।

3. प्रायोजनाकार्यम् –

प्रायोजनाकार्यस्य कृते छात्राणां समक्षं कतिपयाः समस्याः प्रस्तुतीक्रियन्ते तथा तेभ्यः स्वतन्त्रता प्रदीयते यत् ते समस्यायाः समाधानाय तथ्यानि तथाऽन्यसामग्रीमेकत्रितां कुर्युः। राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानस्य द्विवर्षीयाध्यापक-शिक्षापाठ्यक्रमे PPT निर्माणमपि वर्तते। PPT निर्माणाय प्रायोजनाकार्यं दातुं शक्यते। प्रायोजनाकार्यं द्विविधं भवति-व्यक्तिगतं सामूहिकञ्च। किलपैट्रिकमहाभागेन अस्य चत्वारः भेदाः कृताः –

कलात्मकं, समस्यात्मकं, रचनात्मकम्, अभ्यासाधारितप्रायोजना-कार्यञ्च। शिक्षकाः अनेकानि प्रायोजनाकार्याणि छात्रेभ्यः दत्त्वा तेषां रुचिं विभिन्नान् विषयान् प्रति समेधयितुं शक्नुवन्ति। व्यावसायिकक्षमतोन्नयने 'कलाशिल्पं च' अयं विषयोऽपि निर्धारितो वर्तते अनेन विषयेण सम्बद्धं कलात्मकप्रायोजनाकार्यमपि दातुं शक्यते।

4. दलशिक्षणम्, सहयोगात्मक अधिगमप्रक्रिया वा (Team teaching, Cooperative or Collaborative learning Process)

दलशिक्षणं शैक्षणिकसङ्घटनस्य एकम् ईदृशं रूपम् अस्ति यस्मिन् शिक्षणे कक्षायाम् एकस्य अध्यापकस्य स्थाने विभिन्नविषयाणां विशेषज्ञाः अध्यापकाः सहायकाः भवन्ति एवं ते सर्वे मिलित्वा प्रभाविरूपेण शिक्षणकार्यं कुर्वन्ति। दलशिक्षणं कतिपयविद्वांसः समूहशिक्षणमिति तथा सहकारिताशिक्षण इत्थमपि कथयन्ति। वर्तमानसमये शिक्षाप्रौद्योगिक्याः विकासेन सह शिक्षणे नवीनतमोपकरणानाम् उपयोगितानां वीक्ष्य शिक्षाशास्त्रिणः 'दलशिक्षणं' कक्षायां शिक्षण-अधिगमस्य प्रक्रियां सम्यग्रूपेण सञ्चालनाय एकं महत्त्व-पूर्णं साधनं स्वीचक्रुः। एकस्मिन् दले प्रधानाध्यापक-वरिष्ठाध्यापक-सहायकाध्यापक-प्रयोगशालासहायक-प्रविधिज्ञ-लिपिकाः सम्मेल्यन्ते।

सहयोगात्मकाधिगमस्य प्रकृतिः परम्परागतशिक्षणपद्धत्या प्राप्ताधिगमेन पूर्णतः भिन्नो भवति। सहयोगात्मकाधिगमव्यूहरचनायां एकस्याः कक्षायाः छात्राः लघु-नघु-समूहेषु प्रतिस्पर्धारहितवातावरणे सहयोगात्मकरीत्या परस्परसौहार्दपूर्णशैल्या विषयविशेषेण सम्बद्धपाठ्यसामग्र्याः अधिगमकरणस्य प्रयत्नं कुर्वन्ति। सहयोगात्मकाधिगमस्य नैकाः विधयः सन्ति यथा- स्टूडेण्ट-टीम-एचीवमैन्ट डिवीजन, जिगसा, प्रहेलिका, व्यक्तिगत-सामूहिकाधिगमः, समूहान्वेषणम्, टीम्स गेम, टूर्नामेन्टविधिः इत्यादयः। सहयोगात्मकाधिगमस्य परिणामः उत्तमो भवति यथा-

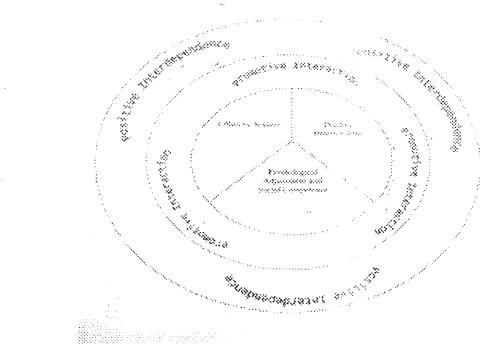

5. सम्प्रेषणाधारिताभ्यासः–

व्यक्तित्वस्य सर्वांगीणविकासाय अध्यापकदक्षतायाः विकासाय च अपि अध्यापकशिक्षायाः पाठ्यक्रमे स्यात्। सम्प्रेषणाधारिताभ्यासेन छात्राध्यापकेषु छात्राध्यापिकासु च सम्भाषणकौशलस्य योग्यता उत्पद्यते। सम्प्रेषणाधारिताभ्यासाय शिबिराणामायोजनम्–

(अ) व्यक्तित्वविकासाय शिबिराणामायोजनम्।

(ब) सम्भाषणशिबिराणामायोजनम्

(स) नूतनविधस्पर्शानामायोजनम्

(द) अभिनयप्रशिक्षणस्यायोजनम् (वीथीनाटकम्)

(य) सम्प्रेषणक्रीडानामायोजनम्

(र) मौखिकाभ्यासः

(अ) व्यक्तित्वविकासाय शिबिराणामायोजनम् - सम्प्रेषणम् एका कला वर्तते। व्यक्तित्वविकासाय प्रभावपूर्णसम्प्रेषणस्य एका कला वर्तते। व्यक्तित्वविकासाय प्रभावपूर्णसम्प्रेषणस्य आवश्यकता भवति। प्रभावपूर्णसम्प्रेषणाय आत्मविश्वासस्य अपेक्षा भवति। 'Art of Living' सदृशी कार्यशालामाध्यमेन आत्मविश्वासेन सह व्यक्तित्वस्य विकासो भवति, द्विवर्षीयाध्यापकशिक्षापाठ्यक्रमे EPC अन्तर्गते अयं बिन्दुः अपि वर्तते।

(ब) सम्भाषणशिबिराणामायोजनम् - भाषा आरम्भस्तरे भाषणमाध्यमेन एव अध्यापनीया। मातृभाषा तु अनुकरणेन आगच्छति। किन्तु विद्यालयेषु संस्कृतवातावरणनिर्माणाय संस्कृतसम्भाषणम् आवश्यकम्। वर्तमानकाले भारते संस्कृतशिक्षणे अनुवादपद्धतेः प्राधान्यं वर्तते। एषा स्थितिः आङ्ग्लभाषाविषयेऽपि वर्तते। वस्तुतः सर्वा अपि भाषा तत्तद्भाषामाध्यमेन पाठनीया, परीक्षा अपि तया एव भाषया भवेत्। 'भाषा संवादोन्मुखी' इति भाषाविज्ञानस्य प्रमुखः सिद्धान्तः। भाषायाः चत्वारि कौशलानि सन्ति, श्रवणं भाषणं, पठनं लेखनञ्च। श्रवणेन भाषणकौशलं तथा भाषणेन श्रवणकौशलञ्च वर्धते। अतः विषयशिक्षणात् प्रागेव भाषाशिक्षणं भवेत्। सम्भाषणशिबिरेषु भाषणकलाप्रशिक्षणं, सर्जनात्मकरचनाप्रशिक्षणं, स्मरणशक्तिप्रशिक्षणं, पठनकौशलप्रशिक्षणमपि देयम्। एताभिः क्रियाभिः छात्रेषु सम्प्रेषणकौशलस्य विकासो भविष्यति।

(स) नूतनविधस्पर्धानामायोजनम् - भाषासम्बद्धानां स्पर्धानामायोजनेन छात्रेषु सम्प्रेषणकौशलस्य विकासो भवति। सम्प्रेषणाय अपेक्षितशब्दविकासे लाभकारिकाः भवन्ति यथा- सूचनारिक्तता, विकल्पः, प्रतिपुष्टिः भाषण-कथाकथन-समस्यापूर्त्ति-प्रश्नोत्तरी इत्यादयः।

(द) अभिनयप्रशिक्षणस्यायोजनम् - प्रशिक्षणेऽस्मिन् छात्राः युगले समूहे च विभिन्नपात्ररूपाणि धारयन्तः विभिन्नभाषाप्रयोगान् शिक्षन्ते। कक्षायां शिक्षकच्छात्रयोः छात्रच्छात्रयोः मध्ये शिक्षकच्छात्राणां छात्राणां च मध्ये विभिन्नपात्रनिर्वहनपूर्वकं सम्भाषणमत्र भवति।

(य) सम्प्रेषणक्रीडानामायोजनम् - चर्चा-परिचर्चा-वादविवाद-

लघुनाटकेत्यादीनां गतिविधीनां माध्यमेन विविधसन्दर्भानुकूलानां संवादानाम् उच्चारणशैल्यादीनां वार्तालापानाञ्च अभ्यासः कारयितव्यः। एभिः क्रियाकलापैः छात्रेषु सम्प्रेषणकौशलस्य विकासो भविष्यति।

(र) मौखिकाभ्यासः- लिङ्गकथन-व्युत्पत्तिकथन-समासकथन-समकालिकांग्लपदसंस्कृतरूपकथनस्पर्धानां माध्यमेन तथा च विभिन्नपदानां, वाक्यानां, गीतानाञ्च मौखिकाभ्यासेन सम्प्रेषशक्तेः विकासो भविष्यति। राष्ट्रियसंस्कृतेसंस्थाने-द्विवर्षीयाध्यापकशिक्षा पाठ्यक्रमे EPC अन्तर्गते एकविंशतिदिवसात्मकः भाषाबोधनवर्गः निर्धारितो वर्तते वर्गेऽस्मिन् संस्कृत-आङ्ग्ल-हिन्दीभाषावर्धनकक्षाः प्रचलन्ति। सम्प्रेषणाधारिता उपर्युक्तवर्णितसर्वाः क्रियाः तत्र आयोज्यन्ते।

6. परावर्त्तिशिक्षणं चिन्तनशीलाध्यापकशिक्षा च (Reflecting Teaching and Reflective Teacher Education)

परावर्त्तिशिक्षणं एका एतादृशी प्रक्रिया वर्तते यस्यां शिक्षकः स्वशिक्षणाभ्यासस्य विश्लेषणं करोति, चिन्तयति च कथं शिक्षणं प्रभावपूर्णं भवेत् येन अधिगमः सरलरीत्या भवेत्? परावर्त्तिशिक्षणस्य स्वरूपं कीदृशं भवति? निम्नलिखितचिन्तनशीलाध्यापकप्रतिमानेन स्पष्टं भवति-

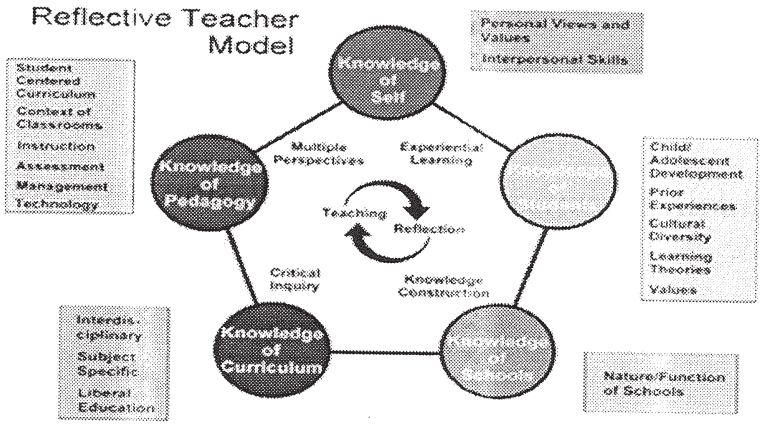

7. सम्मिश्रिताधिगमः अध्यापकशिक्षा च
(Blended Learning and Teacher Education)

वेबाधारितानुदेशनेन यत्र शिक्षकाः पाठयन्ति यथा- स्फूर्तिकक्षासु तच्छिक्षणेन यः अधिगमो भवति सः मिश्रिताधिगमो वर्तते। अस्यां प्रक्रियायां परम्परागत-आधुनिकप्रविधीनां प्रयोगः युगपतरूपेण भवति।

Blended Learning commonly describes learning that combines traditional teaching and learning approaches with information and communication technologies. It is anticipates that blended learning will enhance the student learning experience, at the same time it also demands that the teacher should be trained as only facilitator.

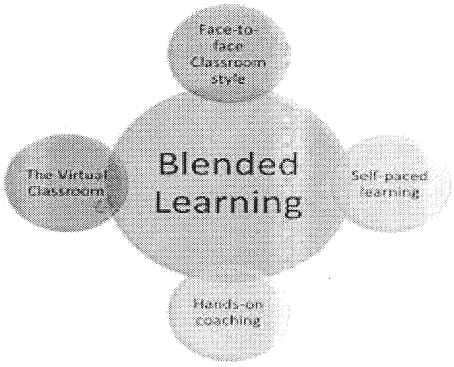

उपर्युक्तचित्रेण स्पष्टं भवति यत् मिश्रिताधिगमप्रक्रियायां प्रत्यक्षरूपेण-स्वगतिना- On line सहयोगेन च अधिगमो भवति।

निष्कर्षतः- साम्प्रतिके समये उपर्युक्तानां नवाचाराणां प्रयोगैः नवीनतमप्रविधिभिश्च अध्यापकशिक्षायाम् अवश्यमेव गुणवत्तासंवर्धनं भविष्यति।

सन्दर्भाः

1. मित्तल सन्तोष 'जयन्ती' पचमं पुष्पम्, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, (मानितविश्वविद्यालयः) जयपुरम्, 2005

2. Website- NAAC
3. मित्तल, सन्तोष 'भाषाशिक्षणे नवाचाराः' नवचेतना पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2006
4. शैक्षिक तकनीकी 'वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय', कोटा, 2008 पृ.सं. 167
5. मित्तल, सन्तोष 'भाषाशिक्षणे नवाचाराः' नवचेतना पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2006
6. Educational Website 'Reflective Teacher Model'
7. Ibid 'Blended Learning'

✦✦✦

अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास

–डॉ. विमलेश शर्मा

एसो.प्रो., शिक्षा-विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय
संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रस्तुत पत्रक- **"अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास" पर आधारित है जिनके द्वारा शिक्षक के साथ शिक्षण क्रियाओं में सुधार एवं विकास किया जा सकता है।**

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के तहत नवाचारी प्रवर्तन निम्नलिखित हैं-

1. सूक्ष्म शिक्षण- यह कक्षागत अध्यापन प्रक्रियाओं की शिक्षा देने के लिये नवीन शिक्षण प्रणाली है। जिसका उपयोग शिक्षकों में विशिष्ट शिक्षण कौशलों के विकास के लिये किया जाता है। जो छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन हेतु प्रभावशाली होते हैं। तथा शिक्षण सम्बन्धी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्ति से भी है। अर्थात् ज्ञान प्राप्ति के कौशल अधिग्रहण में हस्तांतरण स्थिति में वास्तविक शिक्षण कार्य की स्थिति से है। **इस प्रक्रिया द्वारा छात्राध्यापक के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।**

2. अनुकरणीय शिक्षण - इसको नाटकीय विधि भी कहा जाता है कि प्रभावशाली शिक्षकों के व्यवहार के कुछ प्रारूप होते हैं जिनका अभ्यास किया जा सकता है। और छात्राध्यापक के शिक्षक, छात्र, निरीक्षण की भूमिकाओं को शिक्षण प्रारूप के रूप में प्रस्तुतीकरण,

निदान मूल्यांकन तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए **कक्षा शिक्षण के सामान्य व्यवहार का विकास करने की क्षमताओं में वृद्धि की जाती है।**

3. अन्तर्क्रिया विश्लेषण - यह विधि शिक्षक व्यवहार का मापन करती है। इसका प्रयोग पृष्ठपोषण विधि के रूप में किया जाता है। शिक्षक व्यवहार के दो पक्ष शाब्दिक और अशाब्दिक अन्तर्क्रिया जो दस वर्गीय पद्धति पर आधारित है इन्हीं दस वर्गों की सहायता से कक्षा व्यवहार का निरीक्षण, आलेख तैयार करना, आव्यूह तालिका बनाकर गणना करना तथा व्याख्या करना होता है जिससे छात्रों को शिक्षण हेतु व्यवहारों का बोध कराया जाता है। **इसके द्वारा छात्राध्यापकों में आत्मप्रत्यय का निरीक्षण, स्वमूल्यांकन करने की क्षमता का विकास होता है।**

4. अभिक्रमित अनुदेशन - व्यक्ति अनुदेशन की विधि है जिसमें छात्र सक्रिय होकर अपनी गति से सीखता है और उसे तत्काल पृष्ठपोषण दिया जाता है। **इस विधि द्वारा छात्रों को पाठ्यवस्तु के तत्वों का विभाजन, क्रमबद्ध व्यवस्था, छात्र अनुक्रियाओं को अवसर, पुनर्बलन प्रदान करना, व्यूह रचनाओं की व्याख्या, उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखना तथा अधिगम परिस्थितियों को उत्पन्न करने की क्षमता का विकास किया जाता है।**

5. समूह शिक्षण - टोली शिक्षण एक प्रविधि है, इसके द्वारा परम्परागत कक्षा-शिक्षण में बदलाव तथा सुधार लाने के लिये शिक्षकों द्वारा शिक्षण समय प्रकरण का अधिक बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास किया है, छात्रों की कमजारियों का निदान हेतु प्रयास किये जाते हैं तथा उद्देश्य, साधनों के अनुसार शिक्षण कौशल क्षमता का विकास किया जाता है। जिसमें शिक्षक स्वयं कक्षा शिक्षण व्यवहार को समझ सके, सुधार ला सके निर्णयात्मक क्षमता का विकास कर सके। **इस प्रविधि का प्रयोग मानवीय सम्बन्धों के लिये किया जाता है।**

6. क्रियात्मक अनुसन्धान – यह नवाचारी विधि है जिसके द्वारा विद्यालय एवं कक्षा शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है तथा शिक्षण प्रक्रिया में सुधार एवं विकास किया जाता है। शिक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर उनके व्यावसायिक विकास में वृद्धि की जाती है। इसके प्रभावी तरीकों को अपना कर कार्य प्रणाली को सशस्त बनाया जाता है। **इस विधि द्वारा शिक्षक आत्म मूल्यांकन कर सकारात्मक व्यावसायिक अभिवृद्धि विकसित करता है।**

7. इन्टर्नशिप – अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षण के अभ्यास को अधिक महत्त्व दिया जाता है। यह अभ्यास की विधि सुधारात्मक एवम् प्रयोगात्मक रूप में जानी जाती है एवं इसमें शिक्षण अभ्यास तथा निर्देशित क्षेत्र अनुभवों का समायोजन है। विद्यालय कार्यक्रम अभ्यास शिक्षण, विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी के अवसर भी प्राप्त होते हैं। जो व्यवहारिक होते हैं तथा इन्हीं के द्वारा विद्यालय समुदाय से पहचान (भावनाओं) को विकसित करता है। **अर्थात् स्कूल की समग्र परिस्थतियों में उसे आर्थिक पक्ष को छोड़कर शिक्षण कौशल दक्षता रूपी व्यावसायिक सर्वोच्चता देने में समर्थ होते हैं।**

8. सामुदायिक जीवन – वर्त्तमान शिक्षा के अन्तर्गत सामुदायिक जीवन जो कि बाह्य दुनिया का महत्त्वपूर्ण आधार बन गया है उसी को महत्त्व प्रदान कर शिक्षा कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य – **छात्रों में व्यक्तिगत एवं सामाजिक प्रभावशीलता उत्पन्न करना है।**

9. अभिविन्यास पाठ्यक्रम/कार्यक्रम – छात्राध्यापकों को शिक्षण कार्यक्रम की प्रकृति, महत्ता, क्षेत्र की जानकारी प्राप्त करना, उन्हें दायित्वों एवं आवश्यकता के अनुरूप ढालना, चयनित अध्ययन विषय की जानकारी तथा परामर्शदाताओं से परिचित कराना प्रमुख है। अवधि चार से छः दिवस की होती है। इसमें पाठ्यक्रम को तैयार कर शिक्षक छात्रों के मध्य सञ्चारित कर दिया जाता है **छात्रों के नेतृत्व में सामूहिक विचार विमर्श द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न होता है।**

10. शिक्षण शास्त्र - यह नवीन प्रवर्तन के रूप में जाना जाता है जिसकी प्रकृति कलात्मक और वैज्ञानिक दोनों ही है। शिक्षण शास्त्र के अन्तर्गत **शिक्षा की क्रियाओं, शिक्षण एवं प्रशिक्षण क्रियाओं, अनुदेशन की क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है। जिसमें छात्रों में क्रियाओं का ज्ञान, कौशल, अभ्यास तथा कलात्मक पक्षों की क्षमता विकसित की जा सके।**

11. सूचना सम्प्रेषण तकनीकी - एक प्रभावशाली नवाचार है। जिसके द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को छात्रों के लिये रोचक बनाया जा सके। **सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का पाठ्यक्रम के साथ एकीकरण भाषा शिक्षण के साथ अन्य विषयी शिक्षण में किया जाना चाहिए जिससे छात्रों में आई.सी.टी. का प्रयोग करने का ज्ञान एवं कौशल का विकास हो सके।**

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में निहित नवाचारी प्रवर्तनों के अभ्यास के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है-

- प्रशिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों में **नवाचारी प्रवर्तनों के प्रति रुचि उत्पन्न की जाय, उन्हें जागरूक बनाया जाये जिससे परम्परागत उपागमों के साथ संयुक्त कर शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली** बनाया जाय।
- **सकारात्मक विचारों की स्वीकृति आंशिक मानदेय पर आधारित होती है।** भौतिक सुविधायें और आर्थिक सहायता नवीन विचारों को अग्रसर करने में सहायक होता है। इसलिये व्यक्ति को **कार्य हेतु मानदेय की व्यापकता हेतु महत्त्वपूर्ण आयाम** है।
- सामूहिक विचार विमर्श नवाचार को उत्पन्न करता है। यदि उपागम समस्या समाधान केन्द्रित हो तो समूह के सदस्यों के द्वारा किया गया विचार विमर्श समस्या समाधान केन्द्रित विधि के लिये उत्तम नवाचारी संरचनात्मक विचार होगा।

- नवाचारी विचारों की स्वीकृति मूल्यों पर निर्भर करती है, इस दिशा में सुधार गुणात्मक की अपेक्षा की जाती है। बल्कि शिक्षण अभ्यास की व्यवस्था को शिक्षण-अभ्यास कार्यक्रम स्वीकार किया जाय।
- अग्रिम नवाचारी अभ्यास निदानात्मक उपकरण के माध्यम से सम्भव है। इसके लिये सतत आन्तरिक आकलन और सेमुलेटिव रिकार्ड व्यवस्था को स्वीकार किया जाय।
- अन्त में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम समग्र रूप में शिक्षण कौशल रूपी नवाचार पर आधारित होना चाहिए। शैक्षिक गुणवत्ता एवं शिक्षण परिस्थतियों में सुधार हेतु शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

सेवापूर्व शिक्षकों ने प्रशिक्षण के दौरान जो ज्ञान, कौशल, शिक्षण विधियों के विषय में जानकारी प्राप्त की है विद्यालय व्यवस्था में बालकों के शिक्षण अधिगम में प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह कर सके। कक्षा की परिस्थितियों में सुधारात्मक विधियाँ ही शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारी मानी जाती है। जो छात्रों को सीखने तथा सिखाने में सार्थक सिद्ध हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. Anderson E. J 1967 *"Improving Teaching Analysis of Classroom Verbal Interaction"* Halt, Rinchart and Winston Inc N York.
2. Burner J.S. 1966, *"Towards a Theory of Instruction, Massachusetts, Harward University Press."*
3. Clark Sc. T, 1970 A General Theory of Teacihing, Journal of Teacher Education Vol-21, No.3

4. Hiliard F.H. 1971, *"Teaching the Teachers"* Landon George Allen Unwin Ltd.

5. Pandey B.N. 1975 *"Secondary Teacher Education Curriculum"* Department of Teacher Education, NCERT, New Delhi.

6. Sharma R.A., 2002 Teacher Education. Royal Kalt Book Depot Meerut, U.P.

7. Treble J.W., (1991) *"Future of Teacher-Education.",* 2 and on, Roubledge and Kogal Paul.

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यास

–डॉ. विचारी लाल मीना

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री.ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली

भूमिका–

शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है यह विकास की प्रक्रिया है। मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में कुछ न कुछ अवश्य सीखता है। शिक्षा ही मनुष्य का सर्वाङ्गीण विकास करती है। समाज के विकास की आधारशिला भी है। यह शिक्षा मानव का निर्माण कर उसे व्यवहार योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही अन्तर्निहित गुणों का विकास सम्भव है। इस विकास के लिए विद्यालय जो लघु समाज का प्रतिबिम्ब है इस प्रकार का वातावरण प्रस्तुत करते हैं जहाँ राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है। और इस निर्माण कार्य को सुस्थिर दिशा प्रदान करने का कार्य शिक्षकों का है। जो इस दायित्व का निर्वाह सरलता से करते हैं। इस निर्माण कार्य के लिए ही शिक्षकों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान माना जाता है–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

प्रो. दौलतराम कोठारी आयोग 1964-66 के अनुसार– **"भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा हैं।"**

यह सामान्य तथ्य है कि दिन प्रतिदिन तीव्रता के साथ ज्ञान में वृद्धि होती जा रही है। प्रत्येक क्षेत्र में नये विचार, तथ्य, सिद्धान्त, नियम, विधियाँ तथा तकनीकी का समावेश सूचनाओं के क्षेत्र को विस्तृत कर रहा है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 शिक्षा के उन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आयामों की वाँच्छनीयता पर विस्तृत चर्चा एवं तार्किक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो बच्चों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा के सामाजिक सन्दर्भ एवं शिक्षा के लक्ष्य जिसमें **"बच्चों को क्या पढ़ाया जाये और कैसे पढ़ाया जाये"** की कसौटी पर विचार करते हुए पाठ्यचर्या निर्माण में निम्न सिद्धान्तों का प्रस्ताव रखा गया है जो निम्नलिखित है–

- बच्चों के ज्ञान, सम्भावित क्षमता और प्रतिभा का विकास।
- शारीरिक एवं मानसिक योग्यताओं का पूर्णतम सीमा तक विकास।
- बालकेन्द्रित और बाल सुलभ तरीके से विभिन्न क्रिया कलापों का अन्वेषण।
- खोज के माध्यम से सीख उत्पन्न करना।
- तनावमुक्त शिक्षा।
- बच्चों के ज्ञान एवं समझ का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन।
- पाठ्यक्रम को गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा करना।
- किसी भी शिक्षा में फेल नहीं करना।

अध्यापक शिक्षा में नवाचार–

शिक्षा के क्षेत्र में **"नवीन एवं आधुनिक प्रवृत्तियों का प्रयोग ही नवाचार है।"** नवाचार ऐसे विषय की ओर संकेत करता है जो प्राचीन पद्धतियों से भिन्न तथा आधुनिकता से सम्बन्धित होता हैं। अर्थात् नवाचार का अर्थ ऐसे परिवर्तन से है जो पूर्व स्थापित विधियों, कार्यक्रमों एवं परम्पराओं का समावेश करता हैं। एवं शिक्षा को जीवन्त और समयानुकूल बनाने के लिए उसकी विषयवस्तु एवं शिक्षण प्रविधियों में नवीनता लाना है।

नवाचारों का प्रयोग करके सीखने सिखाने की प्रक्रिया में गतिशीलता लायी जा रही है। इस दृष्टि से विद्यालयों में दीवार समाचार, बाल

अखबार प्रकाशन, प्रार्थना स्थल पर छात्रों द्वारा सद्विचार, प्रेरक प्रसंग, समाचार वाचन भी शैक्षिक नवाचारों के नवीन उदाहरण है।

बालक अपने अनुभव के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। इसलिए अध्यापक को बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप विद्यालय में गतिविधि आधारित कार्यक्रम आयोजित करें जिससे सभी बच्चों को विकास का अवसर मिल सके। सक्रिय गतिविधि के जरिये ही बच्चे अपने आस पास की दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं इसलिए प्रत्येक साधन का उपयोग इस तरह किया जाना चाहिए कि बच्चे को स्वयं को अभिव्यक्त करने, वस्तुओं का प्रयोग करने, अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश को जानने में मदद मिल सकें। इसके लिए स्कूल के विषयों और पाठ्यचर्या के क्षेत्रों में नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग की आवश्यकता है। इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग से बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर प्राप्त होने के साथ-साथ अपने ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ने के अवसर प्राप्त होते हैं।

यह सत्य है कि सभी सुविधाओं से सम्पन्न विद्यालयों में छात्रों के नामांकन की संख्या में वृद्धि हुई है परन्तु गुणवत्तापरक शिक्षा में अभी आशानुरूप वृद्धि नहीं हुई है जहां संख्यात्मक वृद्धि (Quantity) होती है वहा गुणात्मक वृद्धि में कमी आ जाती हैं इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रुचिपूर्ण शिक्षण पद्धति अपनायी जाये जैसे- **भ्रमण विधि, खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि, खोज विधि, टोली शिक्षण विधि, अनुकरणीय शिक्षण, सूक्ष्म शिक्षण, आगमन-निगमन विधि, करके सीखना, रचनावादी शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन, मस्तिष्क उद्वेलन, माइन्ड मेपिंग, सहकारी शिक्षण।**

1. रचनावादी शिक्षण-

रचनावादी शिक्षण एक ऐसी रणनीति है जिसमें विद्यार्थी के पूर्वज्ञान, आस्थाओं और कौशल का इस्तेमाल किया जाता है रचनात्मक

रणनीति के माध्यम से विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान और सूचना के आधार पर नई समझ को विकसित करता है। इस शिक्षण रणनीति में शिक्षण तथा छात्र को सक्रिय संवाद की स्थिति में रहना चाहिए। इस शिक्षण में 5E मॉडल का अनुसरण किया जाना चाहिए-

- ✓ संलग्नता
- ✓ अन्वेषण/खोज
- ✓ व्याख्या
- ✓ विस्तार
- ✓ मूल्यांकन

2. मस्तिष्क मन्थन-

मस्तिष्क मन्थन वह प्रक्रिया है जिसमें कुछ लोग आपस में मिलकर किसी विषय पर चर्चा करते हैं और अपने विचार रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने तर्क या विचार, समूह के सामने रखता है और उनका विश्लेषण करते है। प्रत्येक बिन्दु पर चर्चा की जाती है। जिससे जटिल समस्याओं का हल आसानी से निकल जाता है।

3. अभिक्रमित अनुदेशन-

बी.एफ. स्किनर ने इस प्रत्यय को शिक्षण की कला अधिगम का विज्ञान कहा है इसका आविर्भाव अधिगम के सिद्धान्तों के आधार पर अनुदेशन की एक रणनीति के रूप में हुआ है इसमें छात्रों के अधिगम के लिए पाठ्यवस्तु को क्रमबद्ध रूप में छोटे-छोटे पदों में प्रस्तुत किया जाता हैं प्रत्येक पद को पढ़ने के साथ छात्र को अनुक्रिया करनी होती हैं इस अनुक्रिया की जाँच वह स्वयं करता हैं। सही अनुक्रिया से छात्र को पुनर्बलन भी मिलता हैं। और वह अपने सीखने की गति के अनुसार आगे बढ़ता है। छात्रों की अनुक्रियाएँ उनमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाने में सहायक है।

4. माईन्ड मैपिंग-

माईन्ड मैपिंग यानी कोई काम या प्रोजक्ट शुरु करने से पहले बनाया गया एक ऐसा खाका जिसमें किस प्रकार से वह काम किया जायेगा, उसकी सभी बातें क्रमानुसार रखी हो। जब हम बिना किसी प्लान किए कोई भी काम करते है तो या तो आखिरी समय में कई चीजें याद आती है या कई चीजें छूट जाती है ऐसी ही बातों से बचने के लिए माईन्ड मैपिंग की जाती हैं। मान लीजिए आपको किसी बच्चे से सर्कस पर एक निबन्ध लिखवाना है और आप उस बच्चे से अच्छा निबन्ध लिखवाना चाहते हैं तो आप पहले उसको सर्कस में प्रयोग होने वाली दस चीजों के नाम लिखने को कहिए जैसे- जोकर, जानवर, आर्टिस्ट, नेट आदि। इन शब्दों की सहायता से उस सर्कस के बारे में दूसरी बातें लिखने में कहीं ज्यादा आसानी होगी। जब आप किसी प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहे हैं तो उस प्रोजेक्ट से सम्बन्धित जो भी बात आपके दिमाग में हो उसे एक कागज पर लिखते जायें।

5. सहकारी शिक्षण-

सहकारी शिक्षण सीखने की एक विधि है जिसमें छात्र एक साथ किसी सार्थक परियोजना पर कार्य करते हैं छात्रों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित कर देते हैं वे अपने-अपने काम के प्रति जवाबदेह हैं। समूह के कार्य का मूल्यांकन किया जाता है। सहकारी समूह एक दूसरे के साथ-साथ काम करते है और एक टीम के रूप में काम करना सीखते हैं। छोटे-छोटे समूहों में छात्र अपने ज्ञान को साझा करते हैं और अपने कमजोर कौशल को भी विकसित कर सकते हैं। वे संघर्ष से निपटना सीखते हैं। शैक्षिक नवाचारों के अन्तर्गत मूल्यांकन के क्षेत्र में भी नवाचार का प्रयोग हो रहा है। जिसमें–

- ❖ रटने की पद्धति का अन्त
- ❖ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
- ❖ निदानात्मक मूल्यांकन

- ❖ सेमेस्टर प्रणाली को लागू करना
- ❖ ग्रेडिंग प्रणाली
- ❖ शिक्षण डायरी का प्रयोग

प्रायोगिक नवाचार– प्रायोगिक नवाचार से तात्पर्य शिक्षा अथवा शिक्षण में यान्त्रिक शिक्षण विधियों एवं सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग से है। प्रायोगिक नवाचारों को भी दो भागों में बांटा जा सकता है–

1. आधुनिक नवाचार, 2. अत्याधुनिक नवाचार

आधुनिक नवाचार–

1. आकाशवाणी
2. दूरदर्शन
3. टेपरिकॉर्डर
4. व्यक्तिनिष्ठ अनुदेशन प्रणाली
5. कम्प्यूटर
6. प्रणाली उपागम

अत्याधुनिक नवाचार– आधुनिक युग की अवधारणा से अभिप्रेत है इसके अन्तर्गत निम्नलिखित नवाचार प्रयुक्त किये जा सकते है–

1. ई-अधिगम– कम्प्यूटर से मोडेम तथा दूरभाष के संयोजन द्वारा इन्टानेट में विद्यमान सभी समाचार एवं सूचनाएँ आदि उपलब्ध हो जाती है। ई-मेल के द्वारा विचार विनिमय का लिखित रूप भी सम्भव हो जाता है। तथा इससे शिक्षणकार्य सरल हो जाता है विडियों कान्फ्रेसिंग के द्वारा कक्षा शिक्षण सुलभ हो जाता है जिससे समय एवं धन की बचत होती है।

2. एम. अधिगम– एक ऐसा अधिगम है जो छात्रों को मोबाईल तकनीकी द्वारा सीखने के असंख्य अवसर प्रदान करता है इसके अन्तर्गत Text Message, Multimedia Message, Audio talk तथा Video

Chat, Video call आदि के माध्यम से भी शिक्षण को प्रभावी तथा रोचक बना सकते हैं।

3. स्मार्ट क्लास– स्कूल में शिक्षा की तस्वीर बदल रही है अब कक्षाओं में छात्रों की पढ़ाई पहले से ज्यादा सुविधाजनक और हाईटेक हो गई हैं। देश के अनेक स्कूलों में ब्लैकबोर्ड की जगह प्रोजेक्टर्स, टीचर के हाथ में चॉक की जगह स्टाइलस डिवाइस और बच्चों के हाथ में पैन पैंसिल की जगह रिमोट कन्ट्रोल आ गए है ऐसे में इसे विकासशील देश में शिक्षा की नई तस्वीर कहा जा सकता है।

नई तकनीकी से शिक्षा ले रहे छात्रों की पढ़ाई केवल किताबों तक सीमित नहीं है पढ़ाई के इस नए तरीके में बच्चों को हर चीज वीडियों, पिक्चर्स और ग्राफिक्स के माध्यम से समझाई जाती हैं। टेस्ट देने के लिए भी हाईटेक तरीके इस्तेमाल होते हैं। प्रोजेक्टर पर प्रश्न दिखते ही छात्र रिमोर्ट के जरिए अपना जवाब देंगे और तुरन्त सही, गलत का पता भी चल जायेगा। पढ़ाई का तरीका बदलने वाली ये टेक्नोलॉजी केवल बच्चों के लिए ही नहीं अध्यापकों के लिए भी आसान हैं।

4. पटल कक्षा– मलटी कक्षा या फ्लिप्ड क्लासरुम अनुदेशात्मक रणनीति और ब्लेंडेड लर्निंग का एक प्रकार है यह अनुदेशात्मक सामग्री को कक्षा के बाहर उपलब्ध करा कर परम्परागत शिक्षा व्यवस्था को बदलता है मलटी कक्षा में छात्र प्रशिक्षक के नेतृत्व में ऑन लाईन लेक्चर देखते हैं, आनॅलाईन चर्चा करते है और रिसर्च करते हैं।

अन्त में सुझाव के रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षाशास्त्र में नवाचारों का प्रयोग नितान्त अनिवार्य है। शिक्षक आधुनिक नवाचारों से युक्त शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें जिससे छात्रों को सरल व्यावहारिक अवबोध तथा अधिगम प्राप्त हो सके। तथा मुख्य रूप से सैद्धान्तिक नवाचारों के अन्तर्गत शिक्षाविदों द्वारा ऐसी नीतियों का निर्माण किया जाए जिससे शिक्षण को व्यापक व्यावहारिक तथा प्रभावी बनाया जा सके और यह तभी सम्भव हो पायेगा जब शिक्षणशास्त्रीय संस्थानों में

नवाचार विषय के रूप में हो जहाँ नवाचारों के सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक दोनों रूपों का सकारात्मक तथा व्यावहारिक अध्ययन हो सके।

सन्दर्भः–

1. शिक्षा में नवचिन्तन, डॉ. रामपाल सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण, 1983
2. शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियाँ, प्रो. आर.के. चोबे, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2004
3. शिक्षा में नवाचार, डॉ. विश्वनाथ बिहारी लाल, डॉ. नरेश चन्द्र त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. शैक्षिक तकनीकी एवं नवीन प्रवृत्ति, एस.पी. कुलश्रेष्ठ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
5. आधुनिक मापन एवं मूल्याङ्कन, एस.पी. गुप्ता और डॉ. अलका गुप्ता, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2010.
6. सूचना, सम्प्रेषण एवं शैक्षिक तकनीकी, डॉ. एस.के. मङ्गल, टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना, 2010.
7. सूचना, संचार एवं शैक्षिक तकनीकी, डॉ. एम.एस. सचदेव, प्रो. के.के. शर्मा, मनप्रीत कौर, ट्वन्टी फर्स्ट सेन्चूरी पब्लिकेशन, पटियाला, 2012

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभाविता एवं नवाचारी अभ्यास

–डॉ. सविता राय

सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्रविभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत
विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली

भूमिका

शिक्षा का स्तर जितना उच्च होगा समाज के नागरिक भी उतने उत्तम होंगे क्योंकि शिक्षा को समाज निर्माण की प्रक्रिया कहा गया है। समाज की बदलती आवश्यकताओं के साथ ही निर्माण की इस प्रक्रिया में भी अपेक्षित परिवर्तन आवश्यक हैं। आज शिक्षा शिक्षक केन्द्रित न होकर छात्र केन्द्रित है। विद्यार्थियों द्वारा स्वयं सीखने हेतु उचित परिस्थितियों का निर्माण करना शिक्षक का कार्य है। आज का शिक्षक एक मार्गदर्शक एवं शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों हेतु सुविधा उपलब्ध (Facilitate) कराने वाला माना जा रहा है। शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया में छात्रों के लिए अधिगम परिस्थितियों के निर्माण एवं अधिगम सामग्री की उपलब्धता के साथ ही अधिगम हेतु उन्हें उत्सुक एवं जिज्ञासु बनाने तथा अधिकाधिक वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति के दायित्त्व को अधिक प्रभावी ढ़ंग से निभा सके इसके लिए शिक्षक शिक्षा में भी नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियों को विकसित करने एवं उन्हें व्यावहारिक रूप देने पर बल दिया जा रहा है। शिक्षक शिक्षा वह कार्यक्रम है जिसमें भावी शिक्षकों को उनके ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति की दृष्टि से तैयार किया जाता है। शिक्षण व्यवसाय हेतु शिक्षण कौशल (Teaching skill), शैक्षणिक

सिद्धांत (Pedagogical theory) तथा व्यावसायिक कौशल (Professional skill) का ज्ञान शिक्षकों को प्रदान किया जाता है जिससे वे छात्रों को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। वर्तमान में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी ने अधिगमकर्त्ता की सूचनाओं तक पहुँच सुनिश्चित कर एवं विषय वस्तु उपलब्ध कराकर उसे स्वतन्त्र अधिगम हेतु उचित वातावरण दिया है। संप्रेषण तकनीकी के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तनों ने शिक्षक को भी इस योग्य बना दिया है कि वह परंपरागत कक्षा शिक्षण की गतिविधियों को ऑनलाइन कक्षा गतिविधि के रूप में परिवर्तित कर सके अथवा ऑनलाइन उपलब्ध गतिविधि को परंपरागत कक्षा-कक्ष परिस्थिति में प्रयुक्त कर सके। वर्तमान तकनीकी के युग में शिक्षक को भी नवाचारों से परिचित होते हुए स्वयं के ज्ञान में परिमार्जन करते हुए छात्रों को उचित विषय-सामग्री उचित विधि एवं साधनों का प्रयोग करते हुए प्रदान करना एक आवश्यकता हो गयी है। प्रस्तुत पत्र में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचार एवं उनकी उपादेयता पर विस्तृत चर्चा की गयी है।

सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी की क्रांति ने सूचनाओं के अनेक स्रोत पैदा कर दिये हैं। नवीन ज्ञान के विस्फोट (Explosion of Knowledge) ने जीवन पर्यन्त अध्ययन के संप्रत्यय को एक नया आयाम दिया है। इन सभी परिवर्तनों के बीच सेवापूर्व एवं सेवारत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को भी पुनः अवलोकित कर राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता अभिवृद्धि हेतु इसकी अवधि को बढ़ा कर दो वर्ष का कर दिया। इन सभी परिस्थितियों के लिये प्रायः शिक्षकों को तैयार करना अध्यापक शिक्षा का ध्येय होता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में सुधार विद्यालयीय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार को सुनिश्चित करता है। अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता की दृष्टि से विचार किया जाये तो कई मुद्दे हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इनमें वर्तमान परिस्थितियों में सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा नवाचारी अभ्यासों के प्रयोग की आवश्यकता है।

नवाचार :

सीमाओं से परे हटकर सोचने की योग्यता एवं पहले से विद्यमान में कुछ परिवर्तन करना या नया करने की क्षमता ही नवाचार है। नवाचार अथवा नवीन विचार या प्रवृत्तियाँ विकास का सूचक होती है। शैक्षणिक परिस्थितियों की बात करें तो शिक्षक की जागरूकता, प्रतिबद्धता एवं सहायता के बिना कोई परिवर्तन संभव नहीं है और न ही छात्रों में नवीन दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। शिक्षण प्रशिक्षण को भी चिंतनशील एवं नवीन चिंतन से युक्त होना चाहिए तभी वह शिक्षकों को चिंतनशील एवं अद्यतन ज्ञान के प्रति सजग एवं सतर्क रख सकता है। इस संदर्भ में प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा चलाए जा रहे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि प्रशिक्षण स्तर पर ही शिक्षकों को विभिन्न नवीन प्रवृत्तियों के प्रति जागरूक एवं सजग रहने का प्रशिक्षण देकर उन्हें तैयार किया जा सकता है। विगत् कुछ वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आए हैं। विभिन्न शोधों के आधार पर शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु अनेक सुझाव दिए गए। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावोत्पादक एवं सफल बनाने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में अनेक नवीन शिक्षण विधियों एवं शिक्षण शैलियों पर बल दिया जा रहा है।

सहकारी अथवा सहयोगी अधिगम (Cooperative or Collaborative learning) एवं शिक्षक शिक्षा- प्राय: इन दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ में किया जाता है परन्तु शिक्षण की इन दोनों शैलियों में किञ्चिद् अन्तर होता है। सहकारी (Cooperative) अधिगम से तात्पर्य कक्षा शिक्षण की उन विशेष व्यूह रचनाओं से है जिनके प्रयोग द्वारा अधिगमकर्त्ताओं के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास को एक-दूसरे की सहायता से बढ़ावा दिया जाता है। इसे शैक्षिक प्रक्रियाओं के उस समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो छात्रों को एक साथ मिलकर कार्य करने में सहायता करती है। यह पूर्णत: निर्देशित एवं शिक्षक द्वारा नियंत्रित प्रक्रिया होती है। इस व्यूह रचना में विभिन्न

योग्यताओं वाले छात्रों के छोटे समूह बनाकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की सहायता से विषय के प्रति समझ को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। अध्यापित विषय को स्वयं समझने एवं अपने साथियों को भी समझने में सहयोग करना समूह के सभी सदस्य की जिम्मेदारी होती है। कहा जा सकता है कि इसमें छात्र पूर्व संरचित गतिविधि पर छोटे-छोटे समूहों के रूप में काम करते हैं। वे अपने काम या अधिगम के लिए अलग-अलग जिम्मेदार होते हैं साथ ही समूह के कार्य का भी मूल्यांकन किया जाता है। इसमें छात्र एक-दूसरे के साथ काम करते हैं एवं समूह में कार्य करना सीखते हैं। यह छात्रों को शैक्षणिक के साथ-साथ सामाजिक कौशलों को सीखने पर भी बल देता है।

सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative learning) का आधार सामाजिक संरचनात्मक (social constructivist) है जो अधिगम को विभिन्न सामाजिक संदर्भों में ज्ञान के निर्माण के रूप में देखता है और इसमें व्यक्तिगत के स्थान पर सामूहिक अधिगम या सीखने पर बल दिया जाता है। सामान्यत: दोनों ही समूह शिक्षण पर बल देने वाली शिक्षण शैलियां हैं जिनमें समूह के सदस्यों को अन्त:क्रिया करते हुए ज्ञान एवं सामाजिक कौशलों को सीखने पर बल दिया जाता है। इनमें छात्र सक्रियता से भाग लेते हैं एवं शिक्षक के साथ-साथ समूह के सदस्यों को पढ़ाने का अवसर छात्रों को भी दिया जाता है। कक्षा के छात्रों को लघु समूहों में बांट कर विभिन्न विधियों द्वारा उन्हें विषय एवं उद्देश्यों अथवा परिस्थिति के अनुसार स्वयं सीखने हेतु प्रेरित किया जाता है।

शिक्षक की निपुणता की जब बात की जाती है तो छात्रों से तारतम्य स्थापित करने एवं प्रभावी शिक्षण हेतु उसमें सामाजिक कुशलताओं का होना आवश्यक है। इसके द्वारा अर्न्तवैयक्तिक (Interpersonalskills) अथवा सामाजिक कौशलों यथा नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता, प्रभावी संप्रेषण तथा विवादों का समाधान करने की क्षमता इत्यादि के विकास

में बहुत सहायता मिलती है। इन सामाजिक कुशलताओं को ही मनोविज्ञान ने सामाजिक बुद्धि अथवा भावात्मक बुद्धि की संज्ञा दी है। शिक्षण अधिगम हेतु इन नवाचारों के प्रयोग द्वारा छात्रों के अभिव्यक्ति कौशल में भी वृद्धि होती है जोकि अध्यापक का एक आवश्यक गुण है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को विषय एवं कौशलों का ज्ञान प्रदान करने के लिए इन नवाचारों का प्रयोग करके उन्हें इनका व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के साथ ही इनके प्रयोग में उन्हें निपुण बनाकर उन्हें स्वयं एक शिक्षक के रूप में इन विधियों के प्रयोग हेतु तैयार किया जा सकता है।

सहयोगात्मक शिक्षण की विधियाँ-

जिगसॉ (Jigsaw)- इस विधि में पाँच विद्यार्थियों के समूह बनते हैं। इसमें छात्रों को सीखने अथवा पढ़ने के लिए कुछ सामग्री दी जाती है एवं छात्र को उसे अपने साथियों को पढ़ाना होता है। विद्यार्थी कक्षा के अन्य समान समूह से चर्चा भी करते हैं।

थिंक पेयर शेयर (Think Pair share)- सहयोगात्मक अध्ययन की इस विधि में तीन स्तर होते हैं। प्रथम स्तर में विद्यार्थी शिक्षक या अनुदेशक द्वारा दिये गये प्रश्न पर शांतिपूर्वक विचार करते हैं। द्वितीय स्तर में दो के जोड़े बनाकर विचारों का आदान प्रदान करते है एवं तृतीय स्तर में विद्यार्थियों के ये जोड़े अन्य जोड़ों या समूहों के साथ अपने विचारों को साझा करते हैं।

राउन्ड रॉबिन ब्रेन स्टोर्मिंग (Round Robin Brainstorming)- सहयोगात्मक शिक्षण की इस विधि के अन्तर्गत कक्षा को 4-6 के छोटे समूहों में बांटा जाता है जिसमें एक विद्यार्थी को रिर्काडर के रूप में रखा जाता है। एक प्रश्न का एक से अधिक उत्तरों के साथ प्रस्तुत किया जाता है तथा छात्रों को उचित उत्तर के विषय में सोचने का समय दिया जाता है। रिकार्ड करने वाला छात्र समूह के छात्रों के उत्तरों को लिखता है।

1. ब्लेंडेड (Blended) अथवा मिश्रित अधिगम- मिश्रित अधिगम के अंतर्गत परंपरागत कक्षा परिस्थिति में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के अनुप्रयोग से शिक्षण को प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाता है। इसमें शिक्षक एवं छात्र परंपरागत विद्यालयों में प्रत्यक्ष शिक्षण-अधिगम की अन्त:क्रिया को संपादित करते हैं साथ ही डिजिटल संसाधनों का भी उपयोग किया जाता है। व्यावसायिक विकास तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उपयोग की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण है। प्राय: यह माना जाता है कि अधिगम की यह शैली प्रभावशाली होती है क्योंकि विभिन्न तकनीकी साधनों का प्रयोग कर विषय की समझ छात्रों में बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में विभिन्न साधनों यथा मूक्स आदि।

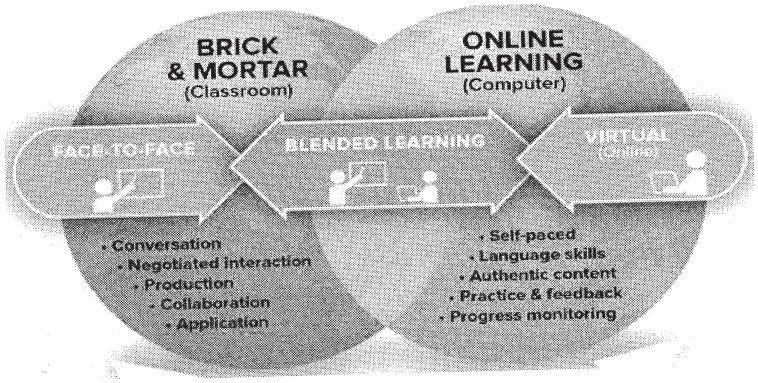

स्त्रोत[1]

3. चिंतनशील (Reflective) शिक्षण- शिक्षा प्रक्रिया में गुणवत्ता को बनाये रखना वर्तमान की सबसे बड़ी चुनौती है। शैक्षणिक परिस्थितियों में शिक्षक द्वारा लिए गये निर्णय की प्रासंगिकता पर विचार करना भी शिक्षक का ही उत्तरदायित्त्व होता है। अत: शिक्षा की गुणवत्ता एवं कक्षा प्रबंधन की दृष्टि से शिक्षक द्वारा लिए गए निर्णयों का स्व-मूल्यांकन भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। इस दृष्टि से चिंतनशील शिक्षण अत्यंत

1. http:///www.theteslaacademy.com

महत्त्वपूर्ण है। चिंतन अवलोकन एवं विश्लेषण की वह प्रक्रिया है जिसमें अतीत में संपादित कार्यों अथवा वर्तमान की क्रियाओं के आधार पर भविष्य के कार्यों को उन्नत बनाने का प्रयास किया जाता है। चिंतन व्यक्तिगत, शैक्षणिक, सामाजिक एवं नैतिक संदर्भों में विद्यालयों, कक्षा-कक्ष एवं शिक्षकों की विभिन्न भूमिकाओं के साथ जुड़ी प्रक्रिया की आलोचनात्मक समीक्षा एवं कार्यों या अभ्यासों में सुधार को इंगित करता है। (Knowles, Cole and Presswood, 1994). इस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक अपनी शिक्षण शैली एवं विधियों पर विचार करता है, विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि विषय या प्रकरण किस प्रकार अध्यापित किया गया और प्रभावी अधिगम हेतु इनमें क्या परिवर्तन किया जाना चाहिए। कक्षा में विषय या प्रकरण संबंधी क्या क्रियाएं हो रही हैं, इनका उद्देश्य क्या है एवं अधिगम हो रहा है अथवा नहीं, इन सब बिंदुओं पर चिंतनशील शिक्षण प्रक्रिया में प्रायः विस्तार पूर्वक विचार किया जाता है। शिक्षक अपने शिक्षण की प्रभाविता का मूल्यांकन करने के लिये इस शिक्षण शैली का उपयोग कर सकता है एवं आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षण विधियों एवं व्यूह रचना में परिवर्तन कर सकता है।

4. फ्लिप्ड अधिगम (Flipped Learning)- कक्षा शिक्षण से पूर्व ही छात्र विषय को मल्टीमीडिया अथवा वीडियो/आडियों की सहायता से सुनता, देखता एवं समझता है तथा कक्षा-कक्ष परिस्थितियों में अन्य छात्रों एवं शिक्षक से उस पर परिचर्चा कर विषय संबंधी समस्याओं एवं प्रश्नों का समाधान प्राप्त कर शिक्षक से प्रतिपुष्टि प्राप्त करते हैं। यह अधिगम शैली छात्रों को चिंतन एवं विश्लेषण के अवसर प्रदान करती है। परन्तु सभी विषयों का इस विधि से अधिगम नहीं कराया जा सकता। फ्लिप्ड के चार स्तंभ है- Flexible Environment, Learning Culture, Intentional Content, Professional Educator.

5. संरचनावादी (Constructivist) उपागम- संरचनावादी उपागम संज्ञानात्मक मनोविज्ञान से विकसित माना जाता है। इसमें छात्रों की भागीदारी पर बल दिया जाता है एवं छात्र केन्द्रित अन्तःक्रियात्मक

गतिविधियों को स्थान दिया जाता है। संरचनात्मक अधिगम आलोचनात्मक चिंतन से संबंधित अधिगम गतिविधियों में छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती है। पूर्व अनुभवों एवं प्राप्त ज्ञान के आधार पर छात्र नवीन परिस्थितियों के साथ समन्वय कर एक नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाह करता है।

6. समस्या समाधान (Problem Solving)– यह छात्र केन्द्रित वह अधिगम शिक्षा व्यवस्था है जिसमें छात्र किसी समस्या के समाधान के द्वारा विषय विशेष का अध्ययन करते हैं। इस प्रक्रिया का उद्देश्य केवल समस्या समाधान ही नहीं होता अपितु इसके द्वारा विभिन्न प्रकार के कौशलों के अर्जन पर भी बल दिया जाता है। इसके द्वारा ज्ञान की प्राप्ति, समूह में सहयोगपूर्वक अधिगम एवं संप्रेषण भी सम्मिलित है।

7. मिश्रा एवं कोहलर (2006) ने टीपैक (TPACK) मॉडल को प्रस्तुत कर शैक्षणिक ज्ञान (PK), विषय ज्ञान (CK), तकनीकी ज्ञान (TK) के संदर्भ कुछ में महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की चर्चा की है। इनके अनुसार विद्यार्थियों की क्षमता में वृद्धि हेतु यह आवश्यक है कि विषय वस्तु एवं शिक्षण विधि को ध्यान में रखकर ही कक्षागत परिस्थितियों हेतु तकनीकी का चयन किया जाये।

मिश्रा एवं कोहलर द्वारा प्रस्तुत टीपैक मॉडल

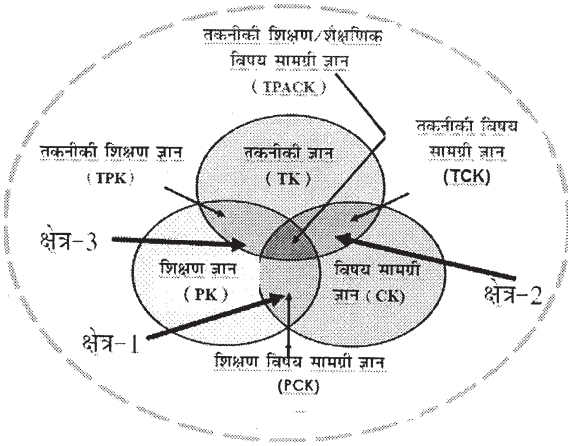

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचारी अभ्यासों के उचित प्रयोग हेतु सुझाव–

- नवाचार के प्रयोग हेतु उचित कक्षा वातावरण का निर्माण हो।
- शिक्षक को उचित ज्ञान होना चाहिए जिससे वह शिक्षण में उसका उचित प्रयोग कर सके।
- शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का उचित ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वह इसका कुशलतापूर्वक एवं आवश्यक-तानुसार प्रयोग कर सके।
- सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग करने की दृष्टि से छात्र को सक्षम बनाना भी शिक्षक का दायित्व है।
- शिक्षक एक कुशल मार्गदर्शक होना चाहिए।
- शिक्षक अधिगमकर्ता की भूमिकाओं के प्रति सजग हो।
- शिक्षक छात्रों की भावनाओं से तदात्म्य स्थापित करने में कुशल हो।
- शिक्षक छात्रों की आवश्यकताओं को समझ सकता हो।
- विषयों का विश्लेषण कर तदनुसार नवाचारी अभ्यासों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- समय के नियोजन का ध्यान रखना आवश्यक है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की तरह आज शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक समस्याएं विद्यमान हैं। आज शिक्षा का गिरता स्तर चिंता का विषय है। वैश्विक परिदृश्य में हो रहे परिवर्तन के फलस्वरूप हमें अपनी भी शिक्षा प्रक्रिया, विधियों, व्यूह रचनाओं एवं शिक्षण-अधिगम की शैलियों पर विचार कर उनमें नवीन प्रवृत्तिओं एवं अभ्यासों का समावेश करना आवश्यक हो गया है। आइसीटी (ICT) आज के जीवन की आवश्यकता हो गयी है अतः हमें ऐसे शिक्षकों को तैयार करने की आवश्यकता है जो बदलते समय के साथ ज्ञान का

परिमार्जन कर अपने छात्रों को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- Kumar, T. Pradeep; 2012, Innovative Trends in Education, APH Publishing Corporation.
- Mentor, October, 2017, Vol. 11, Issue 5.
- http://www.journalcra.com International Journal of Current Research Vol. 9, Issue, 04, pp. 49593-49596, April, 2017
- मंगल, एस.के., उमा, शिक्षा तकनीकी, पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009.
- ओबरॉय, एस.के., शैक्षित तकनीकी, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 2006.

संदर्भः

- https://www.teacherswithapps.com
- https://blog.capterra.com
- https://www.tandfonline.com
- https://educationaltechnology.net/technological-pedagogical-content-knowledge-tpack-framework.

✦✦✦

अध्यापकशिक्षा-पाठ्यचर्या : भाषा शिक्षणशास्त्र

–डॉ. सुरेन्द्र महतो
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ
श्री. ला.ब.शा.रा.संस्कृत विश्वविद्यालय

"अध्यापक को समाज अथवा राष्ट्र का शिल्पी कहा गया है। पाठ्यचर्या को शिल्प की रूपरेखा अर्थात् राष्ट्र अपने-आप को सँवारने के लिए, अपने कल को बेहतर बनाने के लिए अपनी पीढ़ी को उसी रूप से तैयार करता है जैसा वह बनाना चाहता है इस उद्देश्य की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही संभव है। शिक्षा को संचालन अर्थात् शिक्षण-अधिगम का मुख्य साधन भाषा है जिसकी सहायता से शिल्पी अपने शिल्प को रूपरेखा के अनुरूप तरासने का कार्य करता है अर्थात् भाषा को छेनी व हथौड़ा कहा जाता है तथा शिक्षणशास्त्र को कला की बारीकियाँ कहें तो कोई अतिसयोक्ति नहीं होगी। अत: राष्ट्र अपनी आवश्यकता अनुसार शिक्षाव्यवस्था को विश्वस्तरीय बनाने के लिए समय के अनुसार उसमें बदलाव करता है। भारतीय शिक्षा के इतिहास में इस प्रकार के बदलाव हेतु समय-समय पर कई समीतियों एवं आयोगों का गठन किया गया है। शिक्षा व्यवस्था का मेरूदण्ड कही जाने वाली अध्यापक शिक्षा में भी 2014 में आमूलचूल परिवर्तन किया गया है, जिनके अन्तर्गत विभिन्न कोर्सों को समय व विषयों को ध्यान में रखते हुए पुन: संघटित किया गया है जिसमें भाषा तथा भाषा में शिक्षणशास्त्र के स्थान को उद्घाटित करना इस पत्र का मुख्य ध्येय रहा है।"

राष्ट्रीय विकास तथा अध्यापक शिक्षा-

"भारत के भाग्य का निर्माण भारतीय विद्यालयों के कक्षा-कक्ष में हो रहा है।"[1] अर्थात् कक्षा-कक्ष में वह शिल्पी जो अपने शिल्प को राष्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुरुप तरासने के कार्य में सभी परिस्थितियों में संलग्न रहता है। समाज व राष्ट्र का ताना बाना उस कक्षा-कक्ष में तैयार होता है जो गाँव के दो कमरे का विद्यालय हो अथवा शहरों के सुविधा सम्पन्न विद्यालय, सबका आधार पाठ्यचर्या तथा शिक्षक ही है। वह शिल्पी जो राष्ट्र के लिए सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वालों की नींव तैयार करता है। राष्ट्र के विकास में शिक्षा-शिक्षक और पाठ्यचर्या के स्थान को निम्नांकित आरेख के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

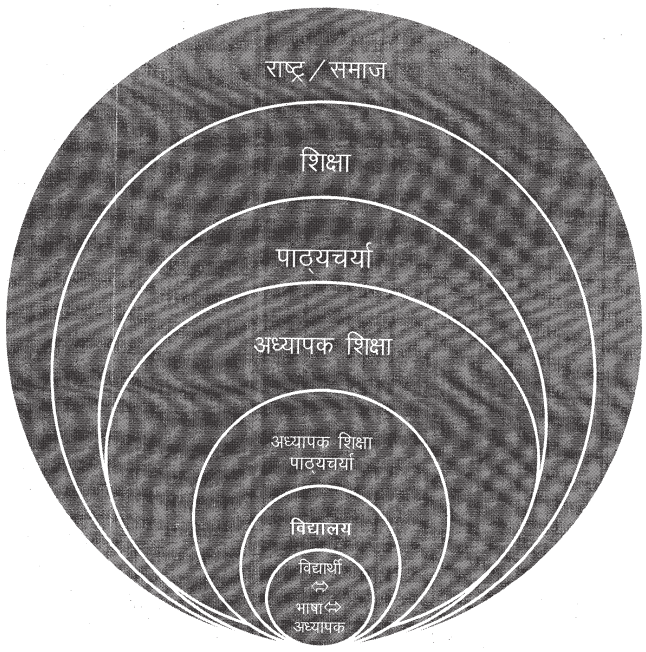

आरेख.1

1. कोठारी आयोग - 1964-66

उपरोक्त आरेख से स्पष्ट है कि राष्ट्र के विकास का मुख्य आधार शिक्षा प्रणाली है। जिसका मुख्य स्त्रोत पाठ्यचर्या तथा पाठ्यचर्या के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षा, शिक्षा परिषद् की देखरेख में अध्यापक तैयार किये जाने वाले अध्यापक शिक्षा संस्थानों (TEI) के माध्यम से किया जाता है। अत: राष्ट्र के विकास में राष्ट्रीय अध्यापकशिक्षापरिषद् का स्थान स्वयं सिद्ध है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् तथा अध्यापक शिक्षा का वर्तमान पाठ्यचर्या–

भारतीय शिक्षा प्रणाली में अध्यापक शिक्षा के संचालन का मुख्य दायित्व राष्ट्रीय अध्यापकशिक्षापरिषद पर है, जिसका वर्तमान स्वरूप भारतीय संविधान में 73वाँ संशोधन 1993 के अनुरूप है जो 1995 से सक्रिय रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। इससे पूर्व यह संस्था सिर्फ पाठ्यचर्या निर्माण की रूपरेखा तैयार करने का कार्य करती थी परन्तु 1999 के बाद अध्यापक शिक्षा संस्थानों को मान्यता देने व उनका मूल्यांकन की भी जिम्मेदारियाँ सम्भाल रही है।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के वर्तमान स्वरूप को जे. एस. वर्मा समिति, एन.सी.एफ.–2005 तथा एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 के आधार पर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (मान्यता मानदण्ड अधिनियम) 2014 के आधार पर पुनर्संरचित किया गया है। जिसके अन्तर्गत विविध कोर्सो को पुनर्गठित किया गया है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् तथा अध्यापक शिक्षा कोर्स–

1. डी.पी.एस.ई.– स्कूल पूर्व शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा,
2. डी.एल.एड.– प्रारम्भिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा,
3. बी.एल.एड.– प्रारम्भिक शिक्षा में चतु:वर्षीय स्नातक,
4. बी.एड.– शिक्षा में द्विवर्षीय स्नातक,
5. एम.एड.– शिक्षा में द्विवर्षीय स्नातकोत्तर,

6. डी.पी.एड.- शारीरिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा,
7. बी.पी.एड.- शारीरिक शिक्षा में द्विवर्षीय स्नातक,
8. एम.पी.एड.- शारीरिक शिक्षा में द्विवर्षीय स्नातकोत्तर,
9. डी.एल.एड.- प्रारम्भिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा दूरस्थ,
10. बी.एड.- शिक्षा में द्विवर्षीय स्नातक दूरस्थ,
11. डी.वी.ए.- दृश्यकला में द्विवर्षीय डिप्लोमा,
12. डी.पी.ए.- निष्पादन कला में द्विवर्षीय डिप्लोमा,
13. बी.ए.बी.एड./बी.एस.सी.बी.एड.- शिक्षा में समाकलित चतुष्वर्षीय स्नातक,
14. बी.एड.- शिक्षा में अंशकालिन त्रिवर्षीय स्नातक एवं
15. बी.एड.एम.एड.- समाकलित त्रिवर्षीय शिक्षा स्नातक स्नातकोत्तर।

वर्तमान उक्त पाठ्यक्रमों (कोर्सों) की सूची के अवलोकन से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने अंशकालिन व दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा स्नातकोत्तर (एम.एड.) को पूर्णत: बन्द करने का कदम उठाया है जो एक अच्छा पहल कहा जा सकता है।

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यचर्या तथा भाषा विकास-

भाषा, सम्प्रेषण का मुख्य साधन है अर्थात् लोगों को अपने व्यवहार को सरल बनाने में भाषा मौखिक, लिखित एवं संकेतात्मक ही मददगार सिद्ध होता है। जैसा कि पिछले आरेख में दर्शाया गया है। विविध विद्यालयीय क्रियाकलापों के माध्यम से अध्यापक अपने विद्यालय व कक्षा-कक्ष में शिक्षा द्वारा निर्धारित पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन करता है। अध्यापक का निर्माण अध्यापकशिक्षा संस्थानों (TEIs) में किया जाता है। जिसके लिए 2014 में जो पाठ्यचर्या का पुनर्गठन किया गया है जो इस प्रकार आरेख में दर्शाया गया है-

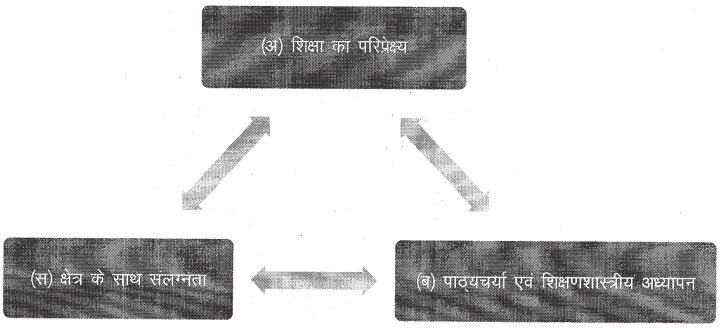

(अ) शिक्षा का परिप्रेक्ष्य (Perspectives of Education)-

इसके अन्तर्गत बाल्यावस्था, बालविकास तथा किशोरावस्था, समसामयिक भारत व शिक्षा, ज्ञान तथा पाठ्यचर्या का सैद्धान्तिक आधार, शिक्षण एवं अधिगम, विद्यालय व समाज के सन्दर्भ में जेन्डर तथा समेकित शिक्षा को दो वर्षो के भीतर समझने-समझाने को समाहित किया गया है।

(ब) पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्रीय अध्ययन - (Curriculum & Pedagogic Studies) -

यह दो वर्षीय पाठ्यचर्या का महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसके अन्तर्गत विषय के प्रकृति के अध्ययन से सम्बन्धित है जहाँ विद्यालयीय पाठ्यचर्या का समीक्षात्मक समझ, अधिगमकर्त्ता के समेकित ज्ञान से सन्दर्भित शिक्षणशास्त्र, अधिगम का सामाजिक व विषयगत सन्दर्भ तथा किशोरों के विविध अधिगम क्षेत्रों से सन्दर्भित अनुसंधान से सम्बद्ध है इस के अन्तर्गत विशेष यह कहा गया है कि दो वर्षो के भीतर एक विशिष्ट विषय की विशेषज्ञता हासिल करना जिस शिक्षणशास्त्रीय विषय का शिक्षणभविष्य में करना है। इसके दो स्तर बताए गए हैं जहाँ माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तरीय स्वविषय सम्बद्ध शिक्षणशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करना। यहाँ पर सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा, विषय का अनुशासनात्मक समझ, विद्यालयीय विषय का शिक्षणशास्त्र तथा अधिगम का आकलन से सम्बद्ध समझ विकसित करने का उद्देश्य रखा गया।

(स) क्षेत्रीयसंलग्नता (Engagement with The Field)-

इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन बिन्दुओं पर ध्यान दिए जाने की बात की गई हैं-

- पाठ्यक्रम से सम्बद्ध गृहकार्य व दत्तकार्य को वर्ष के अनुरूप विभक्त कर किया जाना तय किया गया है।
- विद्यालय में अभ्यास तथा
- व्यावसायिक दक्षता संवर्द्धन से सम्बद्ध कोर्स जिसे पाठ्यपुस्तकों के वाचन एवं चिन्तन से सम्बद्ध, अभिनय व कला शिक्षा, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का समीक्षात्मक समझ तथा स्वयं की समझ से सम्बद्धता पर बल देने वाला हो ऐसा निर्दिष्ट है।

उक्त तीनों ही पक्षों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण बी.एड. दो वर्षीय पाठ्यचर्या में 'पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्रीअध्ययन' के अन्तर्गत एक कोर्स 'सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा' को विशेष रूप से संयोजित किया गया है। जो छात्राध्यापक में भाषा की समझ पर बल देता है। जिस से विद्यालय स्तरीय सम्पूर्ण पाठ्यचर्या, छात्रों के सामाजिक परिवेश तथा छात्रों को समझने की समझ विकसित करने से सम्बद्ध है। NCF-2005 एन.सी.एफ.टी.ई. 2009, तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी दस्तावेज 'पढ़े भारत, बढ़े भारत'[1] 2015 में समझ के साथ पढ़ना-लिखना व गणित करने (3-आर) पर बल दिया गया है। क्योंकि एन.ए.एस. 2001 राष्ट्रीय वार्षिक सर्वे (NCERT प्रथम एन.जी.ओ.) ए.एस.इ.आर. 2005 एवं प्रथम ए.एस.इ. आर. 2014 ने 577 ग्रामीण जिले, 17,000 गाँव के 60,000, 3-16 वर्ष के छात्रों के सर्वेक्षण से चौंकाने वाला परिणाम दिया कि पाँचवी कक्षा के छात्र कक्षा दो के स्तर के पुस्तक को पढ़ने में आधे छात्र असमर्थ पाए गए।[2]

---

1. "पढ़े भारत, बढ़े भारत"
2. Report of the committee for evolution of the New Education policy Govt. of India-30.04.2016

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर अध्यापक शिक्षा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से अध्यापक शिक्षा के पाठ्यचर्या को तैयार करते हुए, अवधि को भी परिवर्तित किया है। सभी कोर्सों में छात्राध्यापक को विद्यालयीय व सामाजिक परिवेश के साथ-साथ छात्रों के समझ को समझने के लिए भाषा विकास पर सर्वाधिक बल दिया गया है।

भाषा का शिक्षणशास्त्र (Pedagogies of Language)-

भारत में भाषा की विविधता है, प्रत्येक छात्र घर, विद्यालय, समाज तथा विषय के रूप में एक साथ कई बोलियाँ व भाषाएँ प्रयोग में लाते है। आरेख-1 में दर्शाया गया है कि शिक्षण अधिगम का मुख्य साधन भाषा है। किसी विषयवस्तु को किसी-न-किसी भाषा के माध्यम से ही समझने-समझाने का प्रयत्न किया जाता है। "विशेषकर भारत में भाषा व साक्षरता के लिए भाषा अध्यापक को ही सम्बद्ध देखा जाता है" पर अनेक अनुसंधानों से यह स्पष्ट है कि किसी भी विषय का शिक्षण भाषामुक्त वातावरण में सम्भव ही नहीं है। छात्रों के भाषा व साक्षरता को कक्षा अन्तः-क्रिया, शिक्षणशास्त्रीय निर्णय तथा छात्रों के अधिगम की प्रकृति को प्रभावित करती है। अतः छात्रों के मौखिक व लिखित भाषा की समझ को समझकर ही कक्षा-कक्ष अन्तःक्रियाओं द्वारा विषय विशेष का अधिगम कराया जा सकता है। इसलिए भी छात्राध्यापकों से यह अपेक्षा की गयी है कि वह किसी भी विषय का शिक्षक बनने की तैयारी में क्यों न हों उसे छात्रों की सामाजिक भाषायी परिक्षेत्र का ज्ञान अनिवार्य रूप से प्राप्त हो ताकि वह कक्षा-कक्ष की समझ को विकसित करने के उद्देश्य से प्रथम व द्वितीय भाषा की समझ जिसे अपने विषयवस्तु को पढ़कर छात्र स्वयं भी समझ सके अथवा शिक्षक उस विषयवस्तु को मौखिक व वाचिक रूप से बोध करा सके। इसलिए भाषा शिक्षक ही नहीं अन्य विषय के अध्यापक भी स्वयं में पढ़ने की आदत विकसित करे। ताकि पढ़कर बोध एवं चिन्तन कर अधिगम-शिक्षण में अग्रसर हो सके। विषय-वस्तु के पढ़ने में-समाजविज्ञान, विज्ञान, गणित आदि को व्याख्यायित करने से स्वभाषा विषयक प्रक्षेपी चिन्तन

परकता को स्कीमा सिद्धान्त के अनुरूप प्राप्त कर सके। पाठ्यपुस्तक के संरचना, विषयवस्तु का परीक्षण कर सकने हेतु पठन रणनीतियों जैसे-नोट्स तैयार करना, सारांश तैयार करना, संक्षेपण करना, पठन व लेखन में सम्बन्ध स्थापित करने लेखन प्रक्रिया (लेखनपूर्व (चिंतन) रूपरेखा बनाना, पुनरावृत्ति तथा संपादन) के द्वारा छात्रों के अवध ारणात्मक बोध को समझना।[1]

परन्तु भाषा शिक्षण भी विषयवस्तु के बोध कराने से पूर्व कक्षा-कक्ष अन्त:क्रिया को सुदृढ़ करने के लिए तथा शिक्षणशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुप्रयोग हेतु छात्रों के पृष्ठभूमि समाज, भाषा, साक्षरता इत्यादि का ज्ञान अनिवार्य रूप से प्राप्त करें। जिससे भाषा को साधन व साध्य दोनों रूपों में अध्ययन कर शिक्षण-अधिगम को सरल व सुगम बना सके। इस पर वर्तमान पाठ्यचर्या में विशेष बल दिया गया है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वर्तमान अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पाठ्यचर्या में विशेषकर दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यचर्या में भाषा विकास तथा भाषा के शिक्षणशास्त्र को विशेष महत्त्व दिया गया है। भाषा के विकास के बिना या यूँ कहें कि बिना भाषायी वातावरण के शिक्षण-अधिगम सम्भव नहीं हो सकता। भाषा का विकास भाषा अध्यापक के लिए ही आवश्यक नहीं है। अपितु विविध विषयों के अध्यापकों के लिए भी विविध भाषा कौशलों का ज्ञान आवश्यक है जिससे विषयवस्तु को पढ़कर समझ सके तथा समझकर चिन्तन कर सके, तदुपरान्त अधिगमकर्त्ता को उनके समझ के अनुसार अधिगम कराने की रणनीति तैयार कर कक्षा-कक्ष को प्रभावी बना सके। उक्त क्रिया को सम्पन्न करने के लिए वर्तमान बी.एड. पाठ्यचर्या की अवधि को दो वर्षो का किया गया है जिससे कि विद्यालय, समाज छात्रों की सामाजिक शैक्षिक पृष्ठभूमि को समझ सके, सिद्धांतों को समझकर उसका पूर्ण प्रयोग व अभ्यास कर सके। जिसे उनमें व्यावसायिक दक्षता

---

1. Curriculum frame work for The NCTE Two Year B.Ed Programme.

प्राप्त हो सके। यदि समुचित प्रायोगिक परिस्थिति उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाता है तो यह पाठ्यचर्या अपने उद्देश्य की प्राप्ति में अर्थात् एक योग्य, दक्ष समाज व राष्ट्र शिल्पी अध्यापक निर्माण में सार्थक हो सकेगा।

सन्दर्भ-

- ❖ सब पढ़े, सब बढ़े! एम.एच.आर.डी.-2015
- ❖ जी.एस. वर्मा समिति रिपोर्ट-2014
- ❖ भारतीय शिक्षा का इतिहास, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली 2006
- ❖ अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2006
- ❖ नई शिक्षा नीति, 1986
- ❖ शिक्षा आयोग रिपोर्ट, 1966

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में चुनौतियां

–डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार

सहायकाचार्य (शिक्षाशास्त्र विभाग)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत
विद्यापीठ, (मानित विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

शोधसार–

अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की गुणवत्ता को प्राप्त करने में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के द्वारा समय समय पर अनेक सुझाव दिए जाते रहे हैं। साथ ही क्षेत्रीय कार्यालयों के द्वारा समय समय पर अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित महाविद्यालयों का निरीक्षण किया जाता है। जिससे अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को प्रारम्भ करने से पूर्व भी अनेक आयोगों एवं समितियों ने गुणवत्ता बढ़ाने हेतु अपनी सिफारिशें सरकार को दी। अध्यापक शिक्षा पर जे.एस.वर्मा समिति ने अगस्त 2012 में अध्यापक शिक्षा का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम करने की सिफारिश की। अनेक शिक्षाविदों ने इस पर लम्बी बहस भी की। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद नई दिल्ली ने अध्यापक शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाने के लिए द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को शिक्षण सत्र 2015 से लागू करना स्वीकार कर लिया तथा अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को शिक्षण सत्र 2015–17 से सम्पूर्ण देश में लागू कर दिया। अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा तीन विस्तृत क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है। जैसे–

1. सैद्धान्तिक क्षेत्र

2. शिक्षणशास्त्र

3. शिक्षण अभ्यास कार्य।

समाज के किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्याएँ ही चुनौतियों के उत्पन्न होने के लिए आधारशिला का कार्य करती है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय में अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियाँ देखी जा सकती है। जो मेरी दृष्टि में निम्न हैं–

1. समय से पाठ्यक्रम को पूरा कराने सम्बन्धी चुनौती।

2. छात्रों की उपस्थिति सम्बन्धी चुनौति।

3. अध्यापकों के पदों की रिक्तता सम्बन्धी चुनौती।

4. शिक्षण अभ्यास के लिए विद्यालय प्राप्त करने सम्बन्धी चुनौती।

5. शिक्षण अभ्यास समय पर पूरा कराने सम्बन्धी चुनौती।

6. शिक्षण अभ्यास में गुणवत्ता सम्बन्धी चुनौती।

उपरोक्त समस्याओं एवं चुनौतियों के समाधान के लिए प्रयत्न करना प्रत्येक अध्यापक शिक्षा के शिक्षक, भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए दायित्व बन जाता है क्योंकि शिक्षक को राष्ट्र निर्माता का दर्जा दिया गया है। अत: अध्यापक का कार्य और अधिक महत्वपूर्ण तथा उत्तरदायित्वपूर्ण हो जाता है। अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के द्वारा लागू करना निश्चित ही अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि का प्रयास है। इस शोध पत्र में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में अनेक चुनौतियां हैं। जिन पर ध्यानाकर्षण करना ही मेरा प्रयास है।

भूमिका–

वैदिक काल में सभ्यता और संस्कृति देश की पहचान थी और

भारत को विश्व गुरु माना जाता था। इस काल में अध्यापक स्वाध्यायी और सच्चरित्र व्यक्तित्व के होते थे। गुरुकुल प्रणाली में पूर्ण स्वामित्व के साथ पूर्ण उत्तरदायित्व जुड़ा हुआ था। बौद्ध काल में शिक्षक बनने के लिए उच्च शिक्षा के बाद आठ वर्ष की बौद्ध धर्म की शिक्षा को ग्रहण करना एवं बौद्ध संघों के नियमों का कठोरता से पालन करना अतीव महत्वपूर्ण था। उसके बाद मध्यकाल के प्रारम्भिक समय तो शिक्षण कार्य उचित ढंग से चला परन्तु कुछ समय बाद वह अपनी वास्तविक कर्तव्यों से भटक गया।

वर्तमान काल में भी मानव को सुसंस्कृत बनाने का एक माध्यम शिक्षा ही है। यह शिक्षा हमारे अन्तर्मन में संवेदनशीलता और प्रखर दृष्टि प्रदान करती है जिससे देश की एकता पल्लवित हो रही है और वैज्ञानिक रीति से कार्यों के क्रियान्वयन की सम्भावना निरन्तर बढ़ रही है। समाज में भी स्वतन्त्र चिन्तन विकसित हो रहा है। अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में भी निरन्तर महत्वपूर्ण परिवर्तन समाज में देखे जा सकते हैं। जो न केवल व्यक्तिमात्र में हैं, अपितु संस्थाओं में भी समय के साथ बदलते जा रहे हैं। जैसे- प्रज्वलित दीपक के लिए निरन्तर जलाने के लिए तेल अपेक्षित है, उसी प्रकार अध्यापकों में उत्कृष्ट शिक्षण के लिए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता होती है।

इसके सम्बन्ध में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा है कि- "इमारतों से शिक्षण संस्थानों की पहचान नहीं है, बल्कि शिक्षक व छात्र जो ज्ञान साधना में लगे है, वही शिक्षण संस्थानों की आत्मा हैं।"

महात्मा गांधी ने अध्यापकों के सम्बन्ध में कहा है कि- "शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों से आत्मिक सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए।"

अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता-

भारत की जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत किशोरों की जनसंख्या है। इन किशोरों के शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार शिक्षक छात्र अनुपात 1 : 30 को प्राप्त करने के लिए लगभग

70 लाख शिक्षकों की आवश्यकता होगी। जिससे उन सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सके। अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के द्वारा सम्पूर्ण देश में लगभग 16,000 से अधिक शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय नियन्त्रित किए जा रहे हैं। जिनमें प्रतिवर्ष लगभग 15 से 20 लाख प्रशिक्षित अध्यापक तैयार हो रहे हैं।

शिक्षा मानवीय विकास का प्रमुख बिन्दु है। किसी भी प्रगतिशील देश में शिक्षा का मुख्य कार्य समाज में ऐसी विचारधारा विकसित करने से है, जो देश में लिंग भेद, राष्ट्रीय एकता, जातिवाद और क्षेत्रीयता की संकीर्णता सम्बन्धी मतभेदों को दूर कर सके। अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता केवल भौतिक संसाधनों के उपलब्ध कराने से नहीं आ सकती, जब तक मानवीय संसाधनों-शिक्षा मंत्री, शिक्षा सचिव, शिक्षा विशेषज्ञ, शिक्षण संस्थानों के प्रबन्धकों, प्राचार्यो, लिपिकों तथा अध्यापक शिक्षक एवं भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं में आदर्शवादी दृष्टिकोण को नहीं विकसित किया जा सके।

आज के समय में अध्यापक कक्षा में जितना समय देते हैं, उससे अधिक समय उन्हें कक्षा से बाहर देने की आवश्यकता है। वर्तमान में अध्यापकों को कक्षा से बाहर समय देने की आवश्यकता एवं रूचि ही दिखाई नहीं दे रही है। आज के सहायक आचार्य, सहाचार्य एवं आचार्य अधिकांश समय एपीआई स्कोर अर्जित करने में लगे हुए हैं। वे अपनी कक्षाओं में कम संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, व्याख्यानों और विभिन्न विश्वविद्यालयों के पैनलों में अधिक देखे जा सकते हैं। अध्यापकों की आर्थिक महत्वाकांक्षा, शिक्षा के व्यावसायीकरण, अत्यधिक मात्रा में खुले हुए शिक्षण संस्थान, गुणवत्ता में कमी होना, व्यवसाय समय पर प्राप्त न होना, अध्यापकों की कमी होना आदि अनेक चुनौतियाँ हैं।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में चुनौतियाँ -

अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार आज अधिकांश शिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति वचनबद्धता, समर्पण की भावना एवं

प्रतिवद्धता का अभाव देखा जा सकता है। इन चुनौतियों को शिक्षण कार्य के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को वर्ष 2015-17 से लागू कर दिया गया है, जिसकी गुणवत्ता में अनेक चुनौतियां देखी जा सकती हैं। जो निम्न हैं-

1. शिक्षण कार्य में नवीन उपागमों के प्रयोग की चुनौती।
2. वैयक्तिक विभिन्नताओं की चुनौती।
3. समय से पाठ्यक्रम को पूरा कराने सम्बन्धी चुनौती।
4. छात्रों की उपस्थिति सम्बन्धी चुनौती।
5. अध्यापकों के पदों की रिक्तता सम्बन्धी चुनौती।
6. शिक्षण अभ्यास के लिए विद्यालय प्राप्त करने सम्बन्धी चुनौती।
7. शिक्षण अभ्यास समय पर पूरा कराने सम्बन्धी चुनौती।
8. शिक्षण अभ्यास में गुणवत्ता सम्बन्धी चुनौती।
9. ट्यूटोरियल प्रणाली के प्रयोग की चुनौती।
10. शिक्षकों की मेंटर की भूमिका सम्बन्धी चुनौती।
11. परामर्शदाता एवं निर्देशक की भूमिका सम्बन्धी चुनौती।
12. फैक्स, ई-मेल भेजने सम्बन्धी कठिनाई।
13. समाज के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव।
14. अनुरूपित सामाजिक कौशल शिक्षण का अभाव।
15. अभिक्रमित अधिगम सामग्री निर्माण सम्बन्धी चुनौती।

शिक्षण अभ्यास एवं इन्टर्नशिप सम्बन्धी चुनौतियाँ-

अध्यापक शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है छात्राध्यापकों / छात्राध्यापिकाओं को शिक्षण अभ्यास कराना। जिससे वे भी प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने शिक्षण कौशल को प्रभावशाली और स्तरीय बना सके। परन्तु प्राय: यह अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम स्तर पर सर्वाधिक उपेक्षित

रूप में दिखाई दे रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए समय पर राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार के विद्यालयों का न मिलना आज के समय में सबसे बड़ी चुनौती है। उसके बाद छात्राध्यापकों के लिए पाठ योजना निर्माण करना, अध्यापक निरीक्षण, सहपाठी निरीक्षण, निश्चित समय एवं विषयवस्तु में समन्वय, विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रत्येक अध्यापन सम्बन्धी व्यावहारिकता को स्वयं वास्तविक स्थिति में करने के पहले पूर्वाभ्यास का अत्यधिक महत्त्व होता है, जिससे छात्रों का समय एवं परिश्रम व्यर्थ नष्ट न हो।

एकवर्षीय पाठ्यक्रम में शिक्षण अभ्यास के लिए दस सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजनाएं एवं बीस-बीस दीर्घ पाठ योजनाओं का अभ्यास कार्य करना होता था। अब द्विवर्षीय परिवर्तित पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष में विद्यालय निरीक्षण कार्य एवं बीस-बीस पाठ योजना और द्वितीय वर्ष में सोलह सप्ताह का इन्टर्नशिप कार्यक्रम में प्रतिभाग आवश्यक किया गया है। इतने समय के लिए राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार के विद्यालय प्राप्त होना सबसे बड़ी चुनौती है।

आन्तरिक मूल्यांकन कार्य सम्बन्धी चुनौती-

वर्तमान द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में 150 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन कार्य के लिए निर्धारित हैं। शिक्षण अभ्यास निरीक्षण और आन्तरिक मूल्यांकन कार्य के लिए कोई सर्वमान्य मूल्यांकन पद्धति नहीं है और न ही प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए कोई सर्वमान्य मानक या निर्दिष्ट पद्धति विद्यमान है। इन सभी कारणों से पक्षपात के आरोप लगते रहते हैं। शिक्षण अभ्यास कार्य, निरीक्षण और आन्तरिक मूल्यांकन के लिए मानकीकृत मूल्यांकन विधियों को प्रयोग में लाना चाहिए।

कार्याधारित दक्षता सम्बन्धी चुनौती-

आधुनिक अध्यापकीय पाठ्यक्रम की तैयारी के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा दक्षता के साथ ही कई प्रतिबद्धता के क्षेत्रों

को स्पष्ट करने के लिए 1978 में अपने दस्तावेज 'टीचर एजूकेशन करीक्यूलम: ए फ्रेमवर्क' में 'दक्षता आधारित और प्रतिबद्धता उन्मुख गुणवत्ता मूलक विद्यालय शिक्षा हेतु अध्यापक शिक्षा' में शीर्षक उल्लेख किया। जिसमें निम्न प्रमुख प्रतिबद्धताएं दर्शायी गयी हैं-

1. अधिगमकर्ताओं के प्रति प्रतिबद्धता
2. समाज के प्रति प्रतिबद्धता
3. आजीविका के प्रति प्रतिबद्धता
4. आजीविकागत क्रियाकलाप में उत्कृष्टता सम्बन्धी प्रतिबद्धता
5. मूलभूत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

प्रत्येक अध्यापक को अपनी अकादमिक प्रतिबद्धता स्थापित करनी होगी। उसे अपने तात्कालिक प्रलोभनों को छोड़ना पड़ेगा। जब किसी शिक्षक की प्रशंसा की जाती है, तो उसका आत्मविश्वास और वचनबद्धता और बढ़ जाती है।

छात्र उपस्थिति की चुनौती-

अध्यापक शिक्षा के एक वर्षीय पाठ्यक्रम में छात्राध्यापकों के लिए कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य थी। जबकि अब द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक कार्य के लिए 80 प्रतिशत उपस्थिति तथा 16 सप्ताह के इन्टर्नशिप कार्य में 90 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य कर दी गयी है। अत: छात्राध्यापकों की उपस्थित बढ़ाने के लिए संस्था प्रधानों, अध्यापकों एवं अभिभावकों को महाविद्यालय आने के लिए अभिप्रेरित किया जाए।

व्यवहारगत निष्पादन कार्य सम्बन्धी चुनौती-

अध्यापक शिक्षण कार्य के क्षेत्र में अधिकांश शिक्षकों की शिक्षण निष्पादन गुणवत्ता निम्न स्तर की होती है। जिसका कारण अध्यापकों का शिक्षण कार्य के प्रति उदासीन दृष्टिकोण उत्तरदायी होता है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में

होने वाले नवीन परिवर्तन और रूपान्तरण के लिए अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता अधिक होती है। इसके लिए आजीविकागत सभाओं में सहभागिता, शोध पत्रिकाओं के सदस्य बनना, उत्तरदायित्व, गुणवत्ता नियन्त्रण, मूल्यांकन एवं शिक्षण आचार संहिता का पालन उसके व्यावहारिक निष्पादन को सफल बना सकते हैं।

शिक्षण कार्य में नवीन उपागमों के प्रयोग की चुनौती-

अध्यापक शिक्षा में तकनीकी के प्रवेश से नवीन उपागमों का प्रयोग वर्तमान में किया जाने लगा है। जैसे-मल्टी मीडिया एप्रोच, पर्सनलाइज्ड सिस्टम ऑफ इन्स्ट्रक्शन, कम्प्यूटर असिस्टैट इन्स्ट्रक्शन, इन्टरनेट, ई-मेल, अन्त:क्रिया प्रणाली, सिस्टम एप्रोच, अभिक्रमित अनुदेशन प्रणाली, सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण मशीन आदि।

शिक्षण कार्य में नित्य नवीन नवाचारों के प्रयोग की चुनौती -

आज के समय में शिक्षण कार्य को पेशे के रूप में मान्यता मिल रही है। इस पेशे में सफल होने के लिए अध्यापकों को स्वयं को शिक्षण कार्य में प्रयोग आने वाले नवीन नवाचारों के प्रयोग की चुनौती होती है। शिक्षण कार्य में वीडियो कान्फ्रेंस, टैली कान्फ्रेंस आदि।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था न होना, एक वर्षीय बी.एड. एवं शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में अधिकांश स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थानों के पास मनोविज्ञान, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, वाणिज्यशास्त्र, गृह विज्ञान आदि के लिए प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था नहीं थी। द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षण सस्थानों में प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था करना बहुत दूर की बात है। अधिकांश अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं को वर्ष भर में मुश्किल से एक या दो बार ही विशेष अवसरों पर खोला जाता है।

अब द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था के कठोर नियम बनाए

जाए तथा पैनलों में जाने वाले एक्सपर्ट ईमानदार एवं शिक्षक आचार संहिता का पालन करने वाले हो। जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास में मार्गदर्शन एवं सहयोग कर सकें।

निष्कर्ष-

आज हमारे देश में द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा को अनेक कारक जैसे- आर्थिक, सामाजिक एवं कई प्रकार की मनोजनित परेशानियों से संघर्ष करना पड़ रहा है। द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा में समावेशित दृष्टिकोण से आत्मविश्वास तथा आत्म सम्मान की भावना मजबूत होगी। द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा में सहकारिता आधारित विधियों के प्रयोग से विद्यार्थियों में सामुदायिक भावना का विकास होगा। अतः आज के समय में समावेशी शिक्षा की महती आवश्यकता बन गई है। आज समाज में लोगों के दृष्टिकोण में धर्म, वर्ग, जाति, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विचारधारा से ऊपर उठकर एक समावेशी समाज की सोच और भावना विकसित करने की जरूरत है ताकि वर्षों से उपेक्षित समाज के उन लोगों को भी समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकें और इसके लिए ठोस कदम उठाने होंगे। वंचित वर्ग को अध्यापक शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ने की क्षमता विकसित करने के अवसर उपलब्ध कराने होंगे। जिससे द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का मुकाबला स्वयं कर सकें।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

1. भारत की जनगणना 2011
2. एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली।
3. टीचर एजूकेशन करीक्यूलमः ए फ्रेमवर्क 1978, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
4. त्रिपाठी, विवेकनाथ, अध्याक शिक्षा में प्रतिबद्धता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 2015।
5. भट्टाचार्य, जी.सी., अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2015।

विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे एवं चुनौतियाँ

–डॉ. शिवदत्त आर्य

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ,
नई दिल्ली

अध्यापक को समाज एवं देश के विकास में प्रमुख कारक माना गया है। प्रत्येक सफल नागरिक के पीछे प्रतिभाशाली अध्यापकों का परिश्रम छिपा होता है। यदि अध्यापक अध्यापकीय गुणों एवं योग्यताओं से युक्त नहीं है तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारी वर्तमान पीढ़ी पर तो पड़ता ही है, साथ ही साथ आने वाला कल भी संशय युक्त होता है। आने वाली पीढ़ी खुशहाल हो, मूल्य युक्त जीवन जिये, स्वकार्य क्षेत्र में प्राप्त ज्ञान का उपयोग कर सके, आधुनिक जीवन एवं भारतीय परम्पराओं में सामंजस्य कर सके, रोजगार प्राप्त कर सके, माता-पिता, गुरू तथा अन्य को आदर, सम्मान एवं प्रेम दे सके, देश की एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण रख सके तथा विद्यार्थियों का सर्वाङ्गीण विकास हो सके इन महत्त्वपूर्ण कार्यों को एक योग्य अध्यापक ही उचित प्रकार से सम्पन्न कर सकता है। अध्यापक योग्य हो, व्यावसायिक कुशलता में दक्ष हो, बहुआयामी हो, विभिन्न कौशलों से युक्त हो, शिक्षण अधिगम सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण करने में दक्ष हो इन सभी दक्षताओं के साथ-साथ विभिन्न योग्यताओं का विकास अध्यापक के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षा के माध्यम से किया जाता है। अध्यापक शिक्षा की महत्ता को देखते हुये राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने बी.एड. एवं

एम.एड. कार्यक्रम को द्विवर्षीय बनाया था इससे सम्बन्धित पाठ्यचर्या का निर्माण कर इसे 2015 से अनिवार्य रूप में लागू कर दिया गया है। इसी पाठ्यचर्या में विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम को समाहित किया गया है। यह कार्यक्रम किस हद तक प्रशिक्षणरत अध्यापकों के लिए उपयोगी एवं अनुपयोगी है, इस विषय पर प्रस्तुत पत्र में विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

विवेकानन्द की विचारधारा में एक सच्चा अध्यापक वही है जो तत्काल ही विद्यार्थियों के स्तर तक आ जाये तथा अपनी आत्मा को विद्यार्थियों की आत्मा तक हस्तांतरित कर सके और विद्यार्थियों के कानों से सुन सके, आंखों से देख सके तथा उनकी सूझ-बूझ से ही समझ सके। बालक के शिक्षण में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसे बालक की आवश्यकताओं तथा समस्याओं को समझना होता है और उसी के अनुसार उनके अधिगम तथा क्रियाओं को निर्देशित करना पड़ता है। अध्यापक का उद्देश्य धन कमाना या प्रसिद्धि प्राप्त करना नहीं है अपितु मानव प्रेम का विकास करना है। अध्यापक में निहित प्रेम ही शिक्षार्थी पर उसके प्रभाव का वास्तविक साधन है। अध्यापक ही वह शक्ति है जो विद्यार्थी को असत्य से सत्य, अन्धकार से प्रकाश तथा मृत्यु से अनश्वरता तक ले जाती है। अध्यापक में उच्च आदर्शों, मूल्यों एवं शिक्षण सम्बन्धित कौशलों का विकास अध्यापक शिक्षा के माध्यम से किया जाता है। वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की दयनीय स्थिति में सुधार हेतु द्विवर्षीय पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम पूर्व में 2 से 3 महीने का होता था जिसमें प्रशिक्षु सैद्धान्तिक ज्ञान का सही से अभ्यास नहीं कर पाते थे इसी कारण इस कार्यक्रम की अवधि को दोगुना किया गया है जिससे प्रशिक्षुओं को अभ्यास के लिए पर्याप्त समय मिलता है। विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रशिक्षणरत भावी अध्यापक वास्तविक शिक्षण परिस्थितियों में आने वाली समस्याओं का समाधान कैसे करेंगे, इसका वे इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अभ्यास करते हैं तथा अपनी व्यावसायिक दक्षता को अभिवृद्ध करते हैं।

वर्तमान में अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित संस्थायें गुणवत्तापूर्ण अध्यापक शिक्षा प्रदान करे तथा एक योग्य शिक्षक का निर्माण हो इसलिए क्वालिटी काउन्सिल ऑफ इण्डिया द्वारा सभी अध्यापक शिक्षा संस्थाओं से पिछले पांच वर्षों के भौतिक तथा मानवीय संसाधनों का संज्ञान लिया गया जो इस जानकारी को देने में असफल रहे अथवा जिनकी जानकारी अपूर्ण रही ऐसी लगभग 3000 संस्थाओं की मान्यता समाप्त होने के कगार पर है। अध्यापक शिक्षा गुणवत्तापूर्ण हो इस ओर यह एक प्रशंसनीय कदम है। मात्र कुछ शैक्षिक संस्थायें ही विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलाती हैं। इसी कारण जो गुणवत्ता अध्यापकों में परिलक्षित होनी चाहिए वह नहीं दिख रही। वर्तमान में जहां पर भी विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम चल रहा है वहां पर भी नियोजन, प्रशासन, प्रबन्धन एवं मूल्यांकन सम्बन्धी अनेक मुद्दे एवं चुनौतियां हैं, जिसके कारण प्रशिक्षणरत अध्यापकों को पूर्ण लाभ नहीं मिल पा रहा है। अध्यापक शिक्षा के गुणवत्ता स्थायित्व हेतु विभिन्न मुद्दों एवं चुनौतियों पर तत्काल ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता है जिससे विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध हो सके।

विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सम्बन्धी मुद्दे एवं चुनौतियाँ-

- पाठयोजना की तैयारी
- शिक्षण सम्बन्धी नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रयोग न करना
- शिक्षण सहायक सामग्री का चयन एवं प्रयोगीकरण
- विभिन्न क्रियाओं का अभिकल्पन
- छात्राध्यापकों के आत्मविश्वास में कमी
- भाषा सम्बन्धी समस्या
- छात्र प्रबन्धन
- अनुशासन
- समय प्रबन्धन

- शिक्षण कौशलों में दक्ष न होना
- विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षक एवं कर्मचारियों का असहयोग
- निरीक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन न कर पाना अथवा उपेक्षा भाव
- सम्बद्ध विषयों हेतु कालांश उपलब्ध न होना
- शिक्षणाभ्यास हेतु चयनित विद्यालयों की दूरी
- व्यक्तिगत समस्या (स्वास्थ्य, भोजन, तनाव, आर्थिक)
- नवाचारिता का अभाव
- प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी

विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सम्बन्धी उपर्युक्त चुनौतियों के समाधान के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए-

- विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सम्बन्धी अभिविन्यास कार्यक्रम
- सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से आत्मविश्वास एवं शिक्षण अनुभवों में वृद्धि
- विद्यालयों का चयन कम दूरी में करना
- उचित विद्यालयों का चयन (जहाँ विषय सम्बद्ध कक्षायें उपलब्ध हों)
- अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं का स्वयं का विद्यालय होना
- उचित नियोजन एवं विभिन्न व्यूह रचनाओं द्वारा विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सम्पन्न करना।
- विभागीय अध्यापकों एवं प्रशिक्षुओं के मध्य सतत् संवाद और अंत:क्रिया होना (समस्या उत्पन्न होने पर)
- उचित निर्देशन एवं परामर्शन (शिक्षक, मेन्टर, प्रशासनिक कर्मचारी)
- उपचारात्मक अनुदेशन

- संवेदनशीलता एवं सहयोग से विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं का हल खोजने हेतु प्रेरित करना
- प्रतिपुष्टि प्राप्त करना
- निष्पक्ष मूल्यांकन
- विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम सफल करने हेतु क्रियात्मक अनुसन्धान का प्रयोग करना

निष्कर्षत: यह कहना उचित होगा कि अध्यापक शिक्षा को दो वर्ष करने पर भी अभी भी इस शिक्षा में गुणवत्ता की अत्यधिक कमी है। गुणवत्ता में सुधार हेतु इससे संलग्न सभी व्यक्तियों को संयुक्त रूप से कर्तव्य का निर्वाह तो करना ही होगा तथा अतिरिक्त प्रयास भी करने होंगे। जिससे यह महत्वपूर्ण कार्य उचित प्रकार से सम्पन्न हो सके और भावी अध्यापक योग्य बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- शुक्ला, डॉ. ग्रीष्मा, (2009) अध्यापक शिक्षा की क्षेत्र प्रासंगिकता, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
- Curriculum Framework For Quality Teacher Education (1998) NCTE, New Delhi.
- National Curriculum Framework 2005, NCERT, New Delhi.
- National Curriculum Framework for Teacher Education, 2009, NCTE, New Delhi.
- NCTE, Discussion Document, 2004
- Some Specific Issues and Concerns of Teacher Education. NCTE, 2003.

✦✦✦

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा छात्राध्यापकों की दक्षताओं का ह्रास या विकास

–डॉ. आरती शर्मा

सहायकाचार्या (शिक्षाशास्त्र विभाग)
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिसंस्कृतविद्यापीठ,
नई दिल्ली

संक्षिप्तिका (Abstract)

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र का मात्र एक कार्यक्रम ही नहीं बल्कि एक ऐसा मिशन या आयोजन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय सन्दर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निवर्हन के लिए दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके। व्यापक सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि विभिन्नस्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने के लिए प्रयत्न, कि अग्रिम प्रजन्म को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने क्षमता विकसित करना। तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता तथा नवाचारिकता के साथ सांस्कृतिक जागृति एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास, उद्यमगत नीति बोध एवं संवेगात्मक पक्ष में भी दक्षता प्रदान करने की व्यवस्था ही अध्यापक शिक्षा के प्रमुख लक्ष्य हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि आज चिन्तनशील (Reflective) शिक्षक बनाने पर बल दिया जा रहा है। शिक्षक केन्द्र-बिन्दु विषयगत ज्ञान के साथ कौशल एवं दक्षता तक पहुँच चुका है। ऐसी स्थिति में सरकार द्वारा अध्यापक शिक्षा में

गुणवत्ता बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाये जा रहे हैं। जैसे- एक वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की परिणिति द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के रूप में। इस परिवर्तन से छात्राध्यापकों की प्रमुख दक्षताओं यथा सन्दर्भगत, संकल्पनात्मक, विषयवस्तुगत, सम्प्रेषण सम्बन्धी, शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण सम्बन्धी आदि में उपलब्धि विचार करना इस पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

परिचय-

"The right kind of teacher is one who possesses a vivid awareness of his mission. He, not only loves his subject, but he loves also those whom he teaches. His success will be measured not in terms of percentage of passes alone, not even by the quantity of original Contribution to knowledge important as they are, but equally through the quality of life and character of men or women whom he taughts." **(विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग)**

अर्थात् वास्तविक अध्यापक वह होता है जिसमें अपने कार्य-लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट जागरूकता हो, न केवल अपने विषय का बल्कि उसके लिए वे भी प्रिय हों जिन्हें वह पढ़ाता हो। उसकी सफलता का आकलन न केवल उत्तीर्ण प्रतिशत के आधार पर किया जा सकता है और न केवल ज्ञान के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण योगदान के परिमाण से ही करना उपयुक्त हो सकता है, बल्कि समान रूप से उनके द्वारा पढ़ाये गये छात्रों के जीवन की गुणवत्ता और उनके चरित्र के आधार पर भी किया जा सकता है।

इसके लिए अध्यापक शिक्षा ही एक ऐसा कार्यक्रम है जिसकी सहायता से अन्तः अभिप्रेरणायुक्त अध्यापकों की तैयारी सम्भव है। अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में भी यह निर्धारित किया कि आधुनिक ज्ञान और अधिगम सम्बन्धी सिद्धान्तों के सन्दर्भ में विषयगत शिक्षण सम्बन्धी दक्षता का छात्राध्यापकों में विकास करना, उनमें छात्रों

के सर्वांगीण विकास और मार्गदर्शन हेतु अवबोध, रुचि, अभिवृत्ति एवं सम्बन्धित कौशलों को विकसित करना, प्रजातान्त्रिक समाजोपयोगी मूल्यों के सन्दर्भ में राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु भारतीय पृष्ठभूमि में शैक्षिक उद्देश्य तथा लक्ष्यों के प्रति अवबोध उत्पन्न करना ताकि वे विद्यालय में अध्यापकीय भूमिका को ठीक से समझ सकें।

अध्यापक शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों में भी यही लक्षित किया गया कि अध्यापक शिक्षा के माध्यम से छात्राध्यापकों में अधिगमकर्त्ता, अधिगम क्रिया, अधिम सन्दर्भित एवं वैयक्तिक समस्याएँ, विद्यालय संगठन तथा प्रशासन, मूल्यांकन तकनीक, विकासात्मक समस्याएँ एवं सामाजिक अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध आदि के बारे में ज्ञान तथा अवबोध विकसित करना, उनमें कुशल एवं प्रभावी सम्प्रेषण क्षमता, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन, सरल मूल्यांकन, उचित मार्गदर्शन, उद्यमगत अभिवृत्ति, राष्ट्र तथा प्रजातन्त्रवादी वैज्ञानिक अभिवृत्ति तथा समस्या समाधानपरक प्रवृत्तियों का विकास करना है।

इन्हीं सभी उद्देश्यों की पूर्ति में जब न्यूनता परिलक्षित होने लगी, कारण तलाशने पर प्रायः समय सीमा या कार्य-दिवस कम होने की बात झलकी, इस समस्या पर विचार मन्थन कर शिक्षाविदों द्वारा एकवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की कालावधि बढ़ाकर द्विवर्षीय कर दी गयी। अब चिन्तनात्मक विषय यह है द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने पर छात्राध्यापकों की दक्षताओं में विकास हुआ है अथवा ह्रास। दक्षताओं से अर्थ यहाँ अंग्रेजी शब्द Competency से है। जिसे सामान्यतः इस प्रकार परिभाषित किया जाता है-

"A person's competencies may be defined in terms of one's knowledge, Skills and behaviours."

यदि शिक्षण में दक्षता क्या है इस विषय में विचार किया जाये तो- "Competence is understood as excellent capability. Compe-

tence includes knowledge, Skills, attitudes and experiences, which has to be target category of profession of educator. Ability to perform or cary out defined tasks in a particular context, at a high level of excellence."

वस्तुतः सभी शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षक शिक्षण कला में निपुण, कार्य कुशल, ज्ञानवान, उचित एवं नवीन दृष्टिकोण से युक्त हो। शिक्षक को कार्य कुशल बनाने के लिए एवं प्रभावित करने के लिए व्यवस्थित रूप से दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने का प्रावधान किया गया है।

दक्षता का अभिप्राय व्यवसायिक योग्यता, जिसमें अर्जित ज्ञान एवं उच्च स्तर की अवधारणा प्रस्तुत करने की योग्यता शामिल है। दक्षता का अर्थ है छात्रों को कार्यकुशलता और संरक्षण का सम्यक् ज्ञान देना। दक्षता का प्रशिक्षण इसलिए दिया गया है कि प्रशिक्षित शिक्षक क्रियाशील योग्यताओं या गुणों के द्वारा विकास कर सकें। इसलिए दक्षता के कई क्षेत्र भी आवंटित हैं। जैसे-

1. सन्दर्भित दक्षता (Contexual)
2. संकल्पनात्मक दक्षता (Conceptual)
3. विषयवस्तुगत दक्षता (Content)
4. सम्प्रेषण सम्बन्धी दक्षता (Transactional)
5. शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण सम्बन्धी दक्षता (Develop Teaching Learning Materials)
6. मूल्यांकनगत दक्षता (Evaluation)
7. प्रबन्धन दक्षता (Management)
8. अभिभावक-सह-कार्य सम्बन्धी दक्षता (Working with Parents)
9. अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप सम्बन्धी दक्षता (Other educational Activities)

आइये, विचार करते हैं कि द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों की किन-किन दक्षताओं का पहले से अधिक विकास हुआ है और किन-किन का ह्रास-

1. सन्दर्भित दक्षता (Contextual Competencies) -

इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि जब तक छात्राध्यापक पाठ्य-वस्तु के सन्दर्भ बिन्दुओं के बारे में भली-भाँति परिचित नहीं हो पाते हैं, उसे ठीक से नहीं समझ सकते हैं, जैसे- विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में ही किसी घटना या व्यवहार को उचित या अनुचित ठहराया जा सकता है। अतः सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषा सम्बन्धी तथा धार्मिक सन्दर्भ के बारे में छात्राध्यापकों में स्पष्ट जानकारी या अवबोध का होना अति आवश्यक है। इसी प्रकार विविध सामुदायिक संगठन, सामाजिक न्याय तथा साम्य, समान शैक्षिक अवसर की आवश्यकता आदि के बारे में समझदारी का होना भी सन्दर्भित दक्षता के अन्तर्गत निहित है।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में समयावधि अधिक प्राप्त होने से छात्राध्यापकों को प्रत्येक विषयवस्तु पाठ्य-वस्तु के सन्दर्भ बिन्दुओं से परिचित होने के लिए पर्याप्त अवसर मिलते हैं। इसमें जो छात्राध्यापक अधिक सक्रिय रहते हैं, उनकी दक्षता बढ़ती है क्योंकि वे प्रत्येक अंश पर विचार विमर्श कर विश्लेषण करते हैं, अध्यापकों द्वारा निर्दिष्ट वास्तविक परिस्थितियों से अभिभूत होने पर भी प्रयास करते हैं।

2. संकल्पनात्मक दक्षता (Conceptual Competencies) -

संकल्पना ही, वह आधार है जिस पर अधिगम को स्थापित तथा विकसित करने के लिए सार्थक प्रयास कर पाना सम्भव हो सकता है, जैसे- यदि किसी छात्र को संस्कृत की प्रारम्भिक संक्रियाओं के बारे में ज्ञान न हो तो वह कभी भी आगे चलकर उच्च संस्कृत संक्रियाओं को

करने में सक्षम नहीं हो सकता। यही कारण है कि दक्ष अध्यापक के लिए संकल्पना सम्बन्धी दक्षता को महत्त्वपूर्ण माना गया है ताकि उसमें स्पष्ट संकल्पनात्मक अवबोध विकसित हो सके। शारीरिक, मानसिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अधिगमकर्त्ताओं की आवश्यकताएँ क्या हैं, उनके विकासात्मक वैशिष्ट्य क्या हैं, इनके बारे में जानकारी रखना अपेक्षित है। क्योंकि यह जानने के बाद ही प्रभावकारी ढंग से पाठ्यक्रम का प्रस्तुतीकरण करना या प्रायोगिक कार्य को संचालित कर पाना सम्भव हो सकता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले छात्रों के बारे में संकल्पनात्मक ज्ञान के सहारे ही कक्षा में उनकी समय से पहचान कर पाना शिक्षक के लिए सम्भव हो सकता है।

वस्तुतः द्विवर्षीय पाठक्रम में जब छात्राध्यापक इन्टर्नशिप के लिए जाते हैं और वहाँ कक्षा में छात्रों के विविध स्तरों को कितना समझकर उन्हें अवबोध कराने का प्रयास करते हैं, इससे उनकी संकल्पनात्मक दक्षता का परिचय होता है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के बावजूद भी इस दक्षता में न्यूनता ही दिखाई देती है।

3. विषयवस्तुगत दक्षता (Content Competencies)-

एक अध्यापक के लिए अपनी विषयवस्तु में पूर्ण अधिकार अपरिहार्य है। उसे शिक्षण के पहले पाठ्यक्रम का विश्लेषण करते हुए अवबोध योग्य अनुक्रम में सज्जित करना होता है और उनमें पारस्परिक सहसम्बन्धों को भी स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है ताकि छात्र कार्य-कारण सम्बन्धों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। यही कारण है कि छात्राध्यापकों को पाठयोजना निर्माण करते समय पाठ्य-पुस्तक के साथ ही उच्च स्तरीय सन्दर्भ ग्रन्थों का अवलोकन करने और पाठ-योजना में उनका उल्लेख करने के लिए कहा जाता है ताकि वे शिक्षण विषय के समस्त अवयवी तत्त्वों एवं आधुनिक परिवर्तन आदि से भली-भाँति परिचित हो सकें।

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम होते हुये भी छात्राध्यापकों को एक ही प्रारूपाधारित पाठयोजना बनाने के लिए बाध्य किया जाता है, जिससे वे शिक्षण विषय के समस्त अवयवों से परिचित नहीं हो पाते हैं और विषयवस्तुगत दक्षता पूर्णतः प्राप्त करने में अक्षम रहते हैं।

4. सम्प्रेषण सम्बन्धी दक्षता (Transactional Competencies)-

शिक्षक का प्रमुख कार्य विषयगत ज्ञान का हस्तान्तरण करना होता है। पाठ नियोजन को व्यावहारिक रूप प्रदान करना और उपलब्धि स्तर का आकलन करना इसमें निहित है। इस हेतु अनेकानेक मनोवैज्ञानिक तथा प्रबन्ध सम्बन्धी नियम एवं सिद्धान्तों के साथ सामाजिक पक्षगत अवधारणाओं से परिचय एक दक्ष अध्यापक के लिए अपरिहार्य बन जाता है। सम्प्रेषण दक्षता हेतु विविध तकनीक, विधि एवं व्यूह-रचनाओं, नवाचारों के प्रयोग में दक्षता का होना जरूरी है।

प्रायशः आचार्य राममूर्त्ति आयोग (1992) के प्रतिवेदन में शिक्षण अभ्यासात्मक पक्ष की निरन्तर उपेक्षा को ही इस दक्षता के अभाव का कारण माना गया था। परन्तु वर्तमान में अभ्यासात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा, विविध क्रिया प्रधान व्यूह-रचनाओं (क्षेत्रीय भ्रमण, निरीक्षण, कहानी कथन, प्रायोगिक कार्य) में भी कुशल बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इन कौशलों में दक्षता के लिए पाठ्यक्रम में अनेक पाठ्यबिन्दु योजित हैं, फिर भी जो परिणाम दिखाई देने चाहिए, उनसे हम काफी दूर है, ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि अभ्यास के लिए आवंटित अधिक कालावधि भी छात्राध्यापकों में कहीं न कहीं नीरसता पैदा करती है।

5. शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण सम्बन्धी दक्षता (Competencies to Develop Teaching-learning materials)

अध्ययन-अध्यापन परिस्थिति के अनुसार प्रभावकारी शिक्षण के लिए अनेकानेक शिक्षण अधिगम सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

उन सामग्रियो को स्वयं तैयार करने की कला में अध्यापक को दक्ष होना चाहिए ताकि उनकी अनुपलब्धता की स्थिति में भी शिक्षण को प्रभावकारी रूप देना सम्भव हो सके। स्वाध्याय सामग्री की आवश्यकता कक्षाकक्ष अन्तर्क्रिया को बढ़ाने के लिए होती है। आधुनिक तकनीकी निर्भर शिक्षण-अधिगम सामग्रियों (जैसे-श्रव्य, दृश्य या श्रव्य-दृश्य टेप, स्लाइड तथा पारदर्शियाँ, संगणक आधारित उपकरण, मल्टी मीडिया आदि) के उपयोग से भी शिक्षण के प्रभाव को स्थाई बनाना सम्भव है, ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब छात्राध्यापक उनसे परिचित होते हुए उन्हें कक्षाकक्ष परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार प्रयुक्त करने में दक्ष हों। समृद्धिसाधक (Enrichment) सामग्रियाँ, सुधारात्मक शिक्षणोपयोगी उपकरण के बारे में जानकारी होना भी जरूरी है। इस दक्षता के माध्यम से कम से कम समयावधि में अधिकाधिक अधिगमकर्त्ताओं को सफलतापूर्वक शिक्षित किया जा सकता है। द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत इस तरह की शिक्षण-अधिगम सामग्री निर्माण के अनेक अवसर छात्राध्यापकों को प्राप्त होते है। प्रत्येक भाषा प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत भी सामग्री निर्माण करना सिखाया जाता है। I.C.T. जैसे पत्रों के माध्यम से तकनीकी निर्भर शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण प्रक्रिया सिखाई जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से इस दक्षता का विकास हुआ है।

6. मूल्यांकनगत दक्षता (Evaluation Based Competencies)-

मूल्यांकन का उद्देश्य अधिगम में दक्षता की सीमा को स्पष्ट करना और अधिगम को प्रोत्साहित करना है। चूँकि मूल्यांकन को शिक्षण का ही एक अविभाज्य अंग माना जाता है, अतः मूल्यांकनगत दक्षता के अभाव में कोई भी अध्यापक दक्षता के स्तर को प्राप्त नहीं कर सकता है। कक्षा में निरन्तर और निदानात्मक मूल्यांकन के अभाव में अधिगम सम्बन्धी कमियों को दूर कर पाना प्रायः सम्भव नहीं हो पाता है। एक

दक्ष अध्यापक के लिए आधुनिक मापन और मूल्यांकन की विभिन्न पद्धति एवं तकनीकों से विशेष परिचय का होना आवश्यक है।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत भी प्राय: इस दक्षता में न्यूनता देखी गई है। छात्राध्यापकों का ज्ञान इस सन्दर्भ में न्यून दिखाई देता है, एक बोझ की तरह वे मूल्यांकन कार्य करते हुये नज़र आते हैं बिना किसी तकनीक अथवा पद्धति के प्रयोग के।

7. प्रबन्धन दक्षता (Management Competencies)-

उत्तम एवं प्रभावकारी शिक्षण के लिए अध्यापक को कक्षानुशासन और प्रबन्ध कौशलों में कुशलता की महती आवश्यकता होती है। विभिन्न शैक्षिक और पाठ्यक्रमेतर कार्यक्रमों के आयोजन में भी उन्हें प्रबन्धन कौशलों को प्रयुक्त करने की आवश्यकता होती है। एक कुशल प्रबन्धन करने वाला अध्यापक किसी भी स्तर के कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों का मार्गदर्शन कर सकता है, किसी सामूहिक क्रियाकलाप में संलग्न और प्रेरित करते हुए उनमें सामाजिक दायित्वबोध और सेवाभावना का विकास कर सकता है, जबकि इसके विपरीत अध्यापक का कार्य मात्र कक्षाध्यापन तक ही सीमित होकर रह जाता है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से छात्राध्यापकों को प्रबन्ध कौशल सिखाये जाते हैं किन्तु द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम से इस कौशल में विशेष बदलाव नजर नहीं आता, क्योंकि इस पत्र के पाठ्यक्रम में भी ज्यादा बदलाव नहीं किया गया है और जिन छात्राध्यापकों में नेतृत्त्व गुण बलवर्ती होती है, उनका दक्ष दक्षता में विकास दिखाई देता है, अन्य सभी सामान्य ही रहते हैं।

8. अभिभावक सह-कार्य दक्षता (Competencies Related to working with Parents)-

चूँकि अधिगमकर्त्ता अधिकांश समय घर पर अपने माता-पिता या अभिभावकों के द्वारा ही नियन्त्रित होते हैं, अत: प्रारम्भिक शिक्षा स्तर

के अध्यापकों के लिए तो अभिभावक सह-कार्य कौशल में दक्षतार्जन अत्यावश्यक है क्योंकि इस स्तर पर अवरोधन और अधिगम परित्याग की सम्भावना भी अधिक रहती है। अन्य स्तरों पर भी अध्यापकों का समुदाय और समाज के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में यह सहायक सिद्ध हो सकती है। शैक्षिक स्तरोन्नयन हेतु विशेष दायित्वों में अध्यापकों को अपने छात्र/छात्राओं के माता-पिता तथा अभिभावक समुदाय को भी सामाजिक हितकारी विषयों में जागरूक बनाने के लिए सार्थक प्रयास करने पड़ते हैं। इसलिए छात्राध्यापकों में इस दक्षता को विकसित करना भी नितान्त आवश्यक है।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में इसके लिए कोई विशेष कार्यक्रम निश्चित नहीं किया गया है, केवल व्यक्तिवृत्ताध्ययन के दौरान छात्राध्यापक व्यक्तिगत स्तर पर माता-पिता या अभिभावक से सम्पर्क करते हैं। इन्टर्नशिप में भी P.T.M. के दौरान छात्राध्यापकों को बहुत कम विद्यालयों में हिस्सा बनाया जाता है, जिसे वे इस व्यवहार कुशलता से प्रायः वञ्चित रह जाते हैं। और इस दक्षता में न्यूनता ही झलकती है।

अन्य शैक्षिक क्रियाकलापगत दक्षता (Competencies Related to other Educational Activities)-

पाठ्यक्रमगत क्रियाकलापों के साथ-साथ भावात्मक तथा मनोगामक विकास के लिए पाठ्यक्रमेतर क्रियाकलापों में दक्ष होना भी आवश्यक है। जैसे मूल्यबोध के विकास के लिए अनुकरण द्वारा अधिक सार्थक रूप से ग्रहण किया जा सकता है। विभिन्न राष्ट्रीय तथा सामाजिक पर्व एवं घटनाओं से सम्बन्धित तिथियों के अनुपालन से, सामुदायिक जीवन सहकार्य (जैसे स्वच्छता कार्यक्रम, श्रमदान, भ्रमण, रक्तदान, समाजसेवा, सृजनशील व्यक्तियों से प्रत्यक्ष सम्पर्क आदि) के अनुप्रयोग द्वारा तथा दैनिक प्रार्थना, सभा, विचार-चिन्तन आदि के आयोजन से अधिगमकर्त्ता अनेक भावात्मक प्रशिक्षण स्वयं ही प्राप्त कर सकते हैं।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में इन क्रियाकलापों में दक्षता विकसित करने के लिए प्रतिदिन एक कालांश निश्चित किया गया है। जिसमें इन कार्यक्रमों के लिए योजना निर्माण और उनके आयोजन सम्बन्धी कौशलों का ज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रयोग करवाये जाते हैं। पर्याप्त कालावधि प्राप्त होने से प्राय: इस दक्षता का विकास हुआ है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम नहीं वरदान सिद्ध हुआ है तो कहीं अभिशाप। अर्थात् पर्याप्त अवसर प्राप्त होने से छात्राध्यापकों की कई आवश्यक दक्षताओं में वृद्धि हुई है और कई उसी रूप में विकसित हो रही है जैसी एकवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में थी। इन्टर्नशिप में अधिक कालावधि छात्राध्यापकों में कहीं न कहीं नीरसता का भाव जागृत कर रही है। विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में भी पाठयोजना सम्बन्धी कड़े नियम भी कहीं न कहीं छात्राध्यापकों की दक्षताओं में ह्रास का कारण बन रहे हैं। यदि उसे प्रतिदिन स्वतन्त्र रूप से नई-नई शिक्षणविधियों, तकनीकियों से पढ़ाने के अवसर दिये जायें, विद्यालयों में पर्याप्त कलांश दिये जाये और उन्हें प्रत्येक गतिविधि का हिस्सा बनाया जाये तो पत्र में चर्चित दक्षतायें और भी अधिक विकसित की जा सकती हैं। पाठ्यक्रम में भी सुधार की आवश्यकता है। कई पत्रों का समायोजन विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम से पहले किया जाना चाहिए। Scouts Guide Camp भी इन्टर्नशिप से पहले किया जाना चाहिए ताकि छात्र उसमें सिखाये गये कौशलों का अनुप्रयोग विद्यालयों में कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. जोशी एवं मेहता, शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धान्त और समस्याएँ, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, 1995

2. भट्टाचार्य, जी.सी., अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2011

3. Jangira, N.K., Teacher's Training and Teacher's Effectiveness, An Experiment in Teacher Behaviour, National Publishing House, New Delhi, 1979

Documents-

1. Competency Based and Commitment Oriented Teacher Education for Quality School Education, NCTE Publication (in Teacher Today, Vol. 41, No.3, January-June, 1999), Bikaner, Rajasthan.

Websites-

i. https://m.huffpost.com
ii. Online library.wiley.com

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम

–डॉ. प्रदीप कुमार झा

असि.प्रो. (संविदा), शिक्षाशास्त्र-विभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा व्यक्ति को विभिन्न कौशलों से पूर्ण करके उसे 'अध्यापक' जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर बिठाया जाता है। अध्यापक बनने से पूर्व यद्यपि उसमें अध्यापन के अनौपचारिक रूप से बहुत सारे गुण, अभिरुचि, ज्ञान, इच्छा, अभिलाषाएँ इत्यादि विद्यमान रहते हैं लेकिन आज के वर्तमान समय में औपचारिक रूप से किसी प्रशिक्षण केन्द्र (विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदि) से **'अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम'** का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद ही योग्य माना जाता है। एक सफल अध्यापक में ज्ञान और सम्प्रेषण-कौशल का समुचित समावेश होना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रन्थ में उल्लेख करते हुए बताया है-

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था
संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां
धुरिप्रतिष्ठापयितव्य एव॥

अर्थात् कोई भी अध्यापक तब तक सफल अध्यापक नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने ज्ञान को समुचित विधियों, प्रविधियों, पद्धतियों, साधनों इत्यादि के द्वारा सफलता पूर्वक सम्प्रेषित न कर सकें।

इसी सम्प्रेषण कौशल की शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए अध्यापक शिक्षा की जरूरत महसूस की जाती है।

अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम प्रशिक्षणार्थी को हर प्रकार से मदद करता है उसे एक योग्य अध्यापक बनाने में। सैद्धान्तिक विषयों के साथ-साथ जो विद्यमान सम्बद्धता कार्यक्रम चलाया जाता है उसका सम्बन्ध साक्षात् छात्राध्यापकों के अधिगम क्रिया से सम्बन्धित व्यवहार परिवर्तन से है। विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य आधार है। इसी को आधार बनाकर इसके कुछ मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं जो निम्नलिखित हैं-

- छात्राध्यापकों के व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि करना।
- कक्षा-कक्ष प्रबन्धन को निकट से जानना।
- विद्यालयीय-वातावरण के साथ समायोजन करना।
- शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण-सामग्री का चयन व निर्माण।

विद्यालयीय कार्यक्रम से जुड़ने के बाद ही छात्राध्यापक स्वयं को अध्यापक के गुणों से युक्त करने के प्रयास में जुट जाते हैं। अन्य अध्यापकों को देखकर, उनके कार्यकलापों को देखकर, अध्यापन के तौर-तरीकों को देखकर छात्राध्यापक सीखते हैं और अपने व्यावसायिक दक्षता में विकास करने का हरसम्भव प्रयास करते हैं। कक्षा में अध्यापन से पूर्व दस दिन का एक निरीक्षण-कार्यक्रम चलाया जाता है जिसके द्वारा छात्राध्यापक विद्यालयीय अध्यापकों के अध्यापन प्रक्रिया का निरीक्षण करते हैं और गुणवत्ता पूर्ण अध्यापन-शैली को आत्मसात् करने का प्रयास करते हैं। विद्यालयीय वातावरण में छात्राध्यापक अपने-आपको ढालने का प्रयतन करते हैं और उसके द्वारा अध्यापन एवं अधिगम की प्रक्रियाओं का सकारात्मक विकास करते चले जाते हैं। अपने अनुभव शक्ति का भी सापेक्ष विकास हो जाता है। इस अनुभव के आधार पर ही छात्राध्यापक कक्षा-कक्षा एवं विद्यालयीय समस्याओं का समाधान कर पाने में सक्षम हो पाते हैं। कक्षा-कक्ष के प्रबन्ध का व्यावहारिक ज्ञान भी

इन परिस्थितियों के द्वारा ही विकसित हो पाते हैं। अनुशासन सम्बन्धी समस्याओं से निबटने की योग्यताओं का भी विकास क्रमिक रूप से हो जाता है। कक्षा में अनुशासन की व्यवस्था कैसे बनाई जाय इन क्षमताओं का विकास इस विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम के द्वारा सम्भव हो जाता है। समस्यायुक्त छात्रों की पहचान करने तथा उसके लिए उपयुक्त युक्ति के द्वारा समस्या समाधान करने की व्यावहारिक प्रवृत्तियों का विकास हो जाता है। नित नए अनुभवों के द्वारा छात्राध्यापक छात्रों के मध्य प्रभावात्मक अनुशासन स्थापित करने के व्यावहारिक तौर-तरीकों से अवगत हो जाता है। वह जान जाता है कि अनुशासन स्थापित करने के लिए ज्ञान एवं सम्प्रेषण के साथ-साथ छोटी-छोटी बहुत सारी युक्तियों का प्रयोग कैसे किया जा सकता है। इस कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापक विद्यालय में शैक्षिक तथा अशैक्षिक कर्मचारियों के साथ-साथ बच्चों के साथ भी समायोजन करने की शक्तियों का विकास कर लेता है तथा अपने को एक शैक्षिक व्यक्तित्व में ढालने का प्रयास शुरु कर देता है। इस प्रकार 'विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम' एक व्यक्ति को एक शिक्षक बनाने की प्रक्रिया की प्रारम्भिक कड़ी के समान है। विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापक सरकार के द्वारा विद्यालय के लिए चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों से रुबरु होता है तथा उसमें अपनी सहभागिता भी प्रदान करता है। चाहे वह कार्यक्रम मध्याह्न भोजन का हो, स्वच्छता अभियान का हो या साक्षरता-अभियान से सम्बन्धित हो, हर जगह वह अपनी उपस्थिति प्रदान कर कुछ न कुछ अनुभव प्राप्त करता रहता है।

विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम के दूसरे चरण के तहत छात्राध्यापक शिक्षणार्थ कक्षा में प्रवेश करता है और अपने ज्ञान को सम्प्रेषित करने के लिए विभिन्न उपागमों, तकनीकों, युक्तियों, प्रविधियों, पद्धतियों, शैलियों इत्यादि का प्रयोग करके अधिगम क्रिया को सरल, सरस, सुरुचि एवं आकर्षक बनाकर अधिगम अनुभव पर सकारात्मक प्रभाव डालने का प्रयास करता है। इसके लिए सबसे पहले शिक्षण हेतु एक अच्छी पाठयोजना का निर्माण करता है। पाठयोजना में वाचनात्मक,

ज्ञानात्मक, अवबोधात्मक तथा प्रयोगात्मक विषयावबोध से सम्बन्धित विषयों का समावेश कर छात्रों के मानसिक विकास को ध्यान में रखकर योजना बनाई जाती है और कक्षा में उसका क्रियान्वयन किया जाता है। इस क्रियान्वयन में समय सीमा निर्धारित (30-35 मिनट) का होता है। इसी समय का सदुपयोग कर सम्पूर्ण पाठ को सम्प्रेषित करने का प्रयास किया जाता है तथा विभिन्न सोपानों का सूक्ष्म-ध्यान भी रखा जाता है। अत: इसमें समय-प्रबन्धन की महती भूमिका होती है। कक्षा में शिक्षण के लिए छात्राध्यापक सहायक शिक्षण सामग्री का कुशलता से प्रयोग करना सीख जाता है तथा अपने शिक्षण को प्रभावी तथा अधिगम-अनुभव को सापेक्ष बनाने का प्रयास करता है। छात्राध्यापक सहायक-सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया सीख जाता है तथा यथासमय उसका अपेक्षित प्रयोग भी। पाठयोजना निर्माण में तथा शिक्षण में स्तरानुसार विभिन्न व्यूह-रचनाओं, पद्धतियों, युक्तियों, विधियों आदि के अनुप्रयोग करने में सक्षम बन जाता है तथा इससे शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। इस प्रक्रिया में छात्राध्यापक गुणात्मकता आधारित पाठयोजना के निर्माण की प्रक्रिया सीख जाता है तथा उसका प्रयोग भी। प्रबन्धन के विभिन्न घटकों को सीखते-सीखते समय-सारिणी के निर्माण की प्रक्रिया भी सीख लेता है तथा कब और कहाँ किस विषय का नियोजन करना है तथा किस प्रकार की समय-सारिणी कब प्रभावी हो सकती है, इसे भी जानने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार देखा जाए तो विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापक अध्यापन एवं प्रबन्धन की विभिन्न परिस्थितियों से अच्छी तरह से अवगत हो जाता है जो कि इस निर्धारित कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भी है। परन्तु व्यावहारिक रूप से इसमें कई सारी समस्याएँ भी हैं जो इस कार्यक्रम को उसके उद्देश्य तक ले जाने से वंचित कर देती है। सैद्धान्तिक रूप में जिस प्रकार इसके नियोजन की प्रक्रिया गढ़ी गयी है उस रूप में यह अपने उद्देश्य तक पहुँच नहीं पाती है। छात्राध्यापक उसी ढर्रे पर चलते हुए विद्यालय तो जाते हैं परन्तु उसमें उस

शैक्षिक-जीवंतता का अभाव दिखता रहता है। पाठयोजना को आधुनिक बनाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता, विषय आधारित सहायक सामग्री का अभाव, विधियों का वही पुराना तन्त्र लेकर विद्यालय आना और निरीक्षक द्वारा पाठयोजना किसी प्रकार से स्वीकृत कराना ही उनका परम प्रयोजन रह जाता है। कक्षा-कक्ष व्यवस्थापन में भी रुचि का अभाव देखा जाता है। सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग तथा उसके निर्माण में भी रुचि की कमी दिखती है। छात्राध्यापकों के ज्ञान का स्तर भी वैसा नहीं होता जैसा के निर्धारित कक्षा के शिक्षण के लिए अपेक्षित है। विद्यालयीय वातावरण में समायोजन की समस्या भी दिखाई देती है जिसके कारण उनका जुड़ाव विद्यालय से नहीं हो पाता है। इस कारण से छात्रों के अभिरुचि का अभीष्ट विकास नहीं हो पाता। स्वयं के द्वारा समय का अनुपालन न करना भी एक बड़ी समस्या बन जाती है। इस प्रकार इन समस्याओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम बस एक दिखावे का कार्यक्रम भर रह गया है।

निष्कर्ष–

'विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम' की विशेषता एवं समस्याओं का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि इसमें व्यावहारिक समस्याएँ तो हैं परन्तु इसे दूर करके पाठ्यक्रम के अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। बी.एड. पाठ्यक्रम की कल्पना इसके बिना सम्भव नहीं है। यह कार्यक्रम सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का प्राणभूत तत्त्व है क्योंकि इसके द्वारा ही छात्राध्यापक को प्रथमतः शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को निकट से जानने का अवसर मिलता है। यह कार्यक्रम छात्र को अध्यापक बनाने के लिए मुख्य संस्कार की तरह है। छात्राध्यापक को अधिगम क्रिया तथा अधि गम अनुभव का ज्ञान यहीं से मिलता है। इस **'विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम'** को और अधिक परिणामी बनाने के लिए कुछ सुझाव हैं जो निम्नलिखित हैं-

1. बी.एड. कक्षा में प्रवेश के समय इनके विषय सम्बन्धित ज्ञानात्मक परीक्षण की प्रक्रिया का स्तर ऊँचा हो।

2. पाठयोजना के स्वरूप में समानता हो।
3. कक्षा में पढ़ाने के बाद निरीक्षक के द्वारा उल्लिखित सुझाव बिन्दु के आधार पर व्यावहारिक मूल्यांकन हो।
4. शिक्षण - सामग्री अनिवार्य तथा उसका मूल्यांकन भी हो।
5. संस्थान के द्वारा विद्यालय का प्रबन्धन अपने हाथ में लिया जाय।
6. शिक्षण में तकनीकी आधारित सामग्री का प्रयोग सुनिश्चित किया जाय।
7. छात्राध्यापक की उपस्थिति सुनिश्चित की जाय।
8. निरीक्षक की पूर्णकालिक शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित किया जाय।
9. विद्यालयीय वातावरण को सकारात्मक बनाया जाए।
10. छात्राध्यापकों का साप्ताहिक मूल्यांकन संस्था के द्वारा किया जाय।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- Curriculum Framework for Quality Teacher Education (1988) NCTE, New Delhi.
- National Curriculum Framework (2005) NCERT, New Delhi
- National Curriculum Framework for Teacher Education (2009) NCTE, New Delhi.
- NCTE Discussion Document, 2004
- Some Specific Issues and Concerns of Teacher Education, NCTE, 2003
- शुक्ला, डॉ. ग्रीष्मा (2009), अध्यापक शिक्षा की क्षेत्र प्रासङ्गिकता, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।

✦✦✦

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समस्याएँ एवं उनके समाधान

–डॉ. भारती कौशल

सहायक आचार्या (अनुबन्धित)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,

नई दिल्ली

सार

"भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षा कक्ष में होता है।" कोठारी आयोग की इस उक्ति के अनुसार किसी भी देश या राज्य की शिक्षा प्रणाली में उस देश की तस्वीर देखी जा सकती है। शिक्षा प्रणाली में अध्यापक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और मानदंड शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। अत: शिक्षा व्यवस्था को समयानुरूप बनाने से तत् राज्यों अथवा देश की अध्यापक शिक्षा सुदृढ़ करना महत्त्वपूर्ण माना है। यूनेस्को तथा एन.सी. ई.आर.टी. (भारत) दोनों का मानना है कि समय की माँग के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन अनिवार्य होता है। इसको ध्यान में रखते हुए एन.सी.टी.ई. ने अध्यापक शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाने के लिए भारत सरकार के गजट सितम्बर 2014 के अनुरूप अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या को संरचित करते हुए शिक्षण सत्र 2015 से द्विवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया। संसार के किसी कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने में कई व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वर्तमान पत्र में बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्पन्न होने वाली समस्याएँ व उनके समाधानों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया गया है।

भूमिका

शिक्षा मानवीय विकास का प्रारम्भिक बिन्दु है। किसी भी प्रगतिशील राष्ट्र में शिक्षा का मूल कर्तव्य है कि वह समाज में ऐसी विचार धारा को विकसित करे, जिससे देश में अराजकता, लिंग भेद, जातिवाद और क्षेत्रीयता की संकीर्णता को समाप्त किया जा सके। शिक्षा की उन्नति के लिए अच्छे अध्यापकों की आवश्यकता होती है। अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता केवल भौतिक संसाधनों को उपलब्ध कराने से ही नहीं आ सकती, जब तक मानवीय संसाधनों–प्रधानाचार्य, अध्यापक, शिक्षक एवं भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं में आदर्शवादी दृष्टिकोण को न विकसित किया जाए। 1963 में अध्यापक संघ द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में कहा गया था कि 'अच्छा अध्यापन अच्छे शिक्षक पर निर्भर है।' शिक्षक की गुणात्मक उन्नति करना हमारा लक्ष्य होना चाहिये।

शिक्षा मानवीय ज्ञान का आधार स्तम्भ है। इसे ज्ञान के विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। अत: शिक्षक शिक्षा संस्थानों की मानव व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक शिक्षा संस्था शैक्षणिक और समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से भावी शिक्षकों में कार्य दक्षता, कौशल और मूल्य को संगठित कर सकते हैं। परन्तु अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न चिह्न उठते रहे हैं। समय–समय पर गठित आयोगों/समितियों ने गुणवत्ता बढ़ाने हेतु अपनी सिफारिशें सरकार के समक्ष प्रस्तुत की हैं। अगस्त 2012 में जे.एस. वर्मा, समिति ने अध्यापक शिक्षक की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को दो वर्षीय करने की सिफारिश की। जिसके तहत राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् के द्वारा NCTE Regulation 2014 के अनुसार देश भर में बी.एड. और एम.एड को दो वर्षीय शैक्षणिक अवधि के साथ एक व्यावसायिक कोर्स के रूप में मान्यता दी गई है। बी.एड. और एम.एड. के लिए नवीन पाठ्यक्रम को नई सम्भावनाओं और प्राथमिकताओं के साथ क्रियान्वित किया गया है।

अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् द्वारा जारी दिशा निर्देशों में तीन विस्तृत क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया– आधारिक क्षेत्र, शिक्षणशास्त्र और इन्टर्नशिप एवं शिक्षण अभ्यास कार्य। सभी पाठ्यक्रमों में सैद्धान्तिक पक्ष के साथ क्षेत्र आधारित प्रायोगिक एवं परियोजना कार्य भी शामिल हैं। पाठ्यक्रमों का क्रियान्वयन विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से किया जायेगा। जैसे– व्यैक्तिक अध्ययन, समूह प्रस्तुतियाँ, चर्चा व समुदाय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरणों में बातचीत।

ऊपर कहे गये विचार नए मॉडल पाठ्यक्रम के कुछ अच्छे कदमों को दर्शाते हैं, लेकिन शिक्षण शिक्षा सामग्री का पुनर्गठन करने के लिए पाठ्यक्रम का एक मात्र परिवर्तन बाह्य हो सकता है तब तक जमीनी स्तर पर सुधार नहीं होता। इस नए पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन के उपरान्त अनेक दुविधाएं व समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की समस्याएँ

1. प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में ह्रास या कमी :

वर्तमान में बी.एड. कार्यक्रम की अवधि द्विवर्षीय हो जाने से प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की संख्या में न्यूनता आयी है। जिसका मुख्य कारण बी.एड. की फीस की अधिकता व समय अवधि का बढ़ जाना है।

2. प्रवेश के मानदण्डों में विविधता :

शिक्षक शिक्षा की बहुत सी समस्याओं में से एक समस्या प्रशिक्षण संस्थाओं के मानदण्डों में विविधता है। इसका कारण यह है कि प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रवेशार्थियों के चुनाव का आधार धन व सिफारिश है। ऐसी स्थिति में निम्न योग्यता वाले एवं शिक्षण में अभिरुचि न रखने वाले व्यक्तियों का चयन हो जाता है। द्विवर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण संस्थाओं में निम्न योग्यता के व्यक्तियों के प्रवेश के दो परिणाम देखने को मिलते हैं जिसमें प्रथम अनुशासनहीनता में वृद्धि और शिक्षा एवं शिक्षण के स्तरों में अधिक गिरावट।

3. प्रशिक्षण संस्थान में स्वयं के प्रयोगात्मक विद्यालयों का अभाव:

द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में शिक्षण अभ्यास की अवधि लगभग साढ़े पाँच माह से छः माह है जो शिक्षणाभ्यास के लिए उपयुक्त है जिसमें छात्रों में समुचित कौशलों का विकास किया जा सकता है। जिन विभागों के पास सम्बद्ध प्रयोगात्मक विद्यालय की उपस्थिति है वहाँ शिक्षण अभ्यास में कठिनाई नहीं आती है परन्तु जिन विभागों के पास स्वयं के सम्बद्ध प्रयोगात्मक विद्यालय नहीं है, वहाँ प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों को शैक्षिक प्रयोग एवं अध्यापन कार्यों में कठिनाई होगी।

4. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में समाहित आधुनिक विषयों के लिए अनुपयुक्त पाठ्यपुस्तके :

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी पुस्तकों का अभाव है। बाजार प्रायः प्रश्नोत्तर, सस्ते नोट्स आदि से भरा रहता है। पुस्तकें क्षेत्र के अनुभवी अध्यापक के द्वारा लिखी जायें।

5. अच्छी प्रयोगशालाओं का अभाव :

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रायोगिक कार्य को अधिक बल दिया गया है परन्तु अधिकांशतः संस्थाओं में वे सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। अगर प्रयोगशाला है भी तो उनमें उचित उपकरणों का अभाव है। उदाहरणार्थ- प्रश्न पत्र को पढ़ाने के लिए कक्षा में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की संख्या 50 से 60 है जबकि प्रयोगशाला में कम्प्यूटर की संख्या 10 से 15 है।

6. शैक्षिक विषयों के चयन में कठिनाई :

शिक्षा विभागों में छात्राध्यापकों को अध्यापन के विषयों का चयन सावधानी से करना चाहिए। प्रवेश के समय ही इस ओर ध्यान दिया जाये। कभी-कभी कुछ विद्यार्थी ऐसे विषयों का चयन कर लेते हैं जो उनके पास स्नातक में नहीं थे।

7. शिक्षणाभ्यास कक्षा-शिक्षण में छात्राध्यापकों की लापरवाही :

शिक्षणाभ्यास की समय अवधि अधिक होने की वजह से छात्राध्यापक इसमें लापरवाही बरतते हैं, वे खानापूर्ति करते हैं। पाठयोजनाओं की नकल करते हैं। बिना पाठयोजना पढ़ाएँ स्कूल के अध्यापकों से हस्ताक्षर करा लेते हैं।

8. अनुपयुक्त छात्राध्यापक - शिक्षक अनुपात :

दो सत्र के छात्रों शिक्षण व शिक्षणाभ्यास होने से छात्राध्यापक व शिक्षक के निश्चित अनुपात की स्थिति शोचनीय बन गयी है। क्योंकि नियुक्त अध्यापकों की संख्या कम रहती है। द्विवर्षीय कोर्स में अधिक कार्य होने के कारण कार्य विभाजन में कठिनाई होती है।

9. उचित निरीक्षण का अभाव -

छात्राध्यापकों के अध्यापन के समय निरीक्षक व विद्यालय अध्यापक निरीक्षण कार्य करते हैं। इसमें प्राय: लापरवाही बरती जाती है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। निरीक्षण पूर्ण हो। वह पूर्णतया वस्तुनिष्ठ हो। सुझाव वास्तविक तथा ठोस हों।

10. परीक्षाओं में सम्पादन और मूल्यांकन की समस्या :

अध्यापक शिक्षा की परीक्षा प्रणाली दोष पूर्ण होती जा रही है। प्रयोगात्मक कार्य के मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता का अभाव है। अंक प्राप्ति के लिए छात्र अध्यापकों की चापलूसी करने लगते हैं। कहीं-कहीं अध्यापकों में बदले की भावना पाई जाती है, उसका बुरा प्रभाव छात्राध्यापकों पर पड़ता है। कुछ प्राइवेट/निजी संस्थाओं में तो सैद्धान्तिक परीक्षाओं में भी लेन-देन तथा नकल का प्रावधान है जिससे दिन-प्रतिदिन अध्यापक शिक्षा के स्तर में गिरावट आती जा रही है। प्रयोगात्मक कार्य में बहुत ज्यादा अंक प्रदान कर दिए जाते हैं।

11. आर्थिक समस्याएँ :

द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम का प्रभाव छात्राध्यापकों व संस्थाओं दोनों के ही आर्थिक स्तर पर दृष्टिगत होता है जहाँ छात्र एक वर्ष के

उपरान्त जीविकोपार्जन हेतु आजीविका अर्जित करने लगते थे वहीं अब वह विद्यालय में नामांकन कराने के उपरान्त अंशकालिक व्यवसाय से जुड़ जाते हैं जिसका प्रभाव शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है।

12. सहयोग एवं सम्पर्क का अभाव :

स्कूलों तथा शिक्षा-विभागों में सम्पर्क की भारी कमी है। उनमें कोई साम्य नहीं है। उनके दृष्टिकोणों में भी बड़ा अन्तर पाया जाता है। शिक्षा-विभागों द्वारा अपनाई गई विधियाँ, प्रविधियाँ तथा सहायक सामग्री शिक्षा विभाग तक ही सीमित रह जाती है। स्कूलों में मुख्यत: पुरानी परम्परागत पुस्तक पाठन विधि का प्रचलन है। छात्राध्यापक शिकायत करते हैं कि उनके स्कूलों के अध्यापक (मेन्टर) इस कार्य में रुचि नहीं लेते हैं।

13. पाठ्यक्रम में अधिक पाठ्यवस्तु को समाहित करने की समस्या :

सैद्धान्तिक विषयों का शिक्षण करते समय देखा गया है कि जो पाठ्यवस्तु छात्र प्रत्येक प्रश्न पत्र में एक वर्ष में पढ़ते थे अब वह छ: माह में पढ़ाया जाता है। अधिकांशत: अध्यापक पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में लगे रहते हैं। अत: जो वास्तविक व व्यावहारिक ज्ञान छात्राध्यापकों को दिया जाना चाहिए वे उससे वंचित रह जाते हैं।

14. छात्राध्यापकों का नकारात्मक दृष्टिकोण :

द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम होने से छात्रों में नकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है, वे उन्हें भार स्वरूप लगती है। हमें इस दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए। अत: शिक्षा-विभाग के अध्यापकों को एक स्वस्थ व आशावादी दृष्टिकोण छात्राध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को उन्नत बनाने के सुझाव

1. विषय ज्ञान का पुन: स्थापन करना :

इसका अभिप्राय है कि छात्राध्यापक ने जो भी विषय अध्यापन

के लिए चुने हैं उनकी विषय वस्तु को दृढ़ कराने की ओर भी ध्यान दिया जाये। कोठारी आयोग ने सिफारिश की कि टाइम टेबल का 20 प्रतिशत समय इस कार्य को दिया जाए।

2. शिक्षणाभ्यास की अवधि को दो भागों में विभाजन :

छात्रों को प्रथम वर्ष में तीन माह के लिए विद्यालय भेजा जाये तदुपरान्त उनके समक्ष उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों का समाधान करते हुए उन्हें द्वितीय वर्ष में पुनः तीन माह के लिए शिक्षण अभ्यास कराया जाये।

3. प्रवेश के लिए निश्चित मानदण्डों का निर्धारण करना जो सभी विद्यार्थियों तथा संस्थाओं पर लागू हो।

4. सरकार द्वारा ठोस कदम उठाए जाएँ कि वह बी.एड. कराने वाले संस्थाओं को विद्यालय उपलब्ध कराएँ जिससे प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ठोस प्रकार से प्रशिक्षण प्राप्त करें।

5. पाठ्यक्रम फ्रेम करने से पूर्व यह जाँच लिया जाए कि उस विषय पर उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें हैं या नहीं। अगर पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं तो पहले संस्था व अनुभवी अध्यापकों द्वारा पाठ्यसामग्री का विकास कराया जाए ताकि पढ़ने और पढ़ाने वाले को कठिनाईयों का सामना न करना पड़े।

6. शिक्षण संस्थाओं में प्रयोगशाला के लिए समुचित साधन प्रदान किए जायें।

7. विभागीय अध्यापकों द्वारा समय-समय पर विषयों के चयन के लिए छात्राध्यापकों को सलाह प्रदान की जानी चाहिए। साथ ही प्रवेश के समय ही हैण्ड बुक दी जाए जिसमें प्रत्येक विषय को पढ़ने के उपरान्त उसकी उपयोगिता का वर्णन हो।

8. निश्चित अनुपात में अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।

9. अध्यापन में सुधार अच्छे निरीक्षण पर निर्भर करता है। निरीक्षकों का दृष्टिकोण व्यापक व वस्तुनिष्ठ होना चाहिए।

10. निरीक्षक को भी समय पर विद्यालय में उपस्थित होना चाहिए व विद्यालय अध्यापक के साथ सहयोग व सम्पर्क बनाकर रखना चाहिए।

11. सैद्धान्तिक परीक्षाओं का सम्पादन सावधानी से किया जाए ताकि छात्राध्यापक नकल न कर सकें।

12. प्रायोगिक परीक्षा में अत्यधिक अंक देने की प्रवृत्ति को रोका जाए। इसे रोकने का एक उपाय हो सकता है कि 80 प्रतिशत से अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों की एक कोमन पैनल द्वारा केन्द्रीय स्थान पर पुनः परीक्षा करायी जाए।

13. आर्थिक समस्या के समाधान हेतु या वित्तीय सहायता इन्टर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों को वित्तीय सुविधा प्रदान की जाए तथा सरकार व विभाग द्वारा जहाँ तक सम्भव हो अधिक से अधिक छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएं।

14. बी.एड. में पढ़ाए जाने वाले प्रत्येक पत्र में आवश्यक व महत्त्वपूर्ण विषयवस्तु को सम्मिलित करें व अनुपयोगी विषय वस्तु को उसमें से हटा दें।

15. अध्यापकों को एक स्वस्थ व आशावादी दृष्टिकोण छात्राध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहियें ताकि छात्राध्यापकों में सकारात्मक भाव पनपने लगें।

निष्कर्षः

निःसंदेह द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन है। पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में कुछ समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। प्रस्तुत पत्र में कुछ इसी प्रकार की समस्याएँ व उनके समाधान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इन समाधानों के द्वारा अध्यापक शिक्षा में सकारात्मक व समावेशित दृष्टिकोण से आत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान की भावना का विकास किया जा सकता है। सामुदायिक भावना का विकास होगा। अतः हम कह सकते

हैं कि अध्यापक शिक्षा के स्तर में सुधार व गुणवत्ता लाने के लिए बताये गए उपरोक्त तथ्यों पर ध्यान देना होगा तथा वर्तमान स्थिति को नियन्त्रित करने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे तभी हम द्विवर्षीय पाठ्यचर्या को ठीक प्रकार से क्रियान्वित कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. भट्टाचार्य जी.सी. (2015); अध्यापक शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
2. भट्टनागर, ए.बी. (2014); भारतीय शिक्षा प्रणाली : इतिहास विकास एवं तात्कालिक समस्याएँ, आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ
3. लाल, रमन बिहारी (2005); भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ
4. त्रिपाठी, विवेकनाथ (2015); अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रैल 2015. Garcha, S.P. (2014); Two year B.Ed. and M.Ed. : A new challenges paper published in a proceedings of seminar book transforming Teaching Education in Changing Scenario, ISBN No. 988-93-80748-85-6
6. Singh. P. (2015); Two year B.Ed. and Quality in Teaching Learning Process, Proceedings of Seminar book ISBN No. 978-93-85446-52-8 Page No. 345-347

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के मुख्य घटकों का विश्लेषण

–डॉ. रतनसिंह

सहायक प्रोफेसर

देहात विकास इंस्टिट्यूट ऑफ

एजूकेशन एण्ड टेक्नोलॉजी, तिगाँव, फरीदाबाद

अध्यापक समाज का निर्माण-कर्ता होता है और शैक्षणिक क्रियाकलापों के आयोजन का एक मुख्य साधन भी। शिक्षक छात्रों की उन्नति का मार्गदर्शक एवं चरित्र-निर्माण भी करता है। भारत जैसे-विशाल देश में अध्यापक को बहुत सम्मान दिया जाता है। शिक्षक छात्रों को जीवन की ऊँचाई की ओर अग्रसर करता है, शिक्षक को ईश्वर से बड़ा दर्जा प्राप्त है।

भारतीय समाज प्राचीनकाल से ही शिक्षक प्रधान है, भारतीय समाज शरीर, मन और आत्मा को एक विकास का साधन मानता है, तो शिक्षक को समाज का जिम्मेदार व्यक्ति।

ऐसा माना जाता है कि यदि जीवन में शिक्षक नहीं तो "शिक्षण" संभव नहीं। शिक्षा का केन्द्रीय घटक छात्र होता है और मार्गदर्शक शिक्षक होता है।

लेकिन आज परिवर्तन हो रहा है, समाज के सभी घटक जैसे-विचार, मूल्य, व्यक्ति, संस्कृति, समुदाय इत्यादि सभी परिवर्तन से अछूते नहीं हैं। परिवर्तन शिक्षा को भी प्रभावित कर चुका है। सभी बदलते परिवर्तन के साथ बदलते जा रहे हैं, छात्र शिक्षक भी इस परिवर्तन से बच नहीं सके, अतः शिक्षक को शिक्षा के प्रति समाज के अनुरूप बदलना होगा और इन परिवर्तनों का ज्ञान शिक्षक को प्राप्त करना होगा।

देश के प्रगति में शिक्षा सर्वोपरि है। देश की उन्नति में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। आज के युग में कोई भी देश शिक्षकों के व्यावसायिक उत्थान में पीछे नहीं है। अतः किसी भी देश का कर्तव्य है कि वह अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखे। लेकिन आज बदलते परिवेश में परम्पराओं के कारण अध्यापक शिक्षा आज पुरानी विषय-वस्तु सिद्धान्त एवं परम्पराओं पर आधारित है।

पाठ्यक्रम के प्रकार

पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं:-

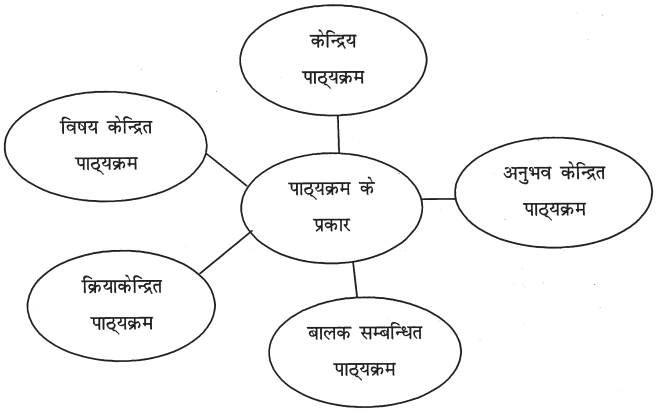

पाठ्यक्रम प्रारूप : सैद्धान्तिक क्षेत्र

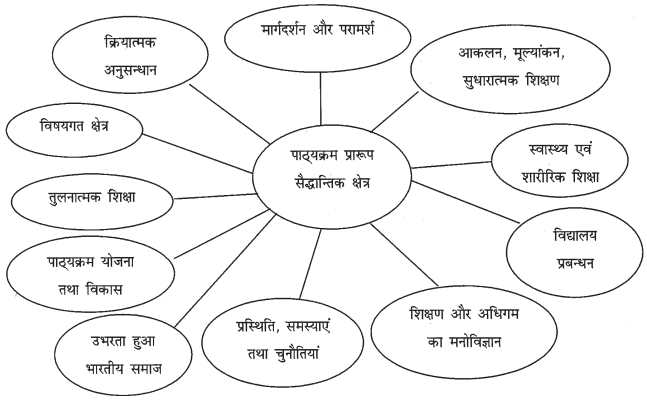

अध्यापक शिक्षा का वर्तमान पाठ्यक्रम व्यावसायिक कौशल पर अधिक बल देता है और शिक्षण-विधियों तक सीमित है। इसमें शिक्षक के व्यक्तित्व के विकास के लिए कम स्थान है। अत: शिक्षक अपने नये विचारों को जन्म न देकर शिक्षकों विचारों का उपभोक्ता बन जाता है पाठ्यक्रम अध्यापक को उन्नति व गुणवत्ता की ओर अग्रसर करता है। जिससे छात्र शिक्षक के गुणों तथा विचारों का अनुसरण कर सके और राष्ट्रहित में अपना स्थान प्राप्त कर सके तथा अपना पूर्ण विकास कर सके।

वैकल्पिक विषय

निम्नलिखित में से कोई दो :

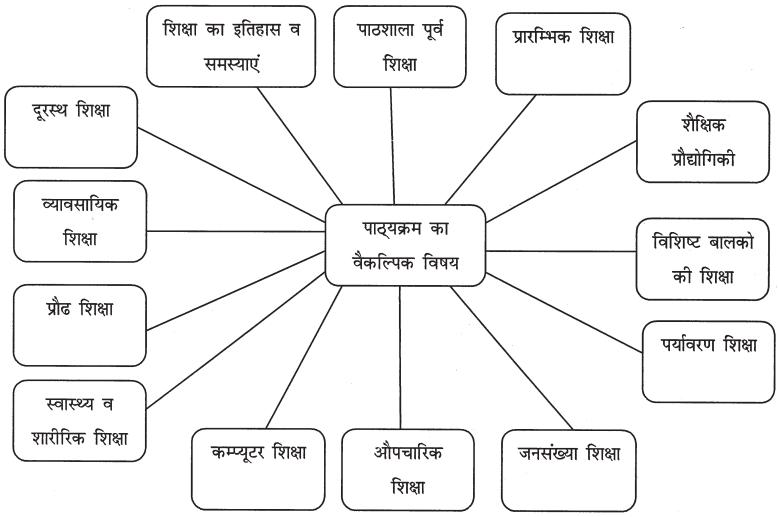

बी.एड. शिक्षा कार्यक्रम में छात्राध्यापक को वैकल्पिक विषय के रूप में कोई दो विषय चुनने का अवसर दिया जाना चाहिए। जिससे छात्राध्यापक अपने योग्यता अनुसार वैकल्पिक विषय चुनकर अपनी क्षमता अनुरूप अध्ययन कर शिक्षा प्राप्त कर सके।

पाठ्यक्रम अध्यापन अभ्यास

- विद्यालय अनुभव के लिए विद्यालय सम्बद्ध कार्य
- विद्यालय में अध्यापन अभ्यास
- शारीरिक शिक्षा, खेल-कूद, अन्य विद्यालयी गतिविधियाँ
- सौन्दर्यात्मक विकास सम्बन्धित कार्यक्रम तथा गतिविधियाँ
- कार्य शिक्षा
- दो विद्यालयी विषयों का शिक्षा-शास्त्रीय विश्लेषण
- मॉडल पाठों का अवलोकन
- समुदाय आधारित कार्यक्रमों सहित क्षेत्रीय कार्य
- क्रियात्मक अनुसन्धान
- प्रायोगिक कार्य
- सृजनात्मकता तथा व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम

शिक्षा में स्नातक (बी.एड.) स्तर पर अब पाठ्यक्रम दो वर्ष का हो चुका है। अब पाठ्यक्रम में नया प्रारूप जोड़ दिया गया है। अब नये पाठ्यक्रम पर विचार करके एवं सुधार व संशोधन करके नया पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है। जिसमें छात्रों को व्यावसायिक तथा कौशलों से परिपूर्ण पाठ्यक्रमों की प्राप्ति होगी। नये प्रारूप में "क्रियात्मक अनुसन्धान" को भी सम्मिलित किया गया है।

शिक्षण शास्त्रीय विश्लेषण को अध्यापन अभ्यास के विषयों में अनिवार्य कर दिया गया है। जिससे छात्राध्यापक को नई प्रणाली प्रदान की जा सके तथा शिक्षक स्वयं स्वाध्ययन कर अपने विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर सके।

पाठ्यक्रम के आधार

पाठ्यचर्या के चार आधार हैं जो इस प्रकार है:-

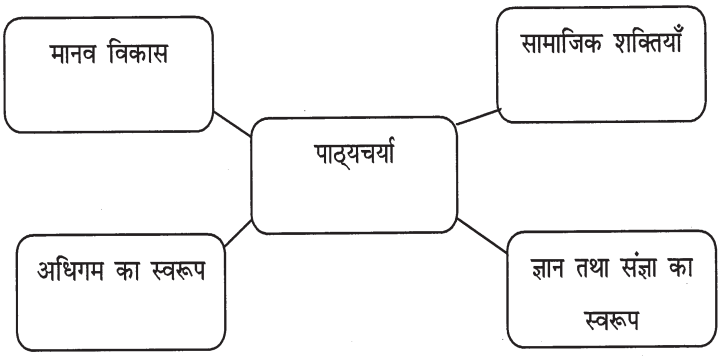

पाठ्यचर्या की प्रक्रिया तथा इसके सोपान

इस प्रक्रिया को पांच सोपानों में इस प्रकार बांटा गया है:-

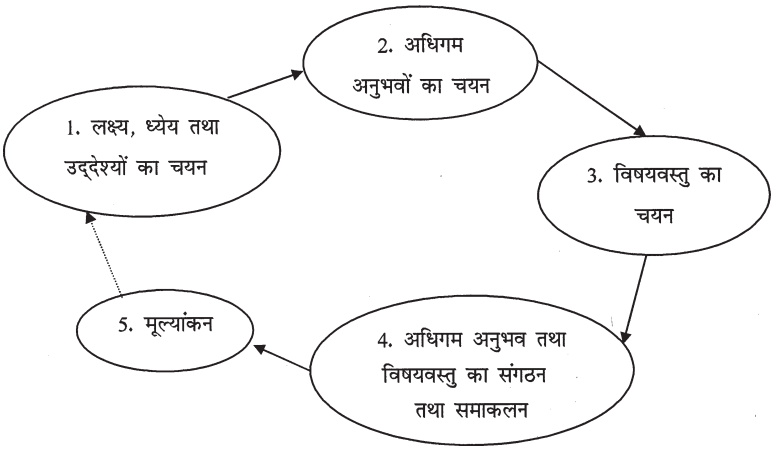

पाठ्यक्रम-प्रक्रिया

विद्यालय एवम् शिक्षा की समस्या पर विचारगोष्ठी -

बी.एड. के छात्रों को अग्रिम समस्याओं से अवगत कराकर छात्रों को आगे चलकर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आने वाली समस्या से परिचय कराना तथा राष्ट्र में शिक्षा की समस्याओं से परिचित कराना

और अपनी व्यावसायिक समस्या के लिए विचारगोष्ठी एवं चर्चाएँ की जानी चाहिए। अत: आज यह सर्वमान्य सत्य है कि छात्राध्यापकों को दो-चार गोष्ठियां करायी जायें जिससे वे विद्यालय एवं शिक्षा की समस्याओं का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी आलोचनायें -

- आज. बी.एड. और एम.एड. के पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक विषयों की संख्या पुरानी है।
- आज एम.एड. के पाठ्यक्रम की पुस्तकें बाजार में पूर्ण रूप से मिल नहीं पाती।
- एम.एड. का पाठ्यक्रम अलग-अलग विश्वविद्यालयों की पुस्तकों को एकत्रित करके प्राप्त किया जाता है।
- आज बी.एड. एवं एम.एड. के सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्रों में पाठ्यवस्तु की अधिकता है।
- आज अध्यापक पाठ्यक्रम तैयार करने में असमर्थता महसूस करता है।
- आज के पाठ्यक्रम सैद्धान्तिक ज्यादा हे, व्यावसायिक एवं कौशलात्मक कम।
- आज के पाठ्यक्रम में व्याख्यानों की कमी है।
- छात्रों की आवश्यकताओं का ध्यान नहीं।
- आज का पाठ्यक्रम परीक्षा प्रणाली को अधिक महत्त्व देता है।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं की उपेक्षा।

अत: कहा जा सकता है कि हमारे पाठ्यक्रम में अनेकों प्रकार की कमियाँ हैं। जो हमें तथा हमारी शिक्षा को प्रभावित करती हैं आज पाठ्यक्रम की कमियों पर विचार करने की जरूरत है, आज UGC, NCTE, NCERT पाठ्यक्रम की कमियों को दूर करने का प्रयास कर रही हैं।

सुझाव

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आज हमें पाठ्यक्रम में परिवर्तन करने की आवश्यकता है अगर पाठ्यक्रम में परिवर्तन होगा तो हमारी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगा। आज का शिक्षार्थी अपने शिक्षण में व्यवसाय को अपना रहा है क्योंकि आगे चलकर उसे अपनी आजीविका के लिए कोई माध्यम चाहिए जो वह व्यावसायिक शिक्षण द्वारा प्राप्त करेगा। यदि आज हमारे पाठ्यक्रम में व्यावसायिक-शिक्षण को सम्मिलित किया जाएगा तो सम्भवत: आज हर शिक्षार्थी आगे चलकर अपने जीवन में आने वाली आर्थिक स्थिति से सामना कर सकेगा।

नये सुझाव इस प्रकार हैं :-

- दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग।
- नवीन अनुसन्धानों की जानकारी।
- छात्राध्यापकों को गोष्ठियों, सेमिनारों में भाग लेने देना।
- पाठ्यक्रम व्यावसायिक होना।
- पाठ्य-सहगामी कार्यक्रमों की उपयोगिता।
- वांछित कौशलो का पुनर्जागरण।
- वांछित दृष्टिकोण का विकास।
- सृजनात्मकताओं का पाठ्यक्रम में स्थान।
- सूक्ष्म-शिक्षण को अधिक महत्त्व देना।
- राष्ट्रीय एकीकृत पाठ्यक्रम तैयार किया जाए।
- लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास किया जाए।
- राष्ट्रीय एकता, सामाजिक एकता, अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध को बढ़ावा दिया जाए।
- विषयों से सम्बन्धित कम्प्यूटर प्रोग्राम बनवाया जाए।
- पाठ्यक्रम छात्रों को लक्ष्य की ओर अग्रसर करे।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह तभी सम्भव होगा, जब हम और हमारी सरकार अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए देशहित में अपना योगदान दें। हमारे देश में हो रहे सेमिनारों, विचार-गोष्ठियों में पाठ्यक्रम समस्या पर पूर्णरूप से विचार किया जाए और बदलते परिवेश में शिक्षण-विधियों, पाठ्यक्रमों में सुधार करके गुणवत्ता को बढ़ावा दिया जाए।

सन्दर्भ

1. सिंह, डॉ. दया शंकर, 2003, "अध्यापक शिक्षा गुणात्मक विकास", अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
2. सक्सैना, मिश्रा, मोहन्ती, 2008, "अध्यापक शिक्षा", आर.लाल बुक डिपो।

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास

–सनत कुमार झा

शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र विभाग)

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्

नव देहली

सीखने की प्रक्रिया मनुष्यों के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विकास क्रम का एक निर्धारक तत्त्व है, शिक्षा के ध्येय को मूलतः ज्ञात के प्रसार एवं अज्ञात के प्रति अनुसन्धानात्मक अभिरुचि के विकास में समाहित किया जा सकता है, बीसवीं सदी तक के सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास की गति इतनी तीव्र नहीं थी कि पारम्परिक शिक्षक की प्रणालियाँ और व्यवस्थाएँ उसे संभाल न सके परन्तु इक्कीसवीं सदी ने कुछ युगान्तरकारी परिवर्तनों से अपनी यात्रा आरम्भ की है।

पहला बड़ा परिवर्तन कम्प्यूटर का आगमन है जिसने एक तरफ तो ज्ञान की एक पूरी शाखा का विकास करके ज्ञात की सीमाओं को बढ़ा दिया है और शिक्षकों का भार 'न्यूनतम समय में आधुनिकतम प्रणालियों की उपयोगी क्षमता के विकास की आवश्यकता' के साथ बढ़ गया है। कहना न होगा कि सिखाने और सीखने की गतिवृद्धि के लिए अत्यन्त कारगर उपाय के रूप में कम्प्यूटर स्लाइड शो, फ्लैश फिल्मों आदि के साथ अनिवार्य होता जा रहा है।

दूसरा बड़ा परिवर्तन तथ्यों और संदेशों के महासमुद्र में खोज और अभिव्यक्ति की सेवा देने वाली साइटों का आगमन है। गूगल और फेसबुक मानवीय मस्तिष्क की तथ्यात्मक समृद्धि को अनावश्यक और अतीत की बात बनाने में जुटे हैं। ऐसा लगने लगा है कि छात्रों को

आंकड़े और अन्य वस्तुनिष्ठ तथ्यों के लिए स्मृति पर निर्भर कराना स्मरण शक्ति का दुरुपयोग बनता जा रहा है। ज्ञान का विस्फोट का उपादान बनाकर प्रकट हुआ है। कोई भी शिक्षण प्रणाली उससे विरक्त रहकर समय के साथ नहीं चल सकती।

तीसरा बड़ा और भविष्योन्मुख परिवर्तन अत्याधुनिक तकनीक और विचारधाराओं के साथ विश्व की एकीकृत सामाजिक स्थिति है। इतिहास परिप्रेक्ष्य के साथ बदल जाता है और 'ग्लोबल विलेज' में अन्तर्राष्ट्रीय भावनाओं के साथ वस्तुनिष्ठ चिन्तन का विकास आवश्यक हो गया है। कहना न होगा कि शिक्षकों का समुदाय अब ज्ञान की खिड़की नहीं रह गया है। छात्रों के पास ज्ञान के अन्य बेहद विकसित और समर्थ स्त्रोत उपलब्ध हो गए हैं और शिक्षण में एटीट्यूड, तर्क विकास और मानवीय गुणों का बीजारोपण अधिक महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं। नवाचार परिवर्तन की इसी आवश्यकता पर केन्द्रित विचारधारा है जो कई अर्थों में प्रकट होती है। मानव संसाधन के विकास की आवश्यकता नवाचार को कभी रचनात्मकता के निर्माण के अर्थ देती है तो कभी शिक्षण पद्धति में रचनात्मक अवदानों के उपयोग की।

शिक्षा में नवाचार

प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन, प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। परिवर्तन एक जीवन्त, गतिशील और आवश्यक क्रिया है जो समाज को वर्तमान व्यवसाय के अनुकूल बनाती है। परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं। इन्हीं परिवर्तनों से व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतना, ऊर्जा एवं नवीनता की उपलब्धि होती है।

परिवर्तन के सम्बन्ध में शिक्षाविद् किलपैट्रिक की स्पष्ट अवधारणा है–

'परिवर्तन विचाराधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए।'

इस प्रकार परिवर्तन की प्रक्रिया विकासवादी (Evolutionary), संतुलनात्मक (Horeostatic) एवं नवगत्यात्मक (Heomobilistice) परिवर्तन से जुड़ी होती है। परिवर्तन एवं नवाचार एक दूसरे के अन्योन्याश्रित है। परिवर्तन समाज की माँग की स्वाभाविक प्रक्रिया से जुड़ा तथ्य है। इसलिए परिवर्तन, नवाचार और शिक्षा का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट है-

'नवाचार कोई नया कार्य करना ही मात्र नहीं है, वरन् किसी भी कार्य को नये तरीके से करना भी नवाचार है।'

नवाचार का शिक्षा पर प्रभाव

व्यक्ति एवं समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकूल बनाने के लिए शैक्षिक क्रियाकलापों में नूतन प्रवृत्तियों ने अपनी उपयोगिता स्वयंसिद्ध कर दी है।

ट्रायटेन के अनुसार- 'शैक्षिक नवाचारों का उद्‌भव स्वतः नहीं होता वरन् इन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढंग से इन्हें प्रयोग में लाना होता है, ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाये रख सकें।'

इस प्रकार 'नवाचार एक विचार है, एक व्यवहार है अथवा वस्तु है, जो नवीन और वर्तमान का गुणात्मक स्वरूप है।'

अध्यापकों के लिए नवाचार या नवाचारी शिक्षा

शिक्षा को जीवन्त और समायानुकूल बनाने के लिए उसकी विषयवस्तु एवं शिक्षण प्रविधियों में नवीनता लाना आवश्यक है। नवाचार का अर्थ ऐसे परिवर्तन से है जो पूर्व स्थापित विधियाँ, कार्यक्रमों एवं परम्पराओं का समावेश करता है। शैक्षिक नवाचारों की कोई सीमा नहीं है। मूल्यांकन के क्षेत्र में भी नवाचार हुआ जैसे रटने की पद्धति को खत्म करना, सेमेस्टर प्रणाली लागू करना, ग्रेडिंग प्रणाली आदि। शिक्षक डायरी भी नवाचार का ही प्रयोग है जिसमें संकेतक लिखकर छात्रों का अधिगम मूल्यांकन किया जाता है।

नवाचारों का प्रयोग करके सिखाने की प्रक्रिया में गतिशीलता लायी जा रही है। इस दृष्टि से विद्यालयों में Learning Corner, दीवार समाचार, पुस्तकालय, बाल अखबार प्रकाशन आदि।

प्रार्थना स्थल पर छात्रों द्वारा सद्विचार, प्रेरक प्रसंग, मुख्य समाचार वाचन भी इन शैक्षिक नवाचारों के उदाहरण है।

कक्षा-कक्ष में नवाचार का प्रयोग

कक्षा-कक्ष में परिवर्तन करने के लिए भी नवाचार कराये जा सकते हैं। जैसे-

1. समय समय पर कक्षा कक्ष में लगे चार्ट और चित्रों को बदलवाकर कक्षा सज्जा करवाना।
2. Learning Corner में समय में परिवर्तन करके और छात्रों द्वारा बनायी TLM को महत्त्व दिया जाय।
3. Rotation System सभी छात्रों को बारी बारी से पंक्ति में बैठने के अवसर देना।
4. बच्चों को अपनी इच्छानुसार कभी कभी लिखने व कला बनाने का अवसर देना।
5. निष्प्रयोजन वस्तुओं से Craft या Project तैयार करवाना।
6. कहानियाँ, गीतों, गतिविधियों को पाठ्य विषयों में सम्बन्धित करना।
7. विज्ञान के छोटे छोटे प्रयोग कक्षा-कक्ष में करवाना।
8. बच्चों को Learning by Self का अवसर देना।
9. सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, कला प्रतियोगिता, विज्ञान प्रतियोगिता, व्याकरण प्रतियोगिता का आयोजन करना।
10. तेज व धीमी गति से सीखने वाले बच्चों का Group बनाकर Educational Suport देना।

11. अभिनय या नाटक का प्रयोग विषयवस्तु को समझने के लिए किया जा सकता है।

12. गणित प्रयोगशाला का निर्माण जिसमें छात्रों व शिक्षकों के सहयोग से बनी चीजों, आकृतियों, सिक्के, गोली, सूत्र पट्टिका, इससे रटने की बजाय समझ विकसित होने में मदद मिलेगी।

निष्कर्षत: शिक्षा के बदलते हुए परिस्थिति के अनुसार अध्यापक को शिक्षा में नवाचार का प्रयोग बढ़-चढ़कर करना ही श्रेयस्कर है। शिक्षा को सुगम बनाने के लिए नवाचार का प्रयोग करना अत्यन्त लाभदायक है।

सन्दर्भग्रंथ–

- चौबे, आर.के. (2014), शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियाँ, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर
- पाण्डेय, डॉ. के.पी. (1998), शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- भट्टाचार्य, जी.सी. (2010), अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
- मंगल एस.के एवं उमा; शिक्षण तकनीकी, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
- शर्मा, डॉ. एस.आर. (2011), भाषा शिक्षण, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शर्मा आर.ए. (1994), शिक्षा तकनीकी, लॉयल बुक डिपो, मेरठ

✦✦✦

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम की गुणवत्ता विकास हेतु उपाय

–यासमीन अशरफ

शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
नव देहली

अध्यापक शिक्षा

शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, जिसको केवल किसी कौशल या कार्य संपादन तक सिमित नहीं किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति में विद्यमान आंतरिक क्षमताओं का विकास सम्पूर्ण रुप से करने के साथ ही वैयक्तिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय सन्दर्भ में उपयोगी तथा संसाधन संपन्न व्यक्तित्व के निर्माण के लिए प्रयत्न किया जाता है।

मात्र शिक्षा के माध्यम से ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर पाना संभव है जो वातावरण एवं मूल्यों के संरक्षण के साथ ही अनुकूल परिवेश के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। अतएव कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तर के अध्यापकों को इस प्रकार से शिक्षित करने का प्रयत्न किया जाता है कि ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तांतरण के साथ ही अध्यापकों के समस्त शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में वे सक्षम हो सकें।

इस प्रकार अध्यापक शिक्षा मात्र एक कार्यक्रम ही नहीं है बल्कि एक ऐसा आयोजन है जिसके द्वारा राष्ट्रीय सन्दर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्ति को शिक्षित किया जा सके। शिक्षा को सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के माध्यम के साथ ही सामाजिक परिवर्तन का कारक भी माना जाता है, अत: अध्यापक शिक्षा सामाजिक शैक्षिक मार्गदर्शन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सक्षम अभिकरण है। आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम में पर्याप्त लचीलापन होना ज़रूरी माना जा रहा है, क्योंकि सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य में आज तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है। अत: एक नवचारिक प्रणाली के रूप में अध्यापक शिक्षा का महत्त्व आज भी बहुत है। जिसके माध्यम से सेवापूर्व तथा सेवाकालीन दोनों ही स्तरों पर सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक नवचारिक शैक्षिक परिवर्तनों को स्थापित करना संभव हो सके।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम बन चुका है जिसकी सहायता से विद्यालयी शिक्षा का संबंधीकरण उच्च शिक्षा के साथ किया जा सकता है। भावी अध्यापकों के सामाजी कारण की दिशा में सहयोगी परिणामोन्मुख साबित हो सकता है इस प्रकार हम विभिन्न दृष्टिकोण पर विचार करते हुए आधुनिक अध्यापक शिक्षा को एक महत्वपूर्ण आयोजन के रूप में प्रतिष्ठित एवं अध्यापक शिक्षा को विद्यालयी व्यवस्था की उभरती हुई मांगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। उसे शिक्षकों को इस प्रकार तैयार करना चाहिए कि वे अपनी भूमिका निभाएं तथा अध्यापक शिक्षण में ऐसे तत्व समाहित हो जो विद्यार्थी शिक्षक को निम्न दिशाओं में सक्षम बनाएं–

- ✓ सीखना किस प्रकार का होता है इसकी समझ उसमें हो और वह उसके अनुकूल माहौल बनाये।
- ✓ ऐसे उपयुक्त क्षमताओं का विकास वह कर सके जिससे वास्तविक स्थितियों में उसकी न केवल समझ हो, बल्कि वह उनकी रचना भी कर सके।

- ✓ ऐसे उपयुक्त क्षमताओं का विकास वह कर सके जिससे वास्तविक स्थितियों में उसको न केवल समझ हो बल्कि वह उनकी रचना भी कर सके।
- ✓ अपनी आकान्क्षाओं, स्वबोध क्षमताओं और रुझानों को पहचाने।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा के सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- आधुनिक ज्ञान और अधिगम सम्बन्धी सिद्धांतों के सन्दर्भ में विषयगत शिक्षण सम्बन्धी दक्षता का प्रशिक्षु अध्यापकों में विकास करना।
- उनमें छात्रों के सर्वांगीण विकास और मार्गदर्शन हेतु अवबोध, रूचि, अभिवृत्ति एवं संबन्धित कौशलों को विकसित करना।
- प्रजातांत्रिक सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु भारतीय पृष्ठभूमि में शैक्षिक उद्देश्य तथा लक्ष्यों के प्रति अवबोध उत्पन्न करना ताकि वे विद्यालय के साथ ही इस दिशा में अध्यापकीय भूमिका को ठीक से समझ सकें।
- उनमें उद्यमगत चेतना का विकास करना ताकि आगे चलकर सम्बन्धित अपेक्षाओं की पूर्ति एवं दायित्वों का निर्वाह करना सम्भव हो सके।

विशिष्ट उद्देश्य–

- अध्यापक शिक्षा के माध्यम से छात्र अध्यापकों में अधिगमकर्ता, अधिगमक्रिया, अधिगम संदर्भित तथा वैयक्तिक समस्याएँ, विद्यालय संगठन तथा प्रशासन, मूल्याङ्कन, तकनीकी विकासात्मक समस्याएँ एवं सामजिक अंतर्क्रियात्मक सम्बन्ध आदि के बारे में ज्ञान तथा अवबोध विकसित करना।
- उनमें कुशल एवं प्रभावी सम्प्रेषण क्षमता, पाठ्यसहगामी क्रिया का आयोजन, सरल मूल्याङ्कन, माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों कि

पूर्ति के लिए उपयुक्त कार्यक्रम तथा पाठ्यक्रम आधारित क्रियाओं का आयोजन दक्षता के साथ ही विभिन्न शिक्षण विधियों के प्रयोग सम्बन्धी कुशलताओं का विकास करना।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) में अध्यापक शिक्षा

इस आयोग की रिपोर्ट में अध्यापक शिक्षा के विषय में कहा गया है कि उनका निर्धारण करते समय सही अध्यापक के निर्माण पर बल दिया जाए। एक सही अध्यापक वह होता है जिसमें अपने कार्य-लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट जागरूकता हो। न केवल अपने विषय का प्रेमी हो बल्कि उसके लिए वे भी प्रिय हों जिन्हें वह पढ़ाता हो। उसकी सफलता का आंकलन न केवल ज्ञान के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गए योगदान से ही हो सकता है और न केवल उत्तीर्ण प्रतिशत के आधार पर किया जा सकता है।

कोठारी आयोग (1964-66) में अध्यापक शिक्षा

शिक्षा आयोग अथवा कोठारी आयोग ने अध्यापक शिक्षा कि गुणवत्ता के उन्नयन के सम्बन्ध में प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि विषयज्ञान के पुनर्विन्यास के साथ ही इसके लिए उद्यमगत अध्ययन और शोधकार्यों को पुनर्जीवन प्रदान करना, शिक्षण और मूल्याङ्कन सम्बन्धी प्रणालियों में स्तरोन्नयन करना, छात्र शिक्षण या शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम को सुधारना, विशिष्ट पाठ्यक्रम तथा कार्यक्रमों को विकसित करना तथा समय-समय पर अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में सुधार करना और उन्नयन सम्भावना आदि को बनाए रखना, अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता स्तर को उन्नत एवं आधुनिक बनाए रखने के लिए अपरिहार्य है।

वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनेकानेक समस्याएँ विद्यमान है तथा नित्य नवीन चुनौतियाँ उभर रही हैं। इसके पीछे अनेक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक कारण निहित हैं। प्रत्येक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का मूलभूत लक्ष्य उत्तम अध्यापक एवं अध्यापकों की तैयारी को

सुनिश्चित करना है जिनमें गुणात्मक स्तर उच्च हो तथा जो समाज एवं समुदाय के लिए दिशा-निर्देश के रुप में कार्य करने के रुप में सदैव सक्षम हो।

विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम : परिवर्तित परिदृश्य

पिछले कुछ सालों में भारत में स्कूल इंटर्नशिप पाठ्यक्रमों की अवधारणा में एक आदर्श बदलाव आया है। अभ्यास-शिक्षण की पहले की शर्त में एक छात्र-शिक्षक द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों में अध्यापन के पूर्व-निर्धारित पाठसंख्याओं को सिखाने के लिए शिक्षण या विधियों को विषयों के रूप में शामिल किया गया था। एन.सी.टी.ई विनियम, 2009 ने छात्र-शिक्षकों को स्कूल की सभी गतिविधियों और कार्यक्रमों का अनुभव प्रदान करने के महत्व पर बल देकर अभ्यास-शिक्षण के दायरे को व्यापक बनाने का प्रयास किया।

एन.सी.टी.ई. विनियम, 2014 ने 'डी.एल.ई.एड.', बी.एल.एड, बी.एड. जैसे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में इसके लिए 20 सप्ताह की लंबी अवधि निर्धारित करके 'क्षेत्र-व्यवसाय' के घटक को और मजबूत करने की घोषणा की है। D.E1.Ed., B.E1.Ed, B.Ed., B.A.B.Ed., and B.Sc. B.Ed. and B.Ed.-M.Ed.20 सप्ताह के 'क्षेत्र व्यवसाय' को दो-सालों के कार्यक्रमों के पहले वर्ष में 4 सप्ताह और दूसरे वर्ष में 16 सप्ताह का आयोजन करने वाले दो भागों में विभाजित किया गया है। इसके अलावा, कुल इंटर्नशिप समय दो प्रकार के स्कूलों के बीच विभाजित किया जाना है, 80% और 20% की दर से।

स्कूल इंटर्नशिप की अवधि के संबंध में एन.सी.टी.ई.विनियम, 2014 की प्रासंगिक शर्तों को संक्षेप में दिया गया है

Bachelor of Education (B.Ed.)

S.No		1st Year	2nd Year	Total
1.	Internship Duration	2 weeks (2nd Sem)	18 weeks (3rd Sem)	20 weeks

2.	Total Programme Credit	40	40	80
3.	Internship Credits	4	16(14+2)	20
4.	Total Marks assigned	1000	1000	2000
5.	Marks assigned for Internship	100	400	500
6.	Weightage in terms of Credits	10%	40%	25%
7.	Weightage of Intership in terms of marks	10%	40%	25%

ऊपर दी गई सारणी बताती हैं कि कार्यक्रम डिजाइन के केंद्र चरण में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम की बड़ी हुई अवधि और बढ़ाव वाले भार, स्कूल इंटर्नशिप और 'क्षेत्र व्यवसाय' घटक के कारण अकेले इस घटक को लगभग 25% महत्त्व दिया गया है। यह उम्मीद है कि 'इंटर्नशिप' पूरा होने के बाद, प्रशिक्षु शिक्षक स्वतंत्र रूप से एक शिक्षक की जिम्मेदारियों को उठाने के लिए तैयार होगा। इंटर्नशिप की बढ़ी अवधि का मतलब है कि धन, समय और प्रयासों के संदर्भ में संसाधनों की जबरदस्त राशि की आवश्यकता होगी और इसलिए उन्हें इंटर्नशिप के सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए एक योजनाबद्ध और व्यवस्थित तरीके से उपयोग करना होगा।

अपेक्षित परिणामों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए, इंटर्नशिप की योजना और संगठन नीचे दिये गए सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए।

इंटर्नशिप का आयोजन : कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत

- शिक्षक तैयारी : एन.सी.टी.ई, राज्यशिक्षाविभागों, स्कूलों, संबद्ध संगठनों की संयुक्त जिम्मेदारी
- टी.इ.आई और स्कूलों द्वारा प्रदर्शन आकलन
- पूर्णकालिक शिक्षकों के रूप में प्रशिक्षु शिक्षक

- प्रशिक्षक और शिक्षकों के रूप में इच्छुक इंटर्नशिप स्कूल शिक्षक
- विभिन्न संदर्भों में स्कूल अनुभव 80% सरकारी स्कूलों, 20% गैरसरकारी स्कूलों
- लैब स्कूलों के रूप में इंटर्नशिप स्कूल

(क) जबकि इंटर्नशिप को नामित स्कूलों में छात्र-शिक्षक द्वारा रखा जाएगा, बाकी चार हफ्ते दूसरे सेमेस्टर में फैले हुए होंगे और स्कूल की यात्रा, कक्षा अवलोकन, व्यक्तिगत और समूह असाइनमेंट जैसी गतिविधियों को शामिल किया जाएगा। 16 सप्ताह पूर्णकालिक स्कूल इंटर्नशिप में से दो सप्ताह सामुदायिक काम के लिए होंगे और शेष अभ्यास और सभी स्कूल-आधारित गतिविधियों के बीच समान रूप से विभाजित होंगे।

(ख) स्कूल से प्रिंसिपल और संरक्षक शिक्षकों के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण के तहत इंटर्नशिप के दौरान छात्र-शिक्षकों/प्रशिक्षु-शिक्षकों को पूर्णकालिक शिक्षक के रूप में काम करने के लिए बुलाया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उन्हें ऐसे भी कार्य करने की आवश्यकता होनी चाहिए जैसे स्कूल के नियमित शिक्षकों द्वारा किया जाता है। इसके अलावा, उन्हें स्कूली पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों और स्कूल की गतिविधियों से बाहर स्कूल की सभी गतिविधियों का निरीक्षण, भाग लेने और योगदान करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

(ग) 'इंटर्नशिप स्कूल' के कुछ सक्षम और इच्छुक शिक्षकों को "मैंटरशिक्षक" के रूप में नामित किया जा सकता है एक शैक्षणिक सत्र में, 3-4 छात्र-शिक्षकों को उनके विषय की विशेषज्ञता को ध्यान में रखते हुए गुरु-शिक्षक के साथ संलग्न किया जा सकता है। ज्ञात शिक्षक-शिक्षकों को, जो शिक्षक के विस्तारित शिक्षक शिक्षा संकाय के सदस्यों के रूप में माना जा सकता है, उन्हें संसाधनों की बर्बादी से बचने के लिए एक

संरक्षक शिक्षक की जिम्मेदारियों को गहन अभिविन्यास प्रदान किया जाएगा। गुरु-शिक्षकों के कार्यकाल की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए यह वांछनीय होगा।

(घ) आमतौर पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी/निजी स्कूलों जैसे विभिन्न संदर्भों में अपने प्रोफेशनल कैरियर के दौरान काम करने के लिए अधिकांश शिक्षक बोलते हैं। शहरी, ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्थित स्कूलों में इंटर्नशिप पूरा करके विभिन्न संदर्भों में काम करने का अनुभव हासिल करने के लिए छात्र-शिक्षक को अवसर प्रदान करना वांछनीय होगा। यह सरकार में इंटर्नशिप के लिए 80% समय और निजी स्कूलों में 20% समय निर्धारित करने का प्रस्ताव है।

(ङ) इंटर्नशिप की मेजबानी करने के लिए पहचाने जाने वाले स्कूलों को एक TEI के प्रयोगशाला स्कूलों के रूप में माना जाना चाहिए ताकि शिक्षकों और छात्र-शिक्षकों को स्कूल के छात्रों, शिक्षकों और स्थानीय समुदाय के साथ एक निरंतर तरीके से जुड़ने के लिए सक्षम किया जा सके, जिससे समझदारी हो सके शिक्षाप्रणाली, स्वयं, छात्र, समुदाय आदि का ये स्कूल विद्यालय और छात्रों को निरीक्षण, प्रयोग, बातचीत, सूचना एकत्र करने, आदि के लिए पूरे वर्ष उपलब्ध होना चाहिए।

(च) स्कूल इंटर्नशिप के संगठन सहित प्रारंभिक शिक्षक की तैयारी केंद्रीय स्तर पर शिक्षक शिक्षा नियामक की संयुक्त जिम्मेदारी के रूप में होगी, राज्य शिक्षा विभाग, संबद्ध संगठन, शिक्षक शिक्षा संस्थानों और इंटर्नशिप या होस्ट स्कूल उपर्युक्त संस्थानों/एजेंसियों, भविष्य के शिक्षकों की गुणवत्ता में हित धारक होने की संभावना से पहले परिभाषिक और उपयुक्त सीमांकित जिम्मेदारियों के साथ समन्वयित तरीके से कार्य करने की उम्मीद है।

(छ) छात्र इंटर्नशिप के दौरान विभिन्न चरणों में छात्र शिक्षक के प्रदर्शन और उपलब्धियों का मूल्यांकन प्रमाणन उद्देश्यों के लिए आवश्यक

संगठन द्वारा निर्धारित मूल्यांकन की योजना के अनुसार होगा। उनके द्वारा किए गए कार्यों में इंटर्नशिप प्रदर्शन का आकलन शिक्षक शिक्षा संकाय, स्कूल के प्रिंसिपलों और गुरुशिक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा। शिक्षक शिक्षा संस्थान स्कूलों को मूल्यांकन योजना के लिए विस्तृत दिशा निर्देश उपलब्ध कराएंगे।

पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष के छात्रों को सक्रिय रुप से शिक्षण में प्रवृत्त किया जाता है। उन्हें दो स्तरों उच्च प्राथमिक (कक्षा 6-8) तथा माध्यमिक (कक्षा 9-10) अथवा उच्च माध्यमिक (कक्षा 11-12) जिसमें कम से कम 16 सप्ताह माध्यमिक/उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए होते हैं। दो वर्षीय कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों में इंटर्नशिप कम से कम 20 सप्ताह कि होती है, (4 सप्ताह प्रथम वर्ष में और 16 सप्ताह द्वितीय वर्ष में) इसमें शिक्षण अभ्यास के अतिरिक्त एक सप्ताह की प्रारंभिक प्रावस्था होगी जिस अवधि में छात्राध्यापक सामान्य कक्षा में नियमित अध्यापक के रुप में अध्यापन कार्य का प्रेक्षण करना होता है तथा इसके अलावा अभ्यास पाठों का समकक्ष प्रेक्षण भी सम्मिलित होता है।

विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम का उद्देश्य

विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक दक्षता का विकास करना है जिसे निम्नलिखित उद्देश्यों द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है-

- छात्राध्यापकों को विद्यालय के वास्तविक परिवेश का अनुभव प्रदान करना।
- विद्यालयीय गतिविधियों से परिचित कराना।
- वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण कार्य का अभ्यास प्रदान करना।
- पाठ्योजनानुसार शिक्षण का अभ्यास प्रदान करना।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित शिक्षण विषयों के शिक्षण में पारंगत करना।

विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम की पाठ्यक्रमीय क्रियाएँ

- विद्यालय परिवेश को जानना।
  - सम्बद्ध विद्यालय के नियमित अध्यापकों के अध्यापन कार्य का अवलोकन।
  - सम्बद्ध विद्यालय की गतिविधियों एवं अभिलेखों पर आधारित प्रतिवेदन।
  - सम्बद्ध विद्यालय के सामुदायिक परिवेश का प्रेक्षण एवं प्रतिवेदन।
- कक्षा शिक्षण अभिमुखीकरण
  - सम्बद्ध विद्यालय के शिक्षकों एवं अध्यापक प्रशिक्षक के निर्देशन में।
- पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास
  (उच्च प्राथमिक स्तर 6-8 कक्षा)
  - दो शिक्षण विषयों पर शिक्षण अभ्यास
  - विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग
- पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास
  (माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के लिए)
  - दो शिक्षण विषयों पर शिक्षण अभ्यास
  - विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग
- समीक्षा पाठ
  - समीक्षा पाठ प्रस्तुतीकरण हेतु अभ्यास
  - समीक्षा पाठ मूल्याङ्कन
  - सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण

विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम की विशेषता

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अवयव शिक्षण अभ्यास होता है जिसके माध्यम से छात्राध्यापक छात्राध्यापिकागण

यथार्थरुप से अध्यापकीय भूमिका तथा दायित्वों के निर्वहन के लिए तत्पर होने का प्रयास करते हैं। अध्यापक शिक्षा को सही दिशा-निर्देशन प्रदान करने हेतु शिक्षा के सैद्धांतिक और व्यवहार में संतुलन स्थापित करना विवेकपूर्ण नियोजन तथा क्रम निर्धारण का विषय है। इसका छात्राध्यापकों पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ता है-

- शिक्षा प्रक्रिया से व्यावहारिक ढंग से परिचित कराता है।
- अध्यापन कौशल में, शिक्षण-अभ्यास एवं वास्तविक विद्यालयीय अध्ययन अध्यापन परिस्थिति में समस्त शैक्षिक कार्यक्रमों से अवगत कराता है।
- पाठ्यवस्तु सह प्रविधि जैसे पद्धति को समाकलात्मक तौर पर विभिन्न अवसरों में प्रयोग करने में दक्ष करता है।
- शिक्षण कार्य एवं शिक्षण इतर कार्यों में व्यवहार-कुशल होता है।
- विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम छात्रों में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है।
- षड्मासीय इंटर्नशिप छात्राध्यापकों में उत्तरदायित्व निर्वहन करने की क्षमता प्रदान करने कि क्षमता प्रदान करता है।
- इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्राध्यापकों को विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों का ज्ञान कराया जाता है।
- विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम छात्राध्यापकों में सुनियोजन, क्रमबद्धता एवं व्यवस्थापन की भावना विकसित करता है।
- विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम छात्रों में विभिन्न प्रकार के कार्यों जैसे कक्षा शिक्षण के लिए आंकलन सूची (Assessment Schedule) विभागीय लिखित दत्त कार्य अथवा एक प्रोजेक्ट जो पाठ्यसहगामी क्रिया कलाप से संबन्धित होता है उसमें प्रतिभाग करता है।
- इस कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापक विद्यालयीय संचयी अभिलेख अथवा विद्यालयीय विशेषकर माध्यमिक स्तरीय छात्रों की शैक्षिक

तथा व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण करने सम्बंधित कार्यकलापों में प्रतिभागिता करते हैं।

- इंटर्नशिप के अंतर्गत छात्राध्यापकों में प्रेक्षण एवं मूल्यांकन कौशलों का विकास होता है। शिक्षण अभ्यास के उपरांत इस प्रकार के मूल्याङ्कन का आयोजन किया जाता है।
- विद्यालय प्रशिक्षुता में शिक्षण अभ्यास कि कार्यावधि बढ़ जाने से छात्राध्यापकों में प्रशिक्षण का पर्याप्त अनुभव एवं दक्षता प्राप्त होती है।
- विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को दिशा-निर्देशन कार्यक्रम के माध्यम से आयोजित व्याख्यान, वार्तालाप, विचार-विमर्श तथा प्रदर्शन एवं भूमिका निर्वहन का उपयोग तथा स्पष्ट अवधारणा निर्माण का अवसर दिया जाता है।
- विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापकों में विद्यालय प्रबंधन और कार्मिक सहयोग के लिए तत्परता इत्यादि सम्बंधित कार्यक्रम से परिचित कराया जाता है।
- इस कार्यावधि में छात्राध्यापक प्रदर्शन विद्यालयों में चलने वाली कक्षाओं का निरीक्षण करते हुए शिक्षण कौशलों के अनुप्रयोग को समझने के लिए सक्षम हो पाता है।

विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम में गुणवत्ता हेतु सुझाव–

- शिक्षक-छात्रों का परस्पर अंत:संबंध सहज होना चाहिए।
- छात्रों को इंटर्नशिप में जाने से पूर्व विद्यालयीय जीवन से परिचय करना चाहिए।
- शिक्षण अभ्यास में जाने से पूर्व छात्र-अध्यापकों को शैक्षिक समायोजन का ज्ञान होना चाहिए।
- विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अवयव है, अत: छात्राध्यापकों के विभिन्न कौशलों हेतु पूर्व परीक्षण कि अवधि बढ़ानी चाहिए।

- सम्पूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम हेतु प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में समान वर्ष में सामान रुप से अंको का विभाजन किया गया है जबकि दोनों वर्षों में इंटर्नशिप कि अवधि क्रमशः 4 सप्ताह एवं 16 सप्ताह है।
- अलग अलग वर्षों में अलग विभिन्न क्रियाकलाप एवं गतिविधियाँ कराइ जाती हैं अतः उनका अंक आवंटन भी भिन्न होना चाहिए।

निष्कर्ष

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण अवयव शिक्षण-अभ्यास होता है जिसके माध्यम से छात्राध्यापकों को यथार्थ रुप से अध्यापकीय भूमिका तथा दायित्वों को निर्वहन करने के लिए तत्पर होने का प्रयास किया जाता है। विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम के माध्यम से छात्राध्यापकों में विभिन्न प्रकार के पाठों में जानकारी, तकनीकी उपकरणों का रखरखाव तथा उपयोग के बारे में दक्षता की प्राप्ति, छात्रों के लिए समुचित परामर्श-सेवा और मार्गदर्शन के प्रबंधन हेतु योग्यता का अर्जन, ज्ञानात्मक पक्ष के उचित विकास करने कि क्षमतार्जन, प्रजातान्त्रिक पद्धतियों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान कि भावना का विकास करना, विद्यालय एवं समुदाय के मध्य समन्वय स्थापना, छात्रों में स्वाध्याय, स्व-मूल्याङ्कन, उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए सक्षम होना आदि अन्य अनेक कार्य हैं जिनके सम्पादन हेतु भावी अध्यापकगणों को योग्य बनाने के लिए प्रबंधन, अध्यापन अभ्यास (Teaching Practice) सहायक उद्देश्य है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में केंद्र बिन्दु स्वरूप शिक्षण अभ्यास के अभाव में मात्र सैद्धांतिक पक्ष के कक्षाध्यापन द्वारा प्रभावकारी अध्यापकों का निर्माण करना कदापि सम्भव नहीं हो सकता है।

✦✦✦

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योगशिक्षा की आवश्यकता

–नवीन आर्य

शोधछात्र, शिक्षाशास्त्रविभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली

अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है, जिसमें विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने का प्रयत्न किया जाता है कि अगली पीढ़ी को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में वे सक्षम हो सकें तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता के साथ सांस्कृतिक उद्दीपन एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना संभव हो सके। अध्यापक शिक्षा व्यक्ति के ज्ञानात्मक व भावनात्मक योग्यताओं के विकास में सहायक है। इसके अन्तर्गत वे सभी क्रियाएँ, कार्यकलाप एवं घटनाएँ आती हैं, जिनके द्वारा भावी शिक्षकों को जागरूक बनाया जाता है। एक राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों पर निर्भर करती है और नागरिकों की गुणवत्ता उनकी शिक्षा पर निर्भर करती है तथा शिक्षा की गुणवत्ता उसके शिक्षक समाज पर निर्भर करती है। शिक्षक अथवा अध्यापक एक ऐसा आदर्श एवं पथ प्रदर्शक है, जो आज के विद्यार्थी को भावी नागरिक के रूप में तैयार करता है। इसलिए आवश्यक है कि द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को अधिक से अधिक गुणवत्तापरक विषयों से युक्त किया जाये।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के अनुसार – "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराओं एवं तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता देता है।"

आचार्य विनोबा भावे ने कहा है– "प्राचीन काल से आज तक जो भारत बना, उसको शिक्षकों ने ही बनाया है। प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक यहाँ आचार्यो की परम्परा चली आयी है। उन्होंने समाज को तैयार किया और अपनी ओर से विद्यादान दिया"[1]।

योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। अपनी इस प्राचीन विद्या के माध्यम से विश्व और सम्पूर्ण मानवता को एक नई रोशनी प्रदान करने का श्रेय भारत को जाता है। महर्षि पतंजलि ने योग के अभ्यासों को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। पतंजलि के पश्चात् अनेक ऋषियों और योगियों ने इसके विकास में अपना योगदान दिया जिसके परिणाम स्वरूप योग सम्पूर्ण विश्व में और प्रचलित हो गया है। "इसी क्रम में 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 193 सदस्यों के साथ '21 जून' को अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया"[2] अब तक वैश्विक स्तर पर तीन 'विश्व योग दिवस' मनाए जा चुके हैं। जब वैश्विक स्तर पर योग को मान्यता मिल चुकी है। ऐसे में द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योग शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में समाहित किया जाना आवश्यक है और प्रासंगिक भी है।

'अध्यापक शिक्षा' के अन्तर्गत प्रशिक्षु-शिक्षक को इतना परिपक्व हो जाना चाहिए जो इस प्रकार की व्यवस्था का निर्माण कर सके जिससे कि विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक, सांवेगिक, विकास हो सके। वह अपने विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सृजनात्मक व

---

1. शिक्षण विचार, विनोबा, पृष्ठ 187, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।
2. योग-स्वस्थ जीवन जीने का तरीका-माध्यमिक स्तर, पृष्ठ-3, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्।

अन्य क्षमताओं का विकास कर सके। इस प्रकार के अध्यापकों का निर्माण करने हेतु द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योग शिक्षा का समावेश अत्यन्त आवश्यक है।

एक प्रशिक्षु-शिक्षक को द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करके विद्यालय में शिक्षण कार्य करना होता है एक परिपक्व अध्यापक ज्ञानराशि का विद्यार्थियों पर अनुप्रयोग करते हुए वांच्छित व्यवहारगत परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। इस व्यवहार-गत परिवर्तन में योग शिक्षा सहायक सिद्ध होती है। आज विद्यार्थियों में अवसाद, तनाव, मानसिक द्वन्द्व, आक्रामकता, क्रोध, भय, कक्षा-कक्ष में निद्रा आना, विद्यालय में पलायन, परीक्षा के समय मानसिक दबाव, मादक द्रव्य का सेवन, चोरी करना, झूठ बोलना आदि विकृतियाँ निरन्तर बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों को इन विकृतियों से निजात दिलाने के लिए "योग शिक्षा" मील का पत्थर साबित हो रही है।

अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य–

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के द्वारा पाठ्यक्रम प्रारूप में कई सामान्य उद्देश्यों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। जैसे-

1. भारतीय संविधान में निर्दिष्ट राष्ट्रीय मूल्य तथा लक्ष्यों को विकसित करने की क्षमता का उन्नयन करना।

2. अध्यापक को आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन के लिए माध्यम या अभिकरण के रूप में कार्य करने के लिए योग्य बनाना।

3. सामाजिक सन्नद्धता, अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध, मानवाधिकार तथा बाल अधिकारों की रक्षा एवं उन्नयन के लिए अध्यापकों को बोधसक्षम बनाना या संवेदनशील बनाना।

4. उभरती हुई अवधारणाओं के प्रति अध्यापक तथा अध्यापक-शिक्षकों को बोध सक्षम बनाना, जैसे- पर्यावरण, पारिस्थितिकी, जनसंख्या, लिंग, समानता आदि।

5. छात्रों में तार्किक चिन्तन तथा वैज्ञानिक मानसिकता को विकसित करने के लिए अध्यापकों को सक्षम बनाना।

6. सामाजिक यथार्थ के प्रति आलोचनात्मक सजगता विकसित करना आदि अध्यापक शिक्षा के सामान्य उद्देश्य हैं[1]।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योग शिक्षा

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में "योग शिक्षा" नामक विषय की प्रासंगिकता अपेक्षित हो जाती है। जैसे-

प्रशिक्षु-शिक्षको के शारीरिक स्वास्थ्य हेतु योग शिक्षा-

महर्षि पतंजलि प्रतिपादित अष्टांगयोग में सन्निहित आसन, प्राणायाम आदि शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका का निर्हवन करते हैं "स्थिरसुखमासनम्"[2] सूत्र के व्यासभाष्य में पद्मासन, वीरासन, भद्रासन, स्वास्तिकासन, दण्डासन, उष्ट्रासन इत्यादि का वर्णन मिलता है। आसन रीढ़ की हड्डी और शारीरिक मांसपेशियों के उचित गठन नियन्त्रण और उन्हें लचीला तथा शक्तिशाली बनाने में सहायक है। पाचन क्रिया को सही प्रकार नियन्त्रित करने में सहायक है। आसन योगाभ्यास रक्त के दबाव, हृदय-गति तथा शरीर तापमान आदि को सामान्य एवं उपयुक्त बनाने में सहायक है। इसके अतिरिक्त आसन, प्राणायाम तथा अन्य यौगिक क्रियाएँ आयु के अनुसार उपयुक्त ऊँचाई, भारत तथा अन्य शारीरिक क्षमताओं का उपर्युक्त विकास करने तथा दीर्घायु बनाए रखने में सहायक हैं। अतः प्रशिक्षु-शिक्षक शारीरिक स्वास्थ्य में सहायक "योग शिक्षा" से परिचित हो सकेंगे और व्यवहार में ला सकेंगे।

प्रशिक्षु-शिक्षकों के मानसिक विकास हेतु योग शिक्षा-

योगशिक्षा शारीरिक विकास के ही नहीं अपितु मानसिक विकास

---

1. अध्यापक शिक्षा, डॉ. जी.सी. भट्टाचार्य, पृ. 66
2. पातंजलयोगसूत्रम्, 2.46

में भी महत्वपूर्ण योगदान करती है। योगाभ्यास के द्वारा स्वस्थ हुए शरीर में स्वस्थ मन स्वत: ही समाविष्ट हो जाता है। यौगिक क्रियाएँ शरीर व मन के मैल को साफ कर, चित्त को प्रसन्न एवं तनाव रहित रखने में सहायक हैं। महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित यम तथा नियम क्रमश: "अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा: यमा:"[1] अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (संग्रह न करना) ये यम है। "शौचसन्तोषतपस्वाधयायेश्वरप्रणिधानानि नियमा:"[2] अर्थात् शौच (स्वच्छता), संतोष, तप, स्वाधयाय (अच्छा साहित्य पढ़ना, स्वयं को जानना) और ईश्वरप्रणिधान (ईश्वर/सर्वोच्च शक्ति के प्रति निष्ठा रखना) ये नियम हैं। ये यम, नियम आदि यौगिक क्रियाएँ आदि मन की चंचलता अर्थात् चितवृत्तियों पर अंकुश लगाने पर सहायक है। अहिंसा सत्य अपरिग्रह स्वाध्याय आदि ज्ञानेन्द्रियों को स्वस्थ, सबल एवं संवेदनशील बनाती है। इन यौगिक क्रियाओं से तर्कशक्ति, विचारशक्ति निरीक्षण शक्ति, ग्रहण शक्ति, स्मरण एवं निर्णय शक्ति का विकास होता है।

चित्त को प्रसन्न कैसे रखा जाये? इस सन्दर्भ में पातंजलयोगसूत्र में वर्णन है कि "मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षणां सुखदु:खपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्"[3] अर्थात् सुखी व्यक्तियों में मैत्री भावना रखनी चाहिए, दु:खित प्राणियों में करुणा, पुण्यात्माओं में मुदिता/प्रसन्नता तथा अपुण्यात्माओं/पापी जनों में उपेक्षा करनी चाहिए। इससे चित्त मुदित अर्थात् प्रसन्न होता है। अत: ये यौगिक क्रियाएँ मानसिक व्याधियों तथा अस्वच्छता की अवस्था में पर्याप्त उपचार करने में सहायक हैं। अत: द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षु-शिक्षक "योग-शिक्षा" द्वारा मानसिक विकास सम्बन्धित जानकारी पा सकेंगे। और आत्मसात् कर सकेंगे।

---

1. पातंजलयोगसूत्रम्, 2.30
2. पातंजलयोगसूत्रम, 2.32
3. पातंजलयोगसूत्रम्, 1.33

प्रशिक्षु-शिक्षको के संवेगात्मक एवं नैतिक विकास हेतु योग शिक्षा-

"विद्यार्थियों के लिए अध्यापक आदर्श होते है। अगर अध्यापक का शांति के प्रति रुझान नहीं है, तो वे अनजाने में हिंसा का दुष्प्रचार करने में भूमिका निभाते हैं। कहा जाता है, "जो मैं जानता हूं वही पढ़ता हूं और जो मैं हूँ वही दिखता हूँ।" अध्यापक का पहला उत्तरदायित्व विद्यार्थियों को एक अच्छा व्यक्ति बनने में सहायता करना है और अपनी क्षमताओं का सम्पूर्ण प्रयोग करने के लिए उत्साहित करना है। ऐसा सिर्फ उसके हित में ही नहीं बल्कि समाज की भलाई के लिए भी है।"[1]

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षु-शिक्षकों के संवेगात्मक और नैतिक विकास की दिशा में योग शिक्षा कारगर सिद्ध होती है। यौगिक क्रियाएँ इन्द्रिय निग्रह कर उपयुक्त समय पर उपयुक्त ढंग से संवेगात्मक व्यवहार कर सकने में सहायक है। योग का सिद्धान्त अहिंसा, परस्पर सौहार्द, सत्यप्रियता, ईमानदारी, सहिष्णुता, दया, सहानुभूति, प्रेम, शान्ति और सहयोग आदि मानवीय गुणों को पोषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो प्रशिक्षु-शिक्षकों के लिए अपेक्षित एवं वांछनीय है। इसके अतिरिक्त योग का सैद्धान्तिक पक्ष मानव मन की बुराईयों तथा अंधकार जैसे ईर्ष्या, घृणा, वैमनस्य, अंधी प्रतिस्पर्धा, क्रोध, छल, कपट, धोखाधड़ी, नशीले पदार्थों का सेवन, इन्द्रिय जनित और सांसारिक विषय-वासनाओं में अत्यधिक आसक्ति आदि से दूर रखने में सहायक है।

प्रशिक्षु-शिक्षकों के सामाजिक विकास हेतु योग शिक्षा-

"योग शिक्षा" व्यक्ति के सामाजिक समायोजन तथा विकास एवं प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

---

1. 'शांति के लिए शिक्षा' राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र, पृ. 10, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

सभ्य व्यक्तियों के निर्माण से ही सभ्य समाज की कल्पना की जा सकती है। तन और मन को स्वस्थ रख कर व्यक्तियों की कार्यक्षमता में वृद्धि कर समाज को खुशहाल बनाया जा सकता है। "योग शिक्षा" सदाचार, सात्विक भोजन, संयमित एवं पवित्र जीवन शैली की शिक्षा प्रदान करती है, जो विकासशील समाज के लिए आवश्यक भी है। योग शिक्षा भौतिकमूल्यों के स्थान पर नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना कर समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करके आदर्श सामाजिक व्यवस्था बनाने में सहायक है। अतः यह सुनिश्चित है कि "योग शिक्षा" को आत्मसात् किया हुआ शिक्षक-समूह समाज को सही दिशा प्रदान करता है।

प्रशिक्षु-शिक्षको के आध्यात्मिक विकास हेतु योग शिक्षा-

भारत विभिन्न धर्म, संप्रदाय, पन्थ, मत, मजहब, ईमान और विचारधाराओं का देश है। हमारी संस्कृति विभिन्न विचारधाराओं से पुष्पित पल्लवित है। प्रत्येक धर्म में किसी न किसी सर्वोच्च शक्ति को स्वीकार किया जाता है। चाहे उसे ईश्वर, अल्लाह, राम, गोड या अन्य किसी नामविशेष से सम्बोधित किया जाता हो, सामान्यतः स्वीकार्य है। योग उसी सर्वोच्च शक्ति को पा लेने का मार्ग है। योग शरीर और मन से परे, आत्मा और स्थूल शरीर से अतिरिक्त सूक्ष्मशरीर के अस्तित्व का बोध कराने में सहायक है। योग सृष्टि को ईश्वरमय तथा सभी प्राणियों में परमात्मा का अंश जानकर सभी से प्रेम एवं आदरभाव रखने में सहायक है। मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य परमात्मा के अस्तित्व में लीन होना, मोक्ष प्राप्ति करना तथा जीवन-मरण के चक्र से मुक्त होना है, इस तथ्य को बोध कराने में एक मात्र योग ही श्रेयस्कर मार्ग है। चित्तवृत्तियों पर निरोध करके परमात्मा से मिलन और आत्मिक आनन्द की प्राप्ति ही योग का मुख्य उद्देश्य है।

प्रशिक्षु-शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास हेतु योग शिक्षा-

योगसूत्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि कहते हैं - "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"[1]

1. पातंजलयोगसूत्रम्, 1.2

अर्थात् चित्तवृत्तियों का नियन्त्रण ही योग है योग अन्तर्मुखी बनाता हुआ संवेगात्मक नियन्त्रण में सहायक है, योग (आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि) के अभ्यास प्रशिक्षु-शिक्षकों के उत्तम व्यक्तित्व विकास में सहायक हैं। व्यक्तित्व को व्यवहार का पूर्ण जोड़ कहा जा सकता है, जिसमें अभिवृत्तियाँ संवेग, विचार, आदतें और गुण शामिल होते हैं।

"आलपोर्ट" के अनुसार- "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।"[1] आसन और प्राणायाम के नियमित अभ्यास से ओजस्विता आती है योग से रोग दूर होते हैं। योग शरीर को स्वस्थ बनाता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। स्वस्थ मस्तिष्क सुविचार, सद्व्यवहार, सदाचार, संवेगात्मक नियन्त्रण, सकारात्मक दृष्टिकोण का द्योतक होता है। अत: योगशिक्षा प्रशिक्षु-शिक्षकों के व्यक्तित्व के प्राय: सभी आयामों जैसे-शारीरिक आयाम, भावात्मक आयाम, बौद्धिक आयाम, सामाजिक आयाम तथा आध्यात्मिक आयाम सभी पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और यह सकारात्मक प्रभाव श्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है। एवं श्रेष्ठ व्यक्तित्व का होना एक अध्यापक के लिए अत्यावश्यक है।

"योग शिक्षा" प्राप्त शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों पर अनुप्रयोग

योगशिक्षा रूपी ज्ञाननिधि को सिद्धान्तरूप में आत्मसात करके उसे व्यावहारिक रूप में प्रयुक्त करना आवश्यक है। "सिद्धान्त का निर्माण हमारे अपने विश्वासों के योजनाबद्ध संरचना या क्रमबद्धता से होता है तथा पद्धति का निर्माण हमारे प्रयास की संगति से होता है प्रायोगिक ज्ञान उस आधार शिला का काम करता है जिस पर पूरा ज्ञान टिका रहता है। समस्त सैद्धान्तिक ज्ञान उस ज्ञान का उच्चारण है, जिसे हमने अपने समुदाय की पद्धतियों में भागीदारी करके सीखा है"[2]

1. शिक्षामनोविज्ञान, पृ. 467, अरूण कुमार सिंह
2. 'शिक्षा के लक्ष्य' राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र, पृ. 7, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत "योग शिक्षा" प्राप्त अध्यापित शिक्षक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर अनुप्रयोग कर सकेंगे। जैसे-

1. विद्यार्थियों के शारीरिक विकास हेतु आसन, प्राणायाम आदि की शिक्षा प्रदान कर सकेंगे।
2. विद्यार्थियों की विभिन्न मानसिक रोगों, अशांति, चंचलता से मुक्ति के उपाय बता सकेंगे।
3. विद्यार्थियों के संवेग नियन्त्रण करने हेतु यौगिक क्रियाओं के तरीके बता सकेंगे।
4. विद्यार्थियों के अध्ययन-अधिगम में मन न लगने पर एकाग्रता बढ़ाने हेतु धारणा, ध्यान आदि क्रियाओं से परिचित करा सकेंगे।
5. विद्यार्थियों से अष्टांगयोग के अंतर्गत आने वाले यम नियम आदि का जीवन पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की जानकारी दे सकेंगे।
6. विद्यार्थियों में परीक्षा के समय होने वाले तनाव से निजात पाने हेतु प्राणायाम और ध्यान की यौगिक क्रियाओं से अवगत करा सकेंगे।
7. विद्यार्थियों में सदाचार, सुविचार, अच्छी आदतें, तथा सकारात्मक अभिवृत्ति/दृष्टिकोण आदि को विकसित कर सकेंगे।
8. विद्यार्थियों को योगसूत्र में वर्णित अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि मूल्यों को आत्मसात करा सकेंगे।
9. विद्यार्थियों में उत्तम व्यक्तित्व के निर्माण से सम्बन्धित यौगिक तथ्यों की जानकारी उपलब्धा करा सकेंगे।
10. विद्यार्थियों में परस्पर सहयोग, सौहार्द, ईमानदारी आदि सद्गुणों की शिक्षा प्रदान कर सकेंगे।

उपसंहार

योग स्वस्थ जीवन जीने की शैली है, जिसका उद्‌भव भारत में हुआ, अब इसे विश्वभर में विज्ञान की एक शैली के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। पाश्चात्य संस्कृति भी इसे वैज्ञानिक व्यायाम की एक स्वस्थ शैली के रूप में स्वीकार कर रही है। एक सामान्य जन के लिए योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, क्रिया और ध्यान के अभ्यास हैं, जो प्रशिक्षु-शिक्षक ही नहीं, अपितु सभी व्यक्तियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से चुस्त और भावात्मक रूप से संतुलित रखते हैं।

विद्यालयी विद्यार्थियों हेतु उच्च प्राथमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ने योग की पाठ्यचर्या तैयार की है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकेगी। इसी के साथ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने भी बी.एड. कार्यक्रम, एम.एड. कार्यक्रम हेतु योगशिक्षा नामक पाठ्यक्रम तैयार कर पाठ्यपुस्तक का रूप देकर अच्छी पहल की शुरूआत की है, ताकि अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत चलने वाले कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम के दौरान "योग शिक्षा" को विषय के रूप में पढ़ा जा सके और प्रशिक्षु-शिक्षकों को "योग शिक्षा" का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जा सके और यही प्रशिक्षु-शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करके "योग शिक्षा" के समस्त तथ्यों को विद्यार्थियों पर अनुप्रयोग कर सकें तथा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सकें।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. विनोबा : शिक्षण विचार : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, दिसम्बर 2016
2. शुक्ला, डॉ. ग्रीष्मा : अध्यापक शिक्षा की क्षेत्र प्रासंगिकता : क्लासिकल पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009

3. अत्री, विनोद कुमार : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षण : सुमित एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण-2005

4. सिंह, अरूण कुमार : शिक्षा मनोविज्ञान : भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), नई दिल्ली, तृतीय संस्करण-2010

5. भट्टाचार्यः, डॉ. रामशंकर : पातंजलयोगसूत्रम् : भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2001

6. मंगल, डॉ. एस.के : योगशिक्षा : आर्य बुक डिपो, दिल्ली, तृतीय संस्करण-2005

7. भट्टाचार्य, जी.सी : अध्यापक शिक्षा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, षष्ठ संस्करण-2011

8. शिक्षा के लक्ष्य, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, दिसम्बर 2012

9. शांति के लिए शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, जून 2010

10. योग-स्वस्थ जीने का तरीका : माध्यमिक स्तर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2016

✦✦✦

Two Years Teacher Education Curriculum and Strategies for Effective Implementaion-A Critical Analysis

-Prof. Rachna Verma Mohan

Dept. of Education
Shri Lal Bahadur Shastri Rastriya
Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.

Teacher is the top most academic and professional person in the educational pyramid. He is the pivot around which all the educational programme rotate in so far as their implementation is concerned. The success of any educational programme depends on the quality of teachers and quality of teachers, in turn depends to a large extent upon the quality of teacher education. The main focus of the entire process of teacher education lies in its curriculum, design, structure, organization and transaction modes, as well the extent of its appropriateness. Teacher education programme should be sensitive enough towards changing needs of the society and field conditions. It should also be flexible to accommodate, absorb, delete in relation th changing field needs. Obviously, this requires continuous effort in all aspects of curriculum. Such efforts comprises continuous appraisal of curriculum components, arriving at a plausible and relevant framework as a model for different forms of teacher education, generating and testing newer pactices and components, trying out innovative edeas and schmes, and generating a knowledge base through systematic conceptualization.

Effort in these directions has received greater emphasis since Independence. After the establishment of the NCTE as a statutory

body in 1995, it took steps to develop a new curriculum framework published in 1998. This framework revealed that it envisages a curriculum rooted in India reality and culture and promotes a mutually supportive system of teacher education in which training institutions and community interaction is promoted and strengthened. NCF (2005) also emphasized on the level and quality of subject matter knowledge, the repertoire of pedagogical skills the teacher should possess to meet the needs of diverse learning situations, Teachers should be sensitive to contemporary problems. Level of motivation is also important as in influences poupil learning and the larger processes of social transformations.

Considering the complexity and significance of teaching as professional practice NCFTE (2009) recommended four years integrated model at the bachelor's degree level or two years bachelor's degree programme. Further Justice verma commission on Teacher Education recommended that the duration of the programmes of Teacher Education needs to be enhanced. Following these recommendations National Council for Teacher Education (NCTE) came up with a new regulation called NCTE (Recognition Norms and Procedure) Regulations, 2014 which was published in the Govt. of India Gazette on Dec 2014. As per the new regulation, the B.Ed and M.Ed have been recognized as a professional course with duration of two academic years. The new curriculum for B.Ed. and M.Ed has been implemented from the academic session 2015-16 with new prospects and priorities across the nation. Through the course structure and experiences provided to the students, will help them to become reflective practitioners. The course structure offers a comprehensive coverage of themes and rigorous field engagement with the child, school and community. The programme is comprised of three inter related curricular areas-

1. Perspective in Education.
2. Curriculum and Pedagogic Studies.

3. Engagement with the field

B.Ed. curriculum is divided into 11 courses which comprises theorty and projects plus 4 EPC courses.

All the courses include in-built field-based units and projects along with theoretical inputs from an interdisciplinary perspective. Engagement with the field is the curricular component which is meant to holistically link all the ourses. It also includes special courses for Enhancing Professional Competencies (EPC) of the student teachers. These courses will be transacted by using variety of approaches such as- case studies, group presentations, pojects, seminars, discussion on reflective journals, observations of children, workshop, collaborations and cooperative learning and interaction with the community in multiple sociocultural environment.

Perspectives in Education Courses

In first curricular area six papers have been included as (i) Childhood and growing up, (ii) Contemporary India and Education, (iii) Learning and Teaching, (iv) Theoretical foundations of knowledge and curriculum (v) Gender in the context of school and society and (vi) Inclusive education these courses are designed to enable student teachers to engage with studies on Indian society and education, acquire conceptual knowledge for social analysis and getting experience of engaging with diverse communities, children and schools. Conceptual understanding about issues of diversity, inequality and marginalization in Indian society throught the course on contemporary India and Education can be developed. The course on Teaching and Learning focuses on aspects of social and emotional development, self and identity etc. Understanding about culture, policies and practices help them to understand the importance of creating on inclusive school. Teaching learning process can be understood appropriately when see in the sociological, economic, political, philosophical and educational context in which they operate.

Curriculum and Pedagogic Studies

In second curricular area five courses namely (1) Language across the curriculum (2) Understanding disciplines and subjects (3) Pedagogy of a school (4) Assessment of Learning (5) Optional course have been included.

Objectives of Various Courses and Student Teacher's Role

1. Childhood and Growing up-This paper deals with child development and adolescent Psychology. The main focus is to enable student teachers to arrive at an understanding of how different socio-political realities construct different childhoods within children's lived contexts: family, schools, neighborhoods and community. The student teachers can understand this by bringing their own experiences to the classroom discussion. Through biographies, stories, narrations of growing up in different cultures, observations about children, children's diaries the teachers can develop better understanding of children of his class.
2. Contemporary India and Education- This course focuses on diversity, inequality and marginalization in society and policy framework for public education in India. The student teacher will come to know about diversity which enriches our lives as well as poses challenges for universal education. They will study the constitution (fundamental rights, duties and divertive principle) which will help them to deal diversity in their classroom effectively. Discussion about varius policies, their implementation gives them a broad vision of education of marginalized groups like women, delits and tribal people.
3. Learning and Teaching- This is core course which gives a view on theoretical frames from psychology, philosophy and sociology, Student teacher will become able to

understand theories and convert it to behavioral and testable component. They will be able to understand the difference between learning in school and learning outside school. It will include following component:

- Understanding Learning : socio cultural and cognitive processes
- Understanding the learner
- Learning in and out of school.

4. Language across the curriculum - Teaching cannot take place in a language free environment. Language and literacy background of students influence classroom interaction so it is important to know language background of the students. To ensure optimal learning of the subject area language should be given priority.

5. Gender, school and society - It is an important area because gender dicriminations is created and influenced by family, religion, culture, society and media. This course will enable the students to critically evaluate and challenge gender inequlities, while becoming sensitive to social groups and exploring the roles of the family, caste, religion, media etc. in gender discrimination.

6. Knowledge and Curriculum- This course helps student teachers to identify various dimensions of the curriculum and their relationship with the aims of education. They can trace the relationshp between the curriculum framework and syllabus. The student teacher learns to critically analyse various samples of textbooks, children's literature and teacher's handbook etc.

7. Assessment for learning- In traditional notion of assessment, it is performed at the end of teaching, using a paper pencil test. But this new curriculum has changed this notion as constructivist approach is suitable for it. According to this,

assessment is an ongoing process where the teacher closely observes learners during the process of teaching-learning, records learning landmark and supports them by providing relevant feedback. Student teacher will learn to explore diverse methods and tools of assessing an array of learning/ performance outcomes of diverse learners specially in inclusive school where constructs of disability and failure are seen as the other face of notion of ability and achevement as promoted by school.

Engagement with the Field

It has three components-

1. Sessional Work related to each theory paper.

2. Internship.

3. Enhancing Professional Competencies (EPC)

Enhancing professional Competencies - This curriculum framework has emphasize on enhancing professional competencies among teacher and teacher educators through activities. These activities are related to each course so that student teacher may get actively involved in teaching learning and reflect on their experiences. For this constructivist approach will be applied and student teacher will contribute in construction of knowledge instead of mere rote memorization of content by the students. Student teacher will be able to understand the learner, textbooks, assessment in a holistic manner in the existing socio-economic & political context. They will work for the holistic development of the child and make them a critical and creative thinker.

i. Reading and reflecting on texts will enable student teachers to read and respond to variety of texts in different ways. Responses may be personal, creative or critical, Students will also develop metacoginition awareness to become conscious of their own thinking process as they grapple with diverse texts. This will enhance their capacities as

reader and writers by becoming participants in the process of reading.

ii. Drama and art in education helps in creating relationship between the head, heart and hand. NCF (2005) recommends that the school curriculum must integrate various domains of knowledge, so that the 'curricular' encompassess all curricular as well as extracurricular. The ability to feel empathy for and relate with the other can be nurtured through drama based on experience, emotion and interpretation. It also involves community to participate in educational and social change. Aesthetic sensibilities can be developed and visit of places of art, exhibition and cultural festivals enhances understanding of local culture and art forms.

iii. Critical understanding of ICT goes beyond computer literacy and ICT aided learning and help student teacher imterpret and adapt ICT in line with educational aims and principles. It will also help student teachers to learn integrating technology tools for teaching learning, mateial development, developing collaborative networks for sharing and learning.

iv. Understanding the self-course helps to develop understanding of student teacher about themselves as a person and as a teacher though continuous ongoing reflection. They will develop sensibilities, despositions and skills that will help them in facilitating their own growth as well as their student's growth. To enhance capabilities of body and mind yoga will be useful. It will promote sensibilities that help to live in peace and harmony with one's surroundings.

Challenges in Implementation of the Curriculum:

These curricular areas no doubt focuses on good quality

teacher education by including theroetical papers, EPC and other educational activities in comprehensive manner. But at the same time it also poses some challenges in its implementation---

1. There is confusion over the content to be taught.

2. There is not training and orientation of teacher educators towards new curriculum.

3. Teacher educators are not aware of varius methods and strategies suitable for this type of curriculum.

4. How can community be linked with various programmes of the school?

5. Which strategies should be followed to teach in inclusive setting schools?

6. Due to time restriction in semester system teacher educators are not able to finish their course properly. Because some practical activities demand more time.

7. In some papers syllabus is vague. Each teacher educator may cover the topic according to their own interpretation.

8. Constructivist approach is difficult to implement as not of students in a class is more than required. So it becomes difficult to cater individual needs in a period of 40 to 45 min.

9. School internship programme consists of 20 weeks in two semesters. Schools do not allow student teacher to come to schools for internship in both semesters.

10. Experts in some subjects as drama & art, yoga education are not avilable in most of the TEI. Also facilities to teach these subjects are not avilable. So regular teachers are assigned the duties for such subjects. But they are not able to do it properly as they lack expertise in the field.

As this two year teacher education curriculum has become totally learner centered instead of teacher centered, teacher will have to change traditional strategies to implement it.

Strategies for effective Implementation of this programme

To effectively implement this two year learner centered teacher education programme, first of all the teacher educators & administrators have to change their traditional outlook about this programme. Now it is in the process of establishing it as a professional course, so rigorous training & teaching is required. Accordingly methods and strategies should be changed. Few effective strategies will be as follows-

- Contrusctivist approach is based on the contributions of cognitive psychologist like piaget, Vygotsky, Gardner, Novak etc. They believed that learners construct knowledge on the basis of their prior knowledge and personal experience. So teacher should provide interventions to help children construct their own concepts. In this process student's active participation in problem solving and critical thinking regarding a learning activity is essential. Teacher should facilitate cognitive change by presenting difficulties through specific tasks that pose dilemmas to students in such a way that stimulate purposeful, reflective thinking in arriving at a rational solution.
- Reflective teaching should be done in which teacher must examine their belief, assumptions and biases regarding teaching and learning and determine how these beliefs influence classroom, practice. Reflection refers to the ongoing process of critically examining and refining practice taking into careful consideration the personal, pedagogical, ethical & societal context associated with schools, classrooms and the multiple roles of teachers.
- Blended learning may be used which combines traditional teaching and learning approaches with information and communication technologies.
- Concept mapping for meaningful learning is another emerging method in learner centered framework. The steps

involved in concept mapping are selecting the key concepts and sub concepts, linking the concepts and sub concepts through prepositions and making meaning out of horizontal and vertical linkages. It helps the teacher to understand the existing concept of the learner as well as diagnose the misconceptions of students.

- Social Inquiry Approach can be used. This approach requires students to collect analyse and interpret data, draw generalizations. It involves community participation.
- Creative writing method can be used to develop cognitive and affective abilities of a higher order among students. This method can be used to teach all subjects like language, science, social science etc. It helps in developing abilities of reporting, arguing, explaining, reflecting, coping and evaluating.
- Collaborative and cooperative learning is a successful teaching strategy in which students in a small group with different levels of ability, do a variety of learning activities to improve their understanding of a subject. Students work through the assignment until all group members successfully understand and complete it.
- Problem solving method is also learner centered. By this method students develop the thinking, observation and enquiry skills.
- Investigatory approach will also be useful as it develops the abilities to formulate hypothesis, planning, enquiry and communication. Posing useful questions, plainning out investigation, hypothesizing, predicting and evaluation are the steps of this approach, It is helpful in learning natural and social science subjects.

In the end it can be said that this two year teacher education curriculum at Bachelor's level is totally dedicated to learner so to

improve the quality of education in our schools learner centered approaches of teaching should be adopted at secondary stage as learner centered approaches are supported by philosophical assumptions and have strong psychological basic.

Constructivism views knowledge as subjective & Contextual so learner centered approaches enhance the quality of education by taking into account learner's capabilities, learning styles, context (social, political) and culture.

References:

1. Bodrova E. & Leong D.J., (2007), Tools of the Mind, The Vygotskian Approach to Early Childhood Education Pearson Prentice Hall, USA.
2. Constructivist Approaches to Teaching and Learning. Handbook for Teachers of Secondary Stage (2012), NCERT, New Delhi.
3. Curriculum Framework: Two year B.Ed. Programme (2014) NCTE, New Delhi.
4. National Curriculum Framework (2005), NCERT, New Delhi.
5. National Curriculum Framework for Teacher Education: Towards Preparing Professional and Humane Teacher (2009), NCTE, New Delhi.
6. Policy Perspective in Teacher Education Critique & Documentation (1998), NCTE, New Delhi.
7. Sharma, N. (2003), Understanding Adolescence, NBT, India.

✦✦✦

Critical Appraisal of Curriculum, Implementation and Assessment of Two-year Teacher Education Programme

-Dr. Rajani Joshi Chaudhary,
Professor in Education
Sri Lal Bahadur Shastri Rastriya
Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.

Teacher Education programme is the most important sector for a developing nation. It needs day to day changes as per the demands of society. Today our students as learner have wide exposure to digital technology and getting lots of information within seconds through the web. This coming generation learners have less interaction opportunities with their community and society around them. but much more interaction with social media through their gazettes. Learning opportunities from social interactions are getting low which effects the emotional upbring of children. Our ancient and Indian values are deteriorating and children are adopting values of foreign cultures. They are growing characteristics of self-centredness and introversion. Currently, two years teacher education programme in an effort to develop such a teacher who can understand the current requirement of child and develop the learner with good Indian values. This two years teacher Education programme is the topic of controversy among academicians. It has completed its pilot phase of implementation in 2017. This paper discusses the critical appraisal of Curriculum, Programme Implementation and Assessment of two years teacher education programme of B.Ed. course as per NCTE notification of 2014.

In nut shell, this notification of NCTE 2014 deals with all fifteen types of teacher education courses from diploma in pre-school teacher education to master's degree in teacher education. This notification covers all the aspects of teacher education in detail such as Preamble, Duration, Admission procedure, Curriculum, programme implementation and Assessment, Staff and their qualifications and Facilities including all the infrastructure which facilitates all the activities of teacher education as **'Norms and Standards'** for Bachelor of Eduction **(B.Ed.)** degree and Masters of Education **(M.Ed.)** degree in appendix (4) and (5) respectively.

Recommendations for curriculum of B.Ed. under heading (4.1) says that the B.Ed. curriculum shall be designed to integrate the study of subject knowledge, human development, pedagogical knowledge and communication skills under the following four broad curricular areas:

1. Perspectives in Education.
2. Curriculum and Pedagogic Studies, and
3. Engagement with the Field/Practicum
4. School internship

1. Perspective in Education.

Perspectives in Education includes courses in the study of childhood, child development and adolescence, contemporary India and education, philosophical and sociological perspectives in education, theoretical foundation of knowledge and curriculum, teaching and learning, gender in the context of school and society, and inclusive education. The course in childhood studies shall enable student-teachers to angage with studies on Indian society and education, acquire conceptual tools of sociological analysis and hands-on experience of engaging with diverse communities, children and schools. The course on 'Contemporary India and Education' shall develop a conceptual understanding about issues

of diversity, inequality and marginalization in Indian society and the implications for education, with analysis of significant policy debates in Indian education. The course on 'Knowledge and curriculum' will address the theoretical foundation of school knowledge from historical, philosophical and sociological perspectives, with critical analysis of curricular aims and context, and the relationship between curriculum, policy and learning. The course on 'teaching and learning' will focus on aspects of social and emotional development; self and identity, and cognition and learning. As per this notification, these courses under each of these curricular areas will be based on a close reading of original writings, seminar/term paper presentations and continuous engagement with the field. Transaction of the courses shall be done using a variety of approaches, such as, case studies, discussions of reflective journals, observations of children and interaction with the community in mulitiple socio-cultural environments. Information and Communication Technology (ICT), gender, yoga education and disability/inclusive education shall form an integral part of the B.Ed. curriculum.

'Perspective in Education' of this notification for two-year teacher education programme has a number of good characteristics and positive points which are necessary for the development of a good teacher as given below-

1. The course on 'Contemporary India and Education' will help our pupil-teachers to know our society's issue such as diversity, inequality and marginalization in Indian society and can identify their problems for education and they will be able to acquire conceptual tools of sociological analysis and hands-on experience of engaging with diverse communities.

2. This will also help the pupil teachers to analyse the significant policy debates in Indian educaion.

3. The course on 'Knowledge and Curriculum' will also help in analysing the curricular aims and context and the relationship between curriculum, policy and learning.
4. the course on 'Teaching and Learning' will focus on social and emotional development of self and identification of roles of a teacher in our society.
5. Cognition and learning which are again an important part of the teacher education.
6. This course gives emphasis on Gender in the context of school and society which is the contemporary need of our society.
7. Inclusive education which cannot be left behind in any teacher education programme in a developing country.

2. Curriculum and Pedagogical Studies.

This programme recommends that the Courses in Curriculum and pedagogical Studies shall include aspects of language across the curriculum and communication, understanding of a discipline, social history of a school subject and its pedagogical foundation with a focus on the leaner and course on the theoretical perspectives on assessment for learning. Curriculum and Pedagogic Studies courses shall offer a study of the nature of a particular discipline, critical understanding of the school curriculum, pedagogy as the integration knowledge about the learner the discipline and the societal context of learning and research relating to different aspects of young children's learning. The design of the programme would enable student to specialize in on disciplinary area, viz. social science, Science, Mathematics, Languages and a subject area from the same discipline, at one/two levels of school. The courses shall aim to develop in students an understanding of the curriculum, linking school knowledge with community life. A variety of investigative projects shall be included to reconstruct concepts from subject knowledge through appropriate pedagogic processes

and to communicate meaningfully with children.

This curricular area is more elaborated than the one year teacher education programme and is the expansion of one year programme which will helpful to develop a knowledgeable, resourceful teacher for the society because-

1. Curriculum and Pedagogic Studies shall offer a study of the nature of a particular discipline, critical understanding of the school curriculum, pedagogy as the integration of knowledge about the learner, the discipline and the societal context of learning and research relating to different aspects of young children's learning.
2. The discipline and the societal context of learning and research relating to different aspects of young children's learning.
3. The design of the programme would enable student to specialize in one disciplinary area, viz. Social science, Science, Mathematics, Languages and a subject area from the same discipline, at one/two levels of school.
4. The courses shall aim to develop in students an understanding of the curriculum.
5. Linking school knowledge with community life.
6. A variety of investigative projects shall be included to reconstruct concetps from subject knowledge through appropriate pedagogic processes and to communicate meaningfully with children.

3. Engagement with field/Practicum and School internship.

This B.Ed. Programme recommends the Child, Community and School shall have sustained engagement with the Self curricular areas at different levels through establishing close connections between child and community through school internship. The curricular areas of 'Perspectives in Education' and 'Curriculum

and Pedagogic studies' shall offer field engagement through different tasks and projects with the community, the school, and the child in school and out-of-school. These tasks and projects may include collaborative partnership with the schools for developing CCE practices, establishing study circles/forums for professional development of in-service school teachers or dialoguing with the School Management Committee, etc. Community-based engagement may also include oral history projects with a community of artisans as part of 'Contemporary India and Education' or 'Pedagogy of social Science/History'.....Likewise, the pedagogy course on science may include environment-based projects to address concerns of a particular village/city or a community. Several specialised courses shall be offered to enhance professional capacities of a student-teacher such as courses on language and communication, drama and art, self-development and ICT. Courses that would focus on developing the professional and personal self of a teacher will be designed to integrate the oretical and practical components, transacted through focused workshops with specific inputs on art, music and drama. These courses shall offer opportunities to study issues of identity, interpersonal relations, adult-child gaps, personal and social constructs, schools as sites for struggle and social change; understanding and practicing yoga education, devoloping social sensitivity and the capacity to listen and emphasize.

School Internship would be a part of the broad curricular area of 'Engagement with the Field' and shall be designed to lead to development of a broad repertoire of perspectives, professional capacities, teacher sensibilities and skills. The curriculum of B.Ed. shall provide for sustained engagement with learners and the school (including engaging in continuous and comprehensive assessment for learning), thereby creating a synergy with schools in the neighbourhood throughout the year. Student-teachers shall be equipped to cater to diverse needs of learners in schools.These

activities shall be organized for 4 weeks in the first year of the course. Students are to be actively engaged in teaching for 16 weeks in the final year of the course. They shall be engaged at two levels, namely, upper primery (classes VI-VIII) and secondary (IX-X) or senior secondary, with at least 16 weeks in the secondary/senior secondary classes. They should be provided opportunities to teach in schools with systematic supervisory support and feedback from faculty. Internship in schools will be for a minimum duration 20 weeks for a two-year programme (4 weeks in the first year and 16 weeks in the second year as noted above). The should also include, besides practice teaching, an initial phase of one week for observing a regular classroom with a regular teacher and would also include peer observations, teacher observations and faculty observation of practice lessions.

This section of the programme explains a number of new concepts which are helpful in developing the personality of a teacher-

1. Sustained engagement with the Self, the Child, Community and the School at different levels and through establishing close connections between differnt curricular areas.
2. Collaborative partnership with the schools for developing CCE practices, establishing study circles/forums for professional development of in-service school teachers or dialoguing with the School management Committee, etc.) and different tasks and projects with the community, the school, and the child in school and out-of-school.
3. School Internship broad curricular area of 'Engagement with the Field' and development of a broad repertoire of perspectives. professional capacities, teacher sensibilities and skills.
4. Creating a synergy with schools in the neighbourhood throughout the year by engaging in continuous and comprehensive assessment for learning.

5. Equipping the student teacher to cater to diverse needs of learners in schools.
6. Engaging pupil teachers for 4 weeks in the first year of the course.
7. Sending students for actively engaged in teaching for 16 weeks in the final year of the course.
8. Engaging student teacher at two levels, namely, upper primary (classess VI-VIII) and secondary (IX-X) or senior secondary, with at least 16 weeks in the secondary/senior secondary classes. This should also include, besides practice teaching, an initial phase of one week for observing a regular classroom with a regular teacher and would also include peer observation, teacher observations and faculty observations of practice lessons.

2. Programme Implementation.

Programme implementation is a speciality and urgency for this two years programme as it gives guidelines to teacher education institutions. This part of this programme indicates about specific demands of implementation, calendar for all activities, schools for the Internship, transaction of the Perspectives in Education and Curriculum and Pedagogic Studies course with multiple and variety of approaches such as case studies, problem solving, discussions on reflective journals in colloquie, observations of children in multiple socio-cultural environments, initiate discourse on education by periodically organising seminars, debates, lectures and discussion groups for students and faculty, academic enrichment programmes prrticipate in academic pursuits and pursue research especially in school. etc.

This implementation part is praise worthy as

1. It is necessary to guide and make all the teacher education institutions for working in synchronization.

2. The recommendation about to make agreement for mentoring, supervising, assessing the students is quite natural.
3. The establishment of grievances cell for students is new approach.
4. Few recommendation such as research with schools and communities seems difficult in present work culture social situations.
5. The implementation for organising colloquium is also over expectation from student teachers.

3. Assessment

This part explains how the student teacher should be evaluated and gives the following recommendations for assessment of external and internal assessment-

1. 20 to 30% marks of Continuous Internal Assessment.
2. 70 to 80% marks of External Examination.
3. One fourth of the total marks shall be allocated to assessment in practice teaching.
4. Transparent, feedback should be given progessively by telling them their grades.
5. The bases of internal assessment shall be assignment, observation, records, student profile, diaries, journal etc.

It can be concluded that the idea of two year B.Ed. is a wonderful idea because teacher education needs two years for inculcating the professional skills and ethics of teaching. This notification/teacher education programme is enriched with full of thoughts and It is also as per the need of the hour as our society is changing day by day. No doubt, this a very good document for teacher education, but It seems that all policy makers have given their best aspiration for making the best teacher of the world but implementing the programme may face problems to meet our ground realities and expectations.

References

1. NCTE Notification, 28th November, 2014
2. NCTE (2009), National Curriculum Framework for Teacher Education: Towards Preparing Professional and Humane Teacher, New Delhi.
3. NCTE in collaboration with NCERT (2006) Curriculum Framework for Teacher Education, Draft for Discussion.

✦✦✦

Challenges in Implementation of Two Year New Curriculum : Bachelor of Education

-Dr. Tamanna Kaushal

Assistant Professor,
Department of Education
Sri Lal Bahadur Shastri Rastriya
Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.

Abstract

Education reforms invariably accord highest priority to improve teacher effectiveness. It requires consistent up gradation of teacher education programmes. Over the last two decades in India, the issue of curriculum renewal and extended duration of secondary stage teacher education has received serious attention. Indian education can no longer afford to remain a sleeping titan. 'Update or perish' is the need of the time. It was against his backdrop that the NCTE undertook a major exercise of developing a new National Curriculum Framework for Teacher Education in 1998 and for the first time made the recommendation for beginning a two year B.Ed. programme to prepare quality teachers and also recommended updated curricula for teacher education for various levels of school education from the primary stage to the senior secondary stage- for academic and vocational streams. Changes in norms and curriculum were made to make qualititive improvements in teacher education in India and providing it true statusof a professional course. After implementation of new regulations, the second allotment of

two year B.Ed. course is going on across the nation. It is observed that there is confusion over many aspects of new B.Ed. curriculum among administrator's teacher educators, students and other stakeholders. Teachers and students are in problematic situation by the complexities of the rapid changes in educational programs and planning. So an attempt is made to highlight some of the dilemmas, fear, problems which are overcoming some positive points of Two Year course of B.Ed.

Key Words: B.Ed., New Regulation-2014, NCTE Curriculum

Introduction

Teacher education and school education have a symbiotic relationship. Developments in both these sectors mutually reinforce the concerns necessary for the qualitative improvement of the entire spectrum of education. Education reforms invariably accord highest priority to improve teacher effectiveness. It requires consistent up gradation of teacher education programmes. Over the last two decades in India, the issue of curriculum renewal and extended duration of secondary stage teacher education has received serious attention. A perusal of the reports of various commissions and committees indicate the preference for longer duration of B.Ed. programme. It was also endorsed by the Hon'ble Supreme Court of India in its judgment on 15 June 1993. "The Training Institutes are meant to teach children of impressionable age and we cannot let loose on the innocent and unwary children the teachers who have not received proper and adequate training. True, they will be required to pass the examination but that may not be enough. Training for a certain minimum period in a proper organised training institute is essential before a teacher before a teacher may be duly launched." It was against this backdrop that the NCTE undertook a major exercise of developing a new National Curriculum Framework for Teacher Education which is both contextual and

in tune with the emerging concerns and imperatives of the fast changing canvas of education both nationally and globally. Hence the NCTE prepared the curriculum framework for teacher education in 1998 and for the first time made the recommendation for beginning a two year B.Ed. programme to prepare quality teachers.

Widely known as "NCTE Curriculum Framework-1998", it took stock of the context and concerns of teacher education ranging from 'constitutional goals' to 'commitment and performance in teacher education'; it emphasized the symbiotic relationship between pre-service and in-service teacher education and recommended updated curricula for teacher education for various levels of school education from the primary stage to the senior scondary stage-for academic approach to the task of curriculum updating. Indian education can no longer afford to remain a sleeping titan. 'Update or perish' is the need of the time. Accordingly, the two year B.Ed. course aims at a complete development of the student-teacher; particularly in knowledge and skills, in individual care of the learner and also in methods and evaluation designed to facilitate learning.The course in divided into two parts. It aims at developing understanding of and teaching-learning situation apprehended through intensive study of conceptual explanations, observation and analysis of live classroom situations as well as hand on experiences and longer duration of field experience. Interactive processes, i.e. group reflection, critical thinking and meaning making have been encouraged. The syllabus retains the essence of student teachers being active participants in the learning process and prepares the student teachers for facing the emerging challenges resulting out of globalization and its consequences. Competence to render disciplinaryknowledge into forms relevant to stage specific understanding of teaching-learning situation. Its two year B.Ed. programme promises good quality teacher education by including wide ranger of subjects, topics and

practical's but at the same time it also poses some challenges in its implementation which are as follows:-

Challenges Identified-

Questions on quality improvements: These new regulations were made for qualitative improvement in TEI but at the end of first semester of these courses, discussion among most of the teacher educators are not related to quality dimension at all. New trends of dummy admissions, confusions over the content to be taught, questions, doubts and criticism on the curriculum prepared by various universities are main points of discussion in the community of teacher educators. These may be due to initial stage of implementation but it is also true that some fundamentals issues are yet to be addressed. Some of them are given below.

- What types of arrangements are made for training and orientation of teacher-educators toward new curriculum?
- What should be the criteria to give number of units to teacher Education Institutions?
- How states and Centre will frame policies in school education to create jobs for the teachers?
- How schools will accommodate pupil teachers for long duration of internship?
- What will be the sturcture of internship and how it will be practiced and supervised?

Overload of papers and time restrictions: The numbers of papers are more in each semester which consists of core papers as well as practical papers. It has increase the work load instead of reducing it al all of them have to be covered in particular semester. In each semester some days are also to be allotted to preliminary School Engagement which further reduces the tuition time in college.

Overlapping of content- Overlapping can be seen in the

content of various core papers. Many of the topics like- gender stereotype, inclusive education etc. are repetitive in various papers.

Content lacks demarcation- The content given in the syllabus is vague in the sense that topics are not clearly demarked or defined. Each teacher educator may cover the topic according to their individual interpretation which inhibits uniformity like in Language across the Curriculum socio-cultural variations in languages: Accents and linguistic variations.

Field works- Each core paper has some of the field works which are to be covered along with the theoretical content. These field works are more in number and difficult to be covered in the given time as theoretical content is vast and lesser time is available.

Lack of Logical sequencing of topics- Few of the units of core papers are not in proper sequence which restrict the proper flow of content like in childhood are growing up theories of development are given in first unit whereas their meaning and details are dicussed in later units.

Practical- Some of the aspects of practical also have overlapping with field works of core papers like in childhood and growing up paper field work demands B.Ed. trainees to collect etc and in understanding the self practical also they are required to do a seminar related to similar group. So it becomes difficult to demarcate the work clearly from internal and external viewpoint. Similarly few workshops require them to do a number of observation which also overlapped with practical related to preliminary school engagement. It is also difficult for B.Ed. trainees to understand their relevance.

Teaching of pegagogy- Teaching of pedagogy has been divided into two semesters with teaching of pedagogy one in I semester and teaching of pedagogy two in II semester. The challenge related to this is that the B.Ed. trainees will lose touch with the pedagogy which they have studied in first semester as

preparing lesson plans and delivering them will be part of third semester during internship. Moreover there are field works in pedagogy which can be done better during internship period like Achevement test record so they are difficult to be covered during earlier semesters.

Preliminary School Engagement- Earlier it was called as School experience programme which used to be of 40 days. In two year curriculum it has been expanded into three semesters. First and second semester involves 15 days school engagement and thrid semester consist of 16 weeks intersnship in a school. New the challenges related to school engagement is that althrough the duration has been increased but the activities which are supposed to be done are difficult to implement in schools. For example students need to observe regular class teachers of school in their classes and maintain written record of these observations which may create problems for some schools and ethical grounds. Also during internships B.Ed. trainees need to be in schools for 16 weeks, schools are apprehensive about allowing trainees to be in schools for such a long period as many schools feel the performance of their students will be badly affected and it will affect the overall result and reputation of the school. Moreover as a matter of fact may of the schools are not aware about the changes made in the B.Ed. programme as they have not been ofiicially intimated regarding the same.

Unavailability of Books. The two year course has inroduced many new subjects like language across the curriculum, understanding discipline and subjects but the reference material and books related the them are not easily available, Suggested readings mentioned in the curriculum include books of mostly foreign authors which are difficult to access.

Teacher's Content knowledge - Teacher content knowledge does influence classroom instruction and the richness of learner's experiences. As many of the new subjects and new

topics have been introduced in two year curriculum it is clear that the introduction of new topics is going to place a greater burden on these teachers because of the complex nature of the topics and teacher's unfamiliarity with the content. Teachers lack clarity on curriculum reforms as they were not part of the curriculum development process and they lack orientation which is needed for properly completing these courses.

Lack of Institutional arrangements- In two year B.Ed. programme various practical have been introduced including Drama and Art in Education, Yoga etc which requires resource persons and experts in these areas and also proper institutional facilities and arrangements but most of the institutions do not have such experts and facilities and even recruiting such experts for one practical and making institutional arrangement also adds to their expenditure. Most of the colleges will assign the duties for such practial the their regular teachers who lack expertise in the field and it will also add to their work load.

Difficulties in Evaluation- As most of the fieldworks involve variety of observations and digital aspects so it is difficult on the part of the internal and external evaluator to chech the authenticity of these observations and field works. Also it is equally difficult to evaluate the digital profiles of all activities due to workload of teachers and lack of ICT arrangements.

Measures to be taken to address these challenges

- Number of papers need to be evenly distributed or reduced to reduce the curriculum load.
- Overlapping of content can be reduced by correlating differnt subjects and covering them in proper sequence.
- Content need to be specific and properly defined so that each topic can be delimited which will bring uniformity.
- Overlapping of activities related to field engagement and practical can be reduced by combining them together.

- Some of the Field work activities need to be made suggestive rather than mandatory.
- Teaching of pedagogy should be part of one semester only and it should include some content knowledge along with its pedagogy.
- School authorities need to be officially intimated regarding the expectations from schools according to the changed curriculum so that they can cooperate with the teacher education programmes. The viewpoints of school authorities need to be taken into consideration while implementing school engagment programmes.
- ICT should be a part of core theory papers along with its practical aspect and it should be introduced in the first semester so as to remove the requirement on the part of learners to be computer literate at entry level.
- Proper reference material and good quality books should be made readily available related to the new syllabus.
- Detailed orientation related to new subjects and topics should be provided to the teachers.

Conclusion

This paper illustrates the complexity of curriculum reform. We feel that many of the Issues and challenges discussed above apply not only to new content, but also apply to its execution and evaluation within a new framework. While the new Curriculum is appreciable but there are few teacher who will be able to translate the very complex and vaguely stated outcomes of the curriculum into appropriate learning programmes. It this paper we have attempted to illustrate the ranger of practical demands and challenges placed on teachers and colleges involved in making this curriculum successful.

References

- Chakrabarti, M. (2015). Teaching the Teacher. Retrieved from http://www.thestateman.com/mobi/news/opinion/teaching-the-teacher/83785.html.
- Garcha, S.P. (2014). Two year B.Ed. and M.Ed.: A New Challenge paper published in proceeding of seminar, Transforming Teacher Education in Changing Scenario, ISBN 978-93-80748-85-6
- NCTE (1988). National Curriculum Framework for Teacher Education, New Delhi, NCERT.
- NCTE (2009). National Curriculum Framework for Teacher Education: Towards Preparing Professional and Humane Teacher, NCTE, New Delhi.
- NCTE (2014). Regualtions 2014 & Norms & Standards - NCTE. Retrieved from http://nctendia.org/Curriculum%20Framework/ B.Ed%20Curriculum.pdf Singh, P. (2015). Two year B.Ed. and Quality in Teaching learning Process, proceeding of seminar book ISBN No. 978-93-85446-52-8 Page No. 345-347
- Singh, P. (2013). Teaching Practice Weakest Link in Teacher education, paper published in a proceedings of seminar Teacher Educaion challenges and Opportunities, ISBN No. 978-81-89463-64-9

Web sources:-

- www.ipu.as.in
- www.ncte-india.org
- www.educationinindia.
- www.dauniv.ac.in.

✦✦✦

School Internship During Two Year B.Ed. Programme: Issues and Concerns

-Dr. Pinki Malik

Assistant Professor,
Department of Edcuation
Shri Lal Bahadur Shastri Rastriya
Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.

Abstract

NCTE, 2014 has given so many changes in the curriculum framework of B.Ed. The whole curriculum is distributed in the two broad categories viz. (i) Theory courses (ii) Engagement with field activities. The Theory courses again divided into two parts: Perspectives in Education and Curriculum and Pedagogical Studies. In the course, Engagement with field activities: Task and Assignments that run through all the Courses, School Internship Programme and Enhancement of Professional Capacities. For teaching of all these new subjects, NCTE has suggested to focus on so many components. The present day educational discourse centres around the concepts of self-learning, self knowledge and constructivist approach to teaching and learning which implies the students need to be facilitated to graduate from being mere recipients of knowledge to become assimilators and generators of knowledge. The B.Ed programme provides an opportunity to the prospective teachers to link the educational theory and pedagogical concepts with their practice on the one hand and on the other to test the validity of theoretical propositions in actual in

and out school settings. But there are many problems in two year teacher education programme with reference to theoretical as well as practical aspects. There is a need to analyse the issues and concerns during School Internship Programme. Hence, this paper explored the issues and concerns during the School Internship Programme in teacher education.

Key Words: B.Ed, School Internship, Issues, Concerns, Suggestions

Backdrop

Teacher is the creator of all the scientists, officers and leaders. An efficient and sincere teacher can only serve the purpose. Basically this could be possible only through the practice done by the teacher in his/her pre-service training period. Earlier it was known as teaching practice but after the implementation of new norms given by NCTE, it is renamed widely as School Internship Programme (SIP). Internship program in Teacher Education is of immense significance because it ensures the professional preparation of forthcoming teachers. It provides them a practical chance to develop true understanding of the teaching profession and future projection of working conditions in the profession. A continuous contact through internship would help teachers to choose, design, organize and conduct meaningful classroom activities, seriously reflect upon their own practices through observations, record keeping and analysis and develop strategies for evaluating student's learning for feedback into curriculum and pedagogic practice (NCFTE 2009). But our teachers as well as pupil-teachers are facing many challenges during the school internship programme. Now the issues and concerns related to school engagement is that although the duration has been increased but the activities which are supposed to be done are difficult to implement in schools.

Issues Concerning with Reference to School Internship Programme

The concerned authorities are clarified all their responsibility but in spite of all clear cut instructions given to concerned authorities. But there are many issues in the implementation of school internship programme. These are mentioned below at the three levels (i) pre internship programme (ii) Internship in school (iii) at school level:

Phase-1: Pre-Internship

The pre internship phase shall comprise of 4 weeks, and activities relating to this phase be conducted within the institute/ department.

a) Model/Demonstration Lessons:

The teacher-educator of the concerned method/pedagogy subject will present demonstration lesson and each student-teacher shall observe one demonstration lesson in each of his/her method subjects. But sometimes teacher educators are not competent to deliver the model lesson effectively. And above all there is no separate provision in the curriculum to deliver a model lesson as it was mentioned earlier.

b) Micro Teaching Practice:

Each student-teacher will undergo micro teaching practice session for 5-8 teaching skills in each method subject under the supervision of concerned teacher-educator. Most of the skills are not clear to the students.

c) Simulated Teaching:

During pre-internship each student will deliver at least 4-5 lessons under simulated settings, where he/she is expected to integrate all the teaching skills that have been learned by him/her under micro-teaching. Most of the times, they are not able to integrate all the skills. It needs more and more practice. But student

teachers do not take seriously and all the lessons are not properly evaluated by their teachers.

d) Teaching Learning Materials:

The pre-internship period will also be used for providing basic understanding about the audio visual aids and training on the development of Teaching Learning Mateials in their respective method subjects. The teaching aids are not well prepared by pupil teachers.

Phase-II: Internship in School

In Phase-II of internship the student-teachers will be attached to a particular school for teaching practice for 12 weeks, and during this period they will be expected to deliver 50 lessons in actual classroom situation (i.e. 25 lessons in each method subject), under the supervision of the concerned teacher educator and mentor teacher from within the practicing school. There are some challenges faced by teacher education programme when the internship in conducated in schools:

Incompetency of students and teachers:

The current training programme does not provide proper opportunities to the student teachers to develop competency because the organizers of teacher's training programme are not aware of the present problems of schools. So there should be a close matching between the work schedule of the teacher in the programme and school adoped for teacher preparation in a training college.

Practice teaching neither adequate nor properly conducted:

Inspire of all kinds of elaborate arrangements regarding practice in teaching, student teachers are not serious to the task of teaching, deficient in sense of duty indifferent to children, irresponsible, aimless, lacking innovative measure in teaching which are great obstacles in the development of pedagogical skills.

Lack of subject knowledge:

The teacher training programme does not emphasize the knowledge of the basic subject. The whole teaching practice remains indifferent with regard to the subject knowledge of the student teacher.

Faulty teaching methods:

In India teacher educators are unenthusiastic to experimentation and innovation in the use of teaching methods. Their acquaintance with modern class-room communication devices is negligible.

Problems related to planning:

- Lesson Plan Preparation, Choosing Methodolgy

Problems of Selecting and using teaching aids:

- Designing Activities, Demonstration of Experiments.
- Resources technoloty, space, laboratory supplies, library materials, supports for writing/math technology skills.

Problems of adjustment in school:

- Lack of cooperation from school authority, teachers, supervisors.

Instructional problems:

- Language problem, Communication problem, introducing the lesson,
- Preparing questions, writing Instructional Objectives, Writing on board.

Class organization problems:

- Management of Students, Disciplinary problem, Time management.
- Number of student per class.

- Background/characteristics of students: gender, race, ethnicity, sexual orientation, religion, urban/rural.

Evaluation problems:

- How to make corrections, no ideas about different criteria for evaluating different topics.
- No involvement in the assessment of the students.

Personal and miscellaneous problems:

- Health, food, conflicts in their day today life
- Nervousness, fear, Distance of practicing school

Issues at School Level

There are certain issues with school also. For example students need to observe regular class teachers of school in their classes and maintain written record of these observations which may create problems for some schools on ethical grounds. Also during internships B.Ed. trainees need to be in school for 16 weeks, schools are apprehensive about allowing trainees to be in schools for such a long period as many schools feel the performance of their students will be badly affected and it will affect the overall result and reputation of the school. Moreover as a matter of fact many of the schools are not aware about the changes made in the B.Ed. programme as they have not been officially intimated regarding the same.

All above mentioned challenges also includes the social, psychology and emotional problems also. In study conducted by University of Sindh, Pakistan, it was found that the deptt./college does not provide or arrange any meeting before sending the pupil teacher in the school so that the involvement of pupil teachers is limited in the school boundaries. As a result schools often unaware of tasks that is too performed as supervisors during the program.

Veeman (1984) focuses on "classroom discipline, motivating students, dealing with individual differences, assessing student's works relationships with their parents, the organization of class work, insufficient and/or inadequate teaching materials and supplies, and dealing with problems of individual students" (Page 143).

Suggestions to Overcome the Issues During Internship Programme

The following suggestions are recommeded to solve the above mentioned challenges:

- A teacher has to make herself/himself as a role model in front of the students. Efficient and competent teacher educators should be appointed in teacher education department.
- There is a need to change the past practices to conduct teaching practices in Government schools only. It should be conducted in all type of school i.e. private, public, govt. and convent school also.
- It should be mandatory to depute the mentor-teachers along with student-teachers to participate in the orientation meeting in the TEI's
- The student-teachers should be authorized to participate and contribute in all type of activities of the school, PTA meetings, sports, competition at different levels etc.
- Proper provisions must be ensured that the pupil-teachers are also engaged or provided opportunities in the assessment of student's performance also.
- Selection of relevant school having shortest distance and class availability must be taken care by the Teacher Institutional authorities.
- The Head/principals should meet with the principals of collaborative schools and student-teachers before the

internship program and give them briefing about the program. It is very beneficial for all.

- A hand book of guidelines about internship program from the concerned department must be given to the concerned student-teachers and principals of the concerned schools to act according to the rules and regulations as mention in the document.
- Establishment of Experimental schools in or out the campus must be there so that the academic loss of school student can be avoided.
- Student-teachers should be given chance to develop and discuss their lesson plans with their concerned supervisors before delivering it in classroom.
- The head of concerned department and teacher educators should pay usual visits to the place of internship.
- Proper feedback, guidance and counseling by counselor, teacher educators, and administrator for solving the problems related to internship must be an important part of it.
- The school should prepare the time table for the pupil teachers.
- To explore the needs, interests, levels, motivation, curiosity, discipline, background, participation and memorization skills of the students.
- Student-teachers should be proficient in their communication skills.
- To improve linguistic abilities like listening skill, speaking skill, pronunciation, translation, writing, and reading of the students.
- To improve school environment like sitting arrangement, no. of the students in the class, noise, atmosphere, lightening

facilities, social & cultural activities at their own.

- To take help of instructional material (audio-visul aids) like VCD, DVD, projectors, internet, teacher-learning materials, game, visuals etc.
- Peer observation is a way to provide students with an opportunity to observer pedagogical practices of their colleagues and provide them open and constructive feedback.
- Student-teachers should select their lessons according to the school syllabus in this way there will be no loss of students.
- Use of innovative and child-centre teachniques needs to be encouraged during internship program. Constructivist approach should be used for the transaction of the content for modern student.
- Give the student more and more relevant and lively examples from their day to day life experiences.
- Activity based teaching like cooperative and collaborative teaching-learning can be more beneficial to the elementary level students.
- Conducting action researches to make internship programme success is another way to deal with the existing problems.

Conclusion

The above mentioned suggestions should be implemented in a strict manner. After completion of the program each student-teacher should submit a reflective report about what they hand learned from the internship program. Also each student and supervisor should be encouraged to give suggestions to the concerned department in writing for the future improvement of the program. It can be concluded that necessary steps must be

taken to solve concerned challenges and issues related to internship program by the concerned authorities. Adequate planning and strategies to design successful internship programme by teacher education institution for eliminating obstacles must be prepared and student teachers must be trained to cope up with these problems. Internship should not be concentrated to the delivery of a certain number of lesson plans, but should aim for meaningful and holistic engagement with learners and the school.

References :

- ❖ Brown, D.P. and R.N. Brown, (1990). Effective Teaching practice, Lechhampton, Cheltenham: Thornes Publishers : Ltd.
- ❖ Cohen, L, and L. Manion, (1983). A Guide to Teaching Practice. London: Routldge
- ❖ Dart, L. and P. Darke (1993). School bases Teacher Training A conservative Practice, J. Education for Taeching.
- ❖ Hagger, H.K. Burn and D. Mcintyre, (1995). The School Mentor Handbook, Kogan Page Limited, London.
- ❖ Ministry of Education (2009). National Education Policy. Govt. of Pakistan, 2009.
- ❖ Mirza, S., (2012). Internship Program in Education: Effectiveness, Problems and Prospects, International Journal of Learning & Development ISSN 2164-4063 2012, Vol. 2, No. 1 NCFTE (2009): NCTE Publication, India.
- ❖ National Council For Teacher Education School Internship: Framework And Gudelines (January, 2016) National Curriculum Framework for Teacher Education Towards Preparing Professional and Human Teacher NCTE Document 2003/10

- NCTE (2014) Curriculum frame work two year B.Ed. Programme, NCTE, New Delhi.
- NCTE (2015) Suggestive syllabus for two year B.Ed Programme, NCTE, New Delhi.
- Veeman, S. (1984). Perceived problems of begining teachers. Review of Educational Research, 54 (2), 143-178.

Web Sources:

http://teachingcommons.cdl.edu/cdip/facultyteaching/Overcomingteachingchallenges.html

www. ncte-india-org

✦✦✦

Importance of Teaching Methods and Strategies for Effective Implementation of Curriculum

-Ajay Kumar

Assistant Professor
SLBSRSV, New Delhi.

Abstract: In the present time, Teaching Learning process becoming more complex due to innovations, needs and change in every area of life. The real challenge lies in how to differentiate curriculum and learning activities without increasing and perpetuating an achevement gap between able and less-able students. If differentiation is wrongly interpreted to mean that teachers should hold lower expectations for weaker students and always set them easier learning tasks, then the students will simply fall more and more behind. *The challenge is to provide differentiated 'on-the-spot support' to individual students during lessons to enable them to engage with the same learning activities and keep up with the peer group (Graham etal., 2015).* The other challenge is of course to provide the necessary practical training and using of medhods and strategies for teachers so that they are better equipped to provide differentiated support when it is appropriate. And this is become so difficult when the course period is more than Two Year. We still have a long way to go to achieve that goal. In this paper, main focus is on *how the teaching methods and strategies become important to implementation of curriculum.* What Teachers Need to Know about Differentiated Instruction *gives you a*

concise look at developing and implementing differentiated instruction programs? It provides both general and specific strategies and explores supporting tools and technologies.

Introduction: Simplest definition of method is, "a way of teaching" a procedure or a plan. But considering the deeper meaning of approach as a 'method of a attack' or 'a technique', coupled with a stronger term, strategy, which originated from a military maneuvering or tactic. While method is commonly used in any plan undertaking, an approach is intended to move a group or an individual towards a specific action and strategy suggests the procedure and direction to be followed. Since method embraces that entire one plan before emorking on an important account not only the nature of the subject matter but also how students learn. In today's school the trend is that it encourages a lot of creativity. It is a known fact that human advancement comes through reasoning. This reasoning and original thought enhances creativity.

The approaches for teaching can be broadly classified into teacher centered and student centered. In Teacher-Centered Approach to Learning, Teachers are the main authority figure in this model. Students are viewed as "empty vessels" whose primary role is to passively receive information (via lectures and direct instruction) with an end goal of testing and assessment. It is the primary role of teachers to pass knowledge and information onto their students. In this model, teaching and assessment are viewed as two separate entities. Student learning is measured through objectively scored tests and assessments. In Student-Centered Approach to Learning, while teachers are the authority figure in this model, teachers and students play an equally active role in the learning process. The teacher's primary role is to coach and facilitate student learning and overall compreshension of material. Student learning is measured through both formal and informal forms of assessment, including group projects, student portfolios, and class participation. Teaching and assessments are connected;

student learning is continuously measured during teacher instruction. Commonly used teaching methods may include class participation, demonstration, recitation, memorization, or combinations of these. Here some popular traditional and modern methods are listed those are being used now days:

Traditional methods of teaching that are still being adhered to in the schools:

- Teacher-centric classrooms
- Teachers in the mode of knowledge dispensers rather than facilitators
- Chalk and talk methods
- Regimented classrooms
- Lack of collaboration and group learning
- More emphasis on examinations and results rather than understanding of concepts
- Improper alignment between objectives, activities and assessments

Modern methods in use in education

- Technology-driven classrooms
- Continuous comprehensive evaluation
- Cross-curricular connections
- Inquiry-based learning
- Emphasis on understanding of concepts
- Linking curriculum with life
- Emphasis on skill building, life skills and values
- Smart interactive boards
- BYOD- Bring your own device
- Collaborative learning

- Differential learning
- Activity-based learning and learning labs
- Interdisciplinary learning
- Integrative and social responsibility and civic engagement
- Digitization in teaching, learning assessment and feedback
- Collaborative learning
- Differentiated instruction
- Flipped classroom
- Problem-based learning

Methods plays vital role in teaching. They serve as the avenues that must be followed to realize a desired learning goal. Without a clear decision on how to go about the lesson activities, the discussions would result in a hit-or-miss recitations fragmented facts and information. Every teaching methodology that a teacher decides on follows a unique course of action to insure a successful competition. A teacher should exhibit a distinctive teaching style, complete with all the tools and material that will be used. Hence every teacher must be equipped with knowledge of various teaching approaches and strategies together with the ability to employ each os then with proficiency. What s the importance of such a plan of action that is suggested by a particular methodology? It can assist in a number of ways"

1. The availability and amount of all the teaching devices, equipment and materials will be determined ahead of time. Arrange in a place nearby, they will be picked up and returned easily.
2. The time that will be allotted for each learning task will be approximated and properly sequenced to avoid confusion. An experiment to be conducted in the laboratory room would require precise timing and a smooth flow of the steps. A field trip to a historic placed would need sufficient time

and active participation of some members to lead the class. If a discussion is preferred, the time to be spent for each topic must be followed.

3. A method that would need movement from place to place will require a convenient arrangement of seats and tables to avoid wastage of time and effort. Activities to be performed by groups would likewise require a suitable arrangement of furniture.

4. The method chosen will guide the teacher in determining performance indicators that is, whether the activity is being done correctly and in the right direction. The progress or difficulty being experienced will be easily observed.

5. Substitutions for tools and materials that fail will be remedied immediately. The procedure may be revised by taking alternative steps to save the whole activity.

6. Experience gained from a well-planned, successful methodology develops the teacher's confidence in his/her choice as well as the student's feeling of joy and satisfaction for a lesson learned.

7. The choice of method and its successful implementation is a test of a teacher's competence in pursuing a learning task.

So, it is very important in the teaching learning process and also for the teacher and student also. But there is another aspect related to methods and strategies how the methods and strategies are become useful and fruitful for teaching learning process. Main thing what will be criteria to choose them. A number of factors must be considered such as following:

1. Objectives to be perused.

2. Subject to be taught.

3. Which check the student's abilities?

4. Fulfill student's interests.

5. Based on previous learning experiences.
6. Context of the teaching situation.
7. The kind of participation expected.
8. Knowledge and ability of the teacher.
9. Safety precautions.

Conclusion :

In the light of above cited criteria and importance related aspect we can't ignore methods and strategies that they are very important for the effective implementation of curriculum. And if a teacher wants to organize teaching learning process effectively and successfully; and achieve the goal such in a systemic manner he has to focus and giving time to organize and planing phase.

References:

- Abaci, R., & Kalkan, M. (1999). *The correlation between teacher's pupil control ideology and burnout.* Paper presented at the 20th International Conference of Stress and Anxiety Research Society, Cracow, Poland, 12-14 July.
- Abbey, D., & Esposito, J. (1985). Social support and principal leadership style: A means to reduce teacher stress. *Education,* 105 (3), 327-333.
- Bhatnagar and Alisha (2001). *Journal of Value Education,* 1, NCERT.
- Chandra, S.S. & Renu (2006). Educational psychology Evaluation and Static's Meerut, R. Lal Book Depot.
- Salandanan, Gloria.G (2008), "Teaching Approaches & Strategies" Goodwill Trading com.
- Salandanan, Santoz and Diaz, (2006), "The teaching of Science and Health, Mathematics, and Home Economics, and practical Art", Goodwill Trading Com.

✦✦✦

Improvising Assessment Strategies

-Jitender Kumar

Assistant Professor
Sri Lal Bahadur Shastri Rastriya
Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.

Abstract

The ultimate goal of teaching is understanding. But sometimes it's easier to talk than to teach, as we all know, especially when we need to cover a lot of material in a short amount of time. We hope students will understand, if not now then before test time, and we keep our fingers crossed that their results will indicate we've done our job. The problem is, we often rely on these tests to measure understanding and then we move on. There isn't always time to address weakness and misuderstandings after the tests have been graded, and by that time it's too late for students to be interested. In this paper simply assessment strategies and tips to help teachers become more frequent in their teaching, planning, and curriculum design will be discussed.

Key Words : assessment, strategies and learning.

Introducation

The term Assessment has been widely used by educators to evaluate, measure, and document the academic readiness, learning progress, and skill acquisition of student throughout their learning in life. Different terminologies are there for assessment and evaluation such as Measurment, Tests, Examination, Appraisal and Evaluation. There are certain Learning theories which are

having conceptual frameworks describing how information is absorbed, processed and retained during learning. Behaviourism is a philosophy of learning that only focuses on objectively observable behaviors and discounts mental activities. Piaget proposed that a child's cognitive structure increases in sophistication with development, moving from a few innate reflexes such as crying and sucking to highly complex mental activities. Constructivist learning theroy stated that the process of adjusting our mental models to accommodate new experiences. Assessments are classified based on the different purposes, scopes, attribute measured, nature of information gathered, nature of interpretation and context.

Meaning of Assessment

In education, the term assessment refers to the wide variety of methods that educators use to evaluate, measure, and document the academic readiness, learning progress and skill acquisition of students from pre school through college and adulthood. It is the process of systematically gathering information as part of an evaluation. Assessment in carried out to see what children and young people know, understand and are able to do. Assessment is very important for tracking progress, planning next steps, reporting and involving parents, children and young people in learning.

Purposes of Assessment

Teaching and Learning

The primary poupose of assessment is to improve student's learning and teacher's teaching as both respond to the information it provides. Assessment for learning in an ongoing process that arises out of the interaction between teaching and learning. What makes assessment for learning effective is how well the information is used.

System improvement

Assessment can do more than simply diagnose and identify student's learning needs; it can be used to assist improvement across the education system in a cycle of continuous improvement.

- Students and teachers can use the information gained from assessment to determine their next teaching and learning steps.
- Parents and families can be kept informed of next plans for teaching and learning and the progress being made, so they can play an active role in their children's learning.
- School leaders can use the information for school-wide planning, to support their teachers and determine professional development needs.
- Communities and Boards of Trustees can use assessment information to assist their governance role and their decisions about staffing and resourcing.
- The Education Review Office can use assessment information to inform their advice for school improvement.
- The Ministry of Education can use assessment information to undertake policy review and development at a national level, so that goverment funding and policy intervention is targeted appropriately to support improved student outcomes.

Characteristics of Classroom Assessment

The different characteristics of classroom assessment are given below.

Learner-Centered

The primary attention of teachers is focused on observing and improving learning.

Teacher-Directed

Individual teachers decide what to assess, how to assess, and how to respond to the information gained through the assessment. Teachers do not need to share results with anyone outside of the class.

Mutually Beneficial

Students are active participants. Students are motivated interest of faculty in their success as learners. Teachers improve their teaching skills and gain new insights.

Formative

Assessments are almost never "graded". Assessments are almost anonymous in the classroom and often anonymous online. Assessments do not provide evidence for evaluating or grading students. Context-Specific Assessments respond to the particular needs and characteristics of the teachers, students and disciplines to which they are applied. Customize to meet the needs of students and course.

Ongoing

Classroom assessment is a continuous process. Part of the process is creating and maintaing a classroom "feedback loop". Each classroom assessment event is of short duration.

Rooted in Good Teaching Practice

Classroom assessment builds on good practices by making feedback on student's learning more systematic, more flexible and more effective.

Keys to Quality Classroom Assessment

Key 1 : Clear Purposes

Key 2 : Clear Targets

Key 3 : Sound Design

Key 4 : Effective Communication

Key 5 : Student Involvement

Improvised Assessment Strategies which We Can Use Every Day

1. An Open-ended question that gets them writing/talking

Avoid yes/no questions and phrases like "Does this make sense?" In response to these questions, students usually answer 'yes'. So of Course it's surprising when several students later admit that they're lost. To help students grasp ideas in class, ask open-ended questions that require students that get students writing/ talking. They will undoubtedly reveal more than you would've thought to ask directly.

2. Ask students to reflect

During the last five minutes of class ask students to reflect on the lesson and write down what they've learned. Then, ask them to consider how they would apply this concept or skill in a practical setting.

3. Use quizzes

Give a short quiz at the end of class to check for comprehension.

4. Ask students to summarize

Have students summarize or paraphrase important concepts and lessons. This can be done orally, visually, or otherwise.

5. Hand signals

Hand signals can be used to rate or indicate student's understanding of content. Students can show anywhere from five fingers to signal maximum understanding to one finger to signal minimal understanding. This strategy requires engagement by all student and allows the teacher to check for understanding within

a large group.

6. Response cards

Index cards, signs, white boards, magnetic boards, or other items are simultaneously held up by all students in class to indicate their response to a question or problem presented by the teacher. Using response devices, the teacher can easily note the responses of individual students while teaching the whole group.

7. Four corners

A quick and easy snapshot of student understanding, Four Corners provides an opportunity for student movement while permitting the teacher to monitor and assess understanding. The teacher poses a question or makes a statement. Students then move to the appropriate corner of the classroom they indicate their response to the prompt. For example, the corner choices might include "I strongly agree," "I strongly disagree," "I agree somewhat," and "I'm not sure."

8. Think-pair-share

Student take a few minutes to think about the question or prompt. Next, they pair with a designated partner to compare thoughts before sharing with the whole class.

9. Choral reading

Students mark text to identify a particular concept and chime in, reading the marked text aloud in unison with the teacher. This strategy helps students develop fluency; differentiate between the reading of statements and questions; and practice phrasing, pacing and reading dialogue.

10. One question quiz

Ask a single focused question with a specific goal that can be answered within a minute or two. You can quickly scan the written responses to assess student understanding.

11. Socratic seminar

Students ask questions of one another about an essential question, topic, or selected text. The questions initiate a conversation that continues with a series of responses and additional questions. Students learn to formulate questions that address issues to facilitate their own discussion and arrive at a new understanding.

12. 3-2-1

Students consider what they have learned by responding to the following prompt at the end of the lesson: 3) things they learned from your lesson; 2) things they want to know more about; and 1) questions they have. The prompt stimulates student reflection on the lesson and helps to process the learning.

13. Ticket out the door

Students write in response to a specific prompt for a short period of time. Teachers collect their responses as a "ticket out the door" to check for student's understanding of a concept taught. This exercise quickly generates multiple ideas that could be turned into longer pieces of writing at a later time.

14. Journal reflections

Students write their reflections on a lesson, such as what they learned, what caused them difficulty, strategies they found helpful, or other lesson-related topics. Students can reflect on and process lessons. By reading student journals, teachers can identify class and individual misconception and successes.

15. Formative Pencil-paper assessment

Student respond individually to short, pencil-paper formative assessments of skills and knowledge taught in the lesson. Teachers may elect to have students self-correct. The teacher collects assessment result to monitor individual student progress and to inform future instruction.

Both student and teacher can quickly assess whether the student acquired the intended knowledge and skills. This is a formative assessment, so a grade is not the intended purpose.

16. Misconception Check

Present students with common or predictable misconception about a concept you're covering. Ask them whether they agree or disagree and to explain why.

17. Analogy prompt

Periodically, present students with an analogy prompt: "the concept being covered is like ____because____."

18. Practice frequency

Check for understanding at least three times a lesson, minimum.

19. Use variety

Teachers should use enough different individual and whole group techniques to check understanding that they accurately know what all students know. More than likely, this means during a single class the same technique should not be repeated.

20. Make it useful

The true test is whether or not you can adjust your course or continue as planned based on the information received in each check. Do you need to stop and start over? Pull a few students aside for three minutes to re-teach? Or move on? Perhaps the most accurate way to check for understanding is to have one student try to teach another student what she's learned. If she can do that successfully, it's clear she understood your lesson.

21. "Separate what you do and don't understand"

Whether making a t-chart, drawing a concept map, or using some other means, have the students not simply list what they

thing they know, but what they don't know as well. This won't be as simple as it sounds-we're usually not aware of what we don't know. They'll also often know more or less than they can identify themselves, which makes this strategy a bit crude. But that's okay-the goal isn't for them to be precise and complete in their self evaluation the goal is for you to gain insight as to what they do and don't know. And seeing what they can even begin to articulate on their own is an excellent starting point here.

Conclusion

It is the high time when we have to decide the unwrinkled and congenial way to induce learning which will pave the way to reach the apex where the learning will become the habit. It will be possible with the implementation of the above discussed assessment strategies in the requisite and required amount. So that, learning will become enjoyable and effective.

References

1. Aleamoni, L.M. (1987). Techniques for evaluating and improving instruction. New Directions for Teaching and Learning, No. 31. San Francisco: Jossey-Bass.
2. Angelo, T.A., and Cross, K.P. (1993). Classroom Assessment Techniques : A handbook for college teaches. (2nd ed.). San Francisco: Jossey-Bass.
3. Astin, A.W. (1991). Assessment for excellence: The philosophy and practice of assessment and evaluation in higher education. Phoenix, AZ: Oryx.
4. Chauhan, S.S. (1978) Advanced Educational Psychology, Vikas Publication House Pvt. Ltd., New Delhi.
5. Ebel, R.L.and Freshe, D.A. (2009). Essentials of Educational Measurement, New Delhi: PHI Learning Pvt. Ltd.,

6. Sedlacek, W.E. (2004). Beyond the bid test: Non conitive assessment in higher education. San Francisco : Jossey-Bass.

7. Thorndike, R.M. (2010). Measurment and Evalation in Psychology and New Delhi: PHI Learning Pvt. Ltd.,

8. Banta, T.W. (2007). Assessing student achevement in general education: Assessment update collection. San Francisco, Jossey-Bass.

9. Benjamin S. Bloom et al. (1964) Taxonomy of educational objectives, Longman Group

10. Bresciani, M.J., Zelna, C.L., and Anderson, J.A. (2004). Assessing student learing and development: A handbook for practitioner. Washington, DC: National Association of Student Personnel Administrators (NASPA).

11. McMillan, J. (2013). Classroom Assessment: Principles and Practice for Effective Standards-Based Instruction, 6th ed. Boston, MA: Pearson

12. NCERT (1985). Curriculum and Evalution. New Delhi: NCERT.

✦✦✦

Innovative Practice in Teacher Education Programme

-Manju Kumari

Effort & began for the expansion of teacher education in our country after achieving independence. To fulfil teacher the process to establish teacher training institutions began and along with it began the process to reform the teacher training programmes. The first to suggest reform in this field was Radha Krishnan Commission 1948 education have no fixed answers. No teacher education program can prepare teachers for all the situations they will encounter. Teachers themselves will make the final decisions from among may alternatives. Such judments may be good or poor. Therefore, it is important for teachers to constantly reevaluate their decisions. This can be achieved through collaborative and reflective practices in teacher. In the context of the information and or knowledge societies and lifelong learning strategy, a new frame of pre teacher education needs to be define learning technology development provides opportunities for collaborative engagement, access to information, interaction with content and individual impowerment. Rapid changes in communication technologies enable teachers to move from traditional classroom activities to online classrooms, or online activities in the traditional classrooms. collaborative learning is a team process where members support and rely on each other to achieve an agreed upon goal. The classroom in an excellent place to develop teambuilding skills you will need later in life Cooperative learning is a successful teaching strategy in which small teams,

each with students of different levels of ability, use a variety of learning activities to improve their understanding of a subject.

There is a wide variation among countries with regard to what they believe constitutes an innovation, reform or development in the teaching learning process. For example, the use of colored chalk and basic audio-visual materials may be regarded as being an educational innovation in some developing regions, whereas in other more affluent countries innovations may refer to the development and use of sophisticated technologies and methods, practices etc. In our country also, this electronic technology has dramatically penetrated into every area or our society and every aspect of our social and cultural lives. Today's children have grown up with remote controls and they spend more time in computers, internet, playing video games etc. than reading books; even toys are now filled with buttons and blinking lights. In such a condition, it is very important to focus on "How can we educate this New Generation?" To answer this, a supportive environment, one in which they can create their own ideas; both individually and collaboratively, must be provided. Etymologically, the word "Innovation", is derived from the Latin word "Innovate" which means to change something into something new. It is a promotion of new ideas and practices in education and training. There has been seen a tremendous shift in the ways and means of education services over the years. Research and innovations play an important role in improvin the quality of teachers and the training imparted to them for all levels of teaching. They demand to introduce new ideas and practices in classroom transaction and other curricular and co-curricular activities. The teacher's effectiveness can be enhanced with good leadership and appropriate teaching methodologies. No teacher education programmer can prepare teachers for all situations that they will encounter. Teachers themselves will have to make the final choices from among many alternatives. The purpose of teacher education is to prepare

teachers who have professional competencies to lead the nation forward through their manifold roles. Some Innovative Practices In Teacher Education: Following are some of the innovative practices that need to be focused:

1. Team Teaching, Cooperative or collaborative learning process: When teacher and students have to work under so many constraints, then the practice of "Team teaching or cooperative or collaborative teaching" is always a good option. Team teaching or cooperative learning process is a team work where members support and rely on each other to achieve an agreed-upon goal. Cooperative learning is a successful teaching strategy in which small teams, each with students of different leveles of ability, use a variety of learning activities to improve their understanding of a subject. Each menber of a team is responsible not only for learning what is taught but also for helping teammates learn, thus creating an atmosphere of achievement. Students work through the assignment until all group members successfully understand and complete it.

2. Reflecting Teaching and Reflective Teacher Education: Reflection on one's own work is a key component of being a professional and is essential to teacher education. Teachers must examine their belief, assumptions and biases regarding teaching and learning and determine how those beliefs influence classroom practice. Reflection is a natural process that facilitates the development of future action from the contemplation of past and current behavior. Reflection refers to the ongoing process of critically examining and refining practice, taking into careful consideration the personal, pedagogical, societal and ethical contexts associated with schools, classrooms and the multiple roles of teachers.

3. Constructivism and Teacher Education: The concept of Constructivism has evolved from cognitive psychology. Constructivist paradigm is based on the contributions of Piaget,

Vygotsky, Gardner, Dewey, Tolman and many other. Thus, it is a synthesis of many dominant perspectives on learning. It is believed that the key element of constructivist theroy is that people learn by Innovative Practices in Teacher Education. Constructivist learning is based on student's active participation in problem-solving and critical thinking regarding a learning activity. Student construct their own knowledge by testing ideas and approaches based on their prior knowledge and experience, applying them to new situations and intergrating new knowledge gained with pre-existing intellectual constructs. The teacher is a facilitator or a coach who guides the student's critical thinking, analysis and synthesis abilities throughout the learning process. The teacher is also a co-learner in the process. Hence, teachers should facilitate cognitive change by presenting difficulties through specific tasks that pose dilemmas to students. In this context, problem-solving teaching procedure is defined as a process of raising a problem in the minds of the students in such a way to stimulate purposeful, reflective thinking in arriving in arriving at a rational solution.

4. Blended-Learning and Teacher Education: Blended-learning describes an approach to learning where teachers use technology, usually in the form of Web-Based instruction, in concert with and as a supplement to live instruction or perhaps utilize components of learner-centered Web course with components that require significant instructor presence and guidance. The strength of a blended-learning approach is that it provides a means to ensure learners are supported and guided as they undertake independent learning tasks. Use of the Web in such settings provides many affordances for the teacher and students in the form of communication channels, information sources and management tools. These aspects appear to make blended-learning particularly well suited to teacher training students, especially those in large groups where direct instructor support may be difficult to deliver. Blended-learning commonly describes learning that

combines traditional teaching and learning approaches with information and communication technologies. It is anticipated that blended learning will enhance the student learning experience, at the same time it also demands that the teachers should be trained as online facilitator.

5. Soft Skills and Teacher Education: Development of human capital is an important asset since it drives the development of a nation. Quality human capital comes from quality education process through carefully designed and well planned education system. Soft skills are personal attributes that enhance an individual's interactions, job performance and career prospects and hard skills which tend to be specific to a certain type of task or activity. Soft skills refer to personality traits, social gracefulness, and fluency in language, personal habits, friendliness and optimism that mark people to verying degrees. Soft skills are broadly applicable in teacher education programme, thus the curriculum of teacher education could contribute to the development of a holistic human capital that can foster economic, social and personal development. Infusing the soft skill in the curriculum of teacher education is the need of the profession for it to be successful.

Suggestions

The above observations clearly indicate that teacher education programme at all level needs to be examined critically in terms of its innovativeness. Here are some suggestions which can be used to overcome these problems-

- Identification of the innovative research could be done if all the Departments of Education Countrywide contribute in this area. They may peridically produce the Research Abstracts of the Studies conducted in their respective Departments, which may be made available on the World Wide web.
- There should be networking amongst all the Teacher Education Institution to learn from the innovative practices

of each other.

- It is imperative to strengthen Vocational Teacher Education in almost all the domains of Vocational Education, such as, agriculture, horticulture, sericulture, servicing of the eletric and electronic appliances. Innovative approaches need to be evoled.
- Physical facilities and founds should be adequately provided to the institutions by the government, local bodies and organizations.
- The internship model of practice teaching should be adopted.
- The conventional system of a few demonstration lessons given by a few teacher educators at the beginning of the practice teaching may be replaced by display of some video recorded good lessons in each subject delivered by expert teacher educatiors, teachers and teacher trainees.
- Relevant methods of instruction such as tutorial, discussion seminar, teach teaching and interactive teaching learning should be adopted.
- More co-curricular activities such a physical education, social services, tree plantation and formation of eco club should be organized.
- Modern technological gadgets like computer, video, mass media, OHP should be used at the time of instruction.
- Counselling and follow up programs should be initiated and made effective.
- Teacher educators shall be given proper incentives for the professional growth.
- Publication and subscription to professional journals by the institutions should be encourged.
- Reseach wings in the university departments and selected government colleges should be started.

- A healthy relation among teaching staff would evolve new procedures and more towards new goals.

Conclusion

In innovation is to take of research based knowledge and education the two sides of the same coin and their integration within single policy framework is necessary to achieve the culture of innovation which will energies and sustains the knowledge economy. Teacher education in India is at a new stake in view of the new policies laid down and the globalization processes. Indian Teacher education needs to orient itself to the new challenges and enable its pupil to compete level. The pupil who are pursuing teacher education are required to place community and future citizens at a higher place by possessing new skills and attitudes as well as competitive knowledge in the stream of education concerned. All these can be possible through practice of innovative teaching practices in Teacher Education. If the innovative teaching practices being in vogue as well as promoted by different institutions working in the arena of teacher education, there is every possibility that these practices would certainly attract the attention from the academic fraternity.

References

1. www.journalcra.com (International Journal of Current Research)
2. Prateek Shah, 2004, Teaching and learning in Higher Education.
3. Singh R.P. 2011, Teacher Education Today.
4. Bloom. B.S. (Ed) 1964, Taxonomy of Educational objectives
5. Hassan. D. & Rap, A.V. apparently 2012.

✦✦✦

Evaluation and Rationale of Nai Taleem in the Contemporary context of Teacher Education in India

-Afiya Jamal
PH.D Scholar (IASE)

Abstract

The word "Nai Taleem" isn't new to the students who are pursuing a degree in the field of Education but to the students of other discipline, the philosophical meaning and relevance of this word might be unkown. Nai Taleem, Gandhian philosophy doesn't aim at emphaszing at craft based education alone but it also aimed at inculcating the virtue of brotherhood, mutual cooperation, tolerance, and respect among its students. It's an era when lot of efforts are ongoing in providing education to the masses but it's still needed that we do spare our thoughts on inculcating an education system that is based on the philosophical foundation of Nai Taleem as it does hold its relevance in the contemporary India. The basic education scheme laid lot of emphasis on mutual cooperation, team building, it aimed at narrowing the gap between the rich and the poor but what we see today is a distorted version of that vision. Society doesn't seem to care for the marginalised class of people, the rich are getting rich and the poor are getting poorer. The recent incidences of mass suicide by farmers across the country doesn't display a pleasing portrait of a Nation whose 70% of the rural population are still dependent an agriculture for their basic livelihood. The education system need to be made self-sustaining. The teachers should be trained accordingly so that they

could help in the achievement of sustainable educational growth based on the philosophy of Basic education scheme. The nation could then be secular, sovereign and democratic in true sense.

Introduction

Education should be so revolutionized as to answer the wants of the poorest villager, instead of answering those of an imperial exploier.

- Mahatma Gandhi

Gandhiji, "The father of Nation" as we all know today was the greatest thinker, humanist, revolutionist and utopain who wanted to bring the kingdom of God on this earth (Ram Rajya). Throughout his life he advocated for Truth and Non Violence. He believed that goodness of an individual brings goodness to society. In order to bring peace and harmony in the socety and there can be no better means than the education.

Gandhiji emphasised on child centred, life centred, activity centred and problem centred education that would lead to the overall development of the child in relation to mind body soul and society. Although the concept of Nai Taleem was given by Gandhiji, the term Nai Taleem was coined by Vinoba Bhave. The main perspectives of Gandhiji for bringing the concept of Nai Taleem were based on the fact that India was ruled by a power that was working towards establishing their culture in the ruled part of India with their educational system totally declining our traditional system of education. In no time people were inclined to the British system of education. It was like a bench mark of excellence which Indians wanted to achieve. Gandhiji did not appreciate the education system of British as he called this system a 'National tragedy of first importance' that was not only wasteful but also harmful. The British system of education was an alien system that uprooted the Indian tradition, it brought about a sense of inferiority complex

among the native Indians. It advocated materialism instead of spiritualism, competition and violence rather than Ahimsa. This system of education boosted urbanisation and religious bankruptcy.

The British system of education discouraged the development of indigenous language; as English was the medium of instruction, people gradually became faithful imitators of the west. It further led to the conflict of the intellectuals and the labour classes. This education building. The kind of education system introduced by the British government was an outdated system of education and only few people could avail this.

Gandhiji had the view that the Basic aim of education is harmonious development of the individual and preparing that individual for the service of society. Individual and society are both interrelated and interdependent on one another. In order to fulfil the philosophy of Nai Taleem the role of teacher is given due importance. Teacher must be honest with themselves and "rigorously practicing" as students imbibe well what they see. Teacher's authority should be enforced through ahimsa. It is the duty of teacher to help pupil in discriminating between truth and untruth and develop a sense of logical reasoning among the pupil.

One very important aspect of Nai Taleem was the emphasis on Craft based education. It aimed at kind of education system that develop integrated personality by focussing on life centred and activity centred learning among pupils. Education should develop a sense of gratitude for one's own culture before imbibing the others culture. Instead of English language, education should be imparted in mother tongue to help pupil in familiarising with the content and ease out their way of learning. The benefits of education through rural based handicrafts are listed numerous. Gandhiji believed that it encouraged co-ordination and cooperative learning, inclucated problem solving attitude among pupil. It led to strong motivation, scientific temper, creativity and respect for the labour class. The other benefits of craft based learning as per the

philosophy of Nai Taleem were.

- ⇨ Development of human resources.
- ⇨ Social transformation by exploiting the resouces vailable with the country.
- ⇨ Assured employment to a family member.
- ⇨ Employment opportunity in traditional sector that is under continuous depredation.
- ⇨ Up gradation of technology in traditional sector.
- ⇨ Identification of resources so that it can be exploited.
- ⇨ Help in the development of managerial capacity.
- ⇨ Makes education self-supporting as one can easily bear his expenses without depending on their family.

Methodology of Nai Taleem

The basic methodology of Nai Taleem is based of life-centred, activity-centred, problem centred and production centred education. In his foreword to Educational Reconstruction, Gandhiji described Basic Education as "Education through rural handicrafts". The child was to ply a craft, not mechanically but scientifically, asking "why and wherefore" of every process involved thus the pupil would gain much useful knowledge of subjects, which would thereby appear not as compartmentalised piece of information but well integrated knowledge related to the problems. At a meeting of the Hindustani Talimi Sangh, held at Patna is April 1947, Gandhiji said that life could be divided into three areas-1. natural environment 2. social environment and 3. economic life of the community centring on craftwork. All these areas are not compartmentalised but are related to each other. This method of teaching is called the 'Technique of correlation'. Nai Taleem makes use of this principle to educate a child. It is guided with the theory that a child's curiosity should naturally lead him to acquire knowledge. Almost every activity has its links with the physical

world, social organisation and the world of work. The technique of correlation has phychological principle as every child's mind is an integral whole, welcoming experiences as a unity not as a collection of separated fragments of knowledge. To the young child the traditional division of the curricula into definite subjects which are not only unrelated to one another but are also out of touch with the existing realities of life is often unintelligible. That does not serve the purpose of true education.

The method of teaching and various problems that the Nai Taleem method witnessed during its execution in the real classroom situation were described in an article in Educational India entitled "The methodology of Nayee Talim" in its January, 1947 issue. The author shared his experience as a teacherin the Sewagram Basic School- that was basically an experimental school run under Gandhiji's direct guidance. As per his narration in Nayi Taleem method of teaching pratice precedes and guides theory. The first that is done is to push the child into action. For example giving the child a 'Takli' and let him see his problems, explore its possibilities. He will then seek answer from his teachers in order to satisfy his queires. Here the question arises as to when the teacher should intervene? Should it be done immediately that a question arises in any one child's mind, and thus distract the other children from their work and obstruct their of though? Answering immediately to the child query would no doubt would be better because it will give him further food for his thought. He would come up with more questions. But this is impracticable way of answering individually as it would result in collective loss more than the individual gain. Thus the best way is that teacher should for a while postpone answering the queries and ask each student to write their questions/queries on a piece of paper, let them silently engage in the thoughtful process, thereafter the teacher takes up each question one by one and addresses the concerned students, thus giving importance to individual child and his queries. The

answer should be based on the previous knowledge of the child so that they can relate to it in much better way. The teacher should maintain a diary where all that is taught should be indexed properly. It should also specifically mention when a particular topic has been revised as revision is the essence of gaining fruitful knowledge. These diaries should also keep an account of the questions and answers as they arise in the classroom. Besides diaries the investigation of the class might be summed up in charts and graphs. Periodical exhibition of such charts and graphs greatly help in fixing the knowledge in the minds of the child in an interesting way. While solving the problem of any child the teacher should fulfil two conditions. Firstly, are child's interest must not be lost and secondly the problem in hand must not be lost sight of. The problem should be well correlated with the answers. As rousseaus says, "Don't hurt him by the various sciences but give him a taste of them and the medhod of learning them".

Advantages of Basic Education.

There are numerous advantages of basic education system.

- ➔ It helps in exploring the child's natural instinct for activity based learning. A child is able to naturally explore the new vistas of knowledge by analysing the problem and then solving it.
- ➔ It helps in solving various real life problems by developing problem solving instinct in the mind of the learners.
- ➔ It enables in inculcating the right thinking in the pupil and helps to nauture understanding of inter relations of all knowledge. The child is able to correlate the various dimensions of knowledge. His learning isn't isolated in different compartments of subjects.
- ➔ It develops self-confidence among the pupil and helps in developing all round personality of the child.

Illustrative Example of Methodology of Nai Taleem

It was always a question of concern as to how one can impart knowledge in physics, chemistry, history, mathematics, language and geography with the use of craft based learning. The question also implies scepticism about the potentialities of correlation in craft work, so long the pre-occupation of the marginalised and lowest uneducated classes. A doubt naturally arises in the mind: How can such teaching practice be the means of highest education? This very doubt seems to vanish when we learn how a simple "Takli" an instrument used for spining can be used to impart knowledge in different subjects taught to the pupil.

Arithmetic and Geometry

The distribution of Takli to the children introduces them with the concept of numbers. In connection with problem as to what should be the shape of the cardboard on which Takli revolves and as to why the Takli should revolve in the centre of the cardboard, the concept of angle could be explained. In connection with the construction and nature of the iron rod one can easily learn definitions of point, line, axis, perpendicular, cross section and method of finding volume of cylinder. The study of the box in which the Takli is kept leads to the study of the method for finding the volume of a cuboid or hollow cuboid. The shape of the cone introduces to the concept of finding area of the curved surface of the cone.

Physics

The fact that Takli is a small machine leads to the definitions of machine and mechanics. How does a Takli revolve? This question helps to understand the Newton's first law of motion, introduces the concept of matter and force, the factors involved in motion of the body. A child learns about centrifugal and centripetal forces. The question like why does a Takli stop after a while helps in introducing the concept of Newton's law of gravitation, parallel

forces, acceleration and momentum. Again the search for the reasons as to why the Takli doesn't fall down while revolving leads to the realm of equilibrium,-stable and unstable and the centre of gravity. The reason for circular nature of the disc and the cylindrical nature of the rods leads to the study of friction and Newton's second law of motion.

Chemistry

The rod of Takli is made up of iron and the disc is made up of brass that is an alloy of copper and zinc. By understanding the composition of the rod and disc, the definitions of elements, mixtures, compounds naturally come in to the mind. The rusting of Takli introduces the concept of exidation, chemical and physical changes.

Geography

A simple Takli can introduce the query in the mind of the pupil about the places where iron is found in India and in the world. It helps them to gain understanding about the different geographical locations of significant importance.

Economics, History and Sociology

A simple question like why do we prefer Takli for spinning instead of spinning wheel, stimulate one to think over the extreme poverty of the country, exploitation of the weaker nations by the imperialist countries, the incompatibility of universal democracry and individual freedom with the industrialization of the whole world, the economics of decentralization and self-sufficiency, and hence the necessity of cheap and simple method of production. It also helps in understanding of the national and international trade business. Many lessons in practical sociology as for example benefits of cleanliness, cooperation can be easily given by craft work.

Work as Education

Gandhiji always believed that education through work is the best way of imparting knowledge. In order to validate this thought of educational practice, an experiment was tried out with the seventh grade boys of Sewagram Basic School. This particular batch was first batch undergoing training under the basic scheme and it was confined to the cotton processes required in spining and weaving. The limitation that this experimental batch witnessed was the constant changing of teachers after the turmoil of 9th August, 1942 that left students unprepared and in wild state. The boys were made to carry craft work for nearly five hours. The result showed that in a country where the per capita income was only a few annas a day, a child of 14 earning 1 anna per hour was revolutionary. Thus, suggestng that spinning could become a subsidiary industry for the agriculturalist in periods of enforced idleness. Other benefits observed during the course was increased punctuality and a sense of value for time. It was observed that lack of concentration dropped down the production rate, thus pupil learnt to focus of their work to in order to acheve the stipulated production target. Children learnt how essential cleanliness was to produce quality work. But perhaps the most important lesson that was sought to be taught was that of co-operation which was badly needed for the reconstruction of our villagers during that time to promote the work based education Within two months, the boys showed marked improvement in their general behaviour, which was quite visible to the whole Talimi Sangh Community who had earlier doubted the success of the experiment.

Rationale of Nayi Taleem in the Contemporary context of India

The Gandhiji philosophy of basic education aimed at equity, social justice, non-violence, human dignity, economic well-being and cultural self-respect. Althought India has witnessed 70 years

of its independence but still there is dearth of social justice, lack of economic well-being of the poorest sections of the society, lack of cultural self-respect and absence of violence and brotherhood. With programmes like universalisation of Education, Sarva Shiksha Abhiyan, Operation blackboard, Mid-day meal programme, recommedations by various committees along with the emphsis on education for all has no doubt resulted in growth of literacy rate from 12% at the end of British rule to 74.04% (2011 figure) but the aims of education as desired by the Basic education scheme still remain unfulfilled and unaccomplished.

Certain facts and figures are disturbing when we visualise the present unemployment rate in India. The unemployment rate in India has shot up to a five-year high of 5% in 2015-16, with the figure significantly higher at 8.7% for women as compared to 4.3% for men, says a report by Labour Bureau. According to the fifth annual employment-unemployment survery at all-India level, about 77% of the households were reported to be having no regular wage/salaried person. A recent news in Times of India newspaper with heading "B techs and MBAs in UP line up for sweepers" Jobs, in very disturbing and discouraging that brings into the notice the flaws of the present education system. The basic education scheme as proposed by Gandhiji isn't the solution to all the problems of the current education system but I feel it should be used with modification. that are apt to suit the present educational scenario prevailing in the country.

When every mall and streets of metropolitan cities are flooded with the clothing brand like mufti, United colors of Benettoa, Levis and Puma, the relevance of Takli is lost but we cannot deny the message that it carried with it. A simple Takli was a representation of Swadeshi movement that could be another name of Make in India movement. It aimed at strengthening the weak economic backbone of the nation along with quality and moral education.

In an article, *The relevance of Mahatma Gandhi's Educational Philosophy in the 21st century,* Makarand R. Paranjape says that, "Gandhian educational ideas, founded as they are on certain eternal principles, will not lose their fundamental relevance in the years to come. Our planners will have to think of a self-supporting primary education, which will improve the lot of the poorest of the poor. That such an education would be based on action, problem-solving, and practical activity, rather than mere book learning is also perfectly valid. An integral education, which allows the whole being of a person to grow, an education which emphases character-building and cultural identity, is once again, obviously desirable. It is equally clear that we have failed miserably in our state-sponsored schemes to provide free, compulsory primary education to all. The Gandhian model, therefore, retain its relevance and attractiveness. However, whether such an education can be imparted solely or primarily through the learning of a craft, and whether the potential beneficiaries or the state will accept it remains to be seen. Finally, the Gandhian model needs, in my opinion, a built-in mechanism of absorbing or confronting the newer and newer technologies that are emerging each day. As it stands, it seems to be somewhat backward looking, or at any rate, designed for a static society in which stable ancestral occupations persist from generation to generation. I think the coming age will be one of phenomenal and unprecedented change. But this does not mean that the perennial values that Gandhi lived by and advocated will lose their influence. What this does mean is that we shall have to find newer and newer ways to interpret, understand, impart and live them out."

The basic education scheme laid lot of emphasis on mutual cooperation, team building, it aimed at narrowing the gap between the rich and the poor but what we see today is a distorted version of that vision. Society doesn't seem to care for the marginalised class of people, the rich are getting rich and the poor are getting

poorer. The recent incidences of mass suicide by farmers across the country doesn't display a pleasing portrait of a Nation whose 70% of the rural population are still dependent on agriculture for their basic livelihood. The education system need to be made self-sustaining. Everybody cannot turn out to be doctor, engineers and IAS officers. But that doesn't mean that there education is wasted. The government must analyse the present need of the society by extensively taking in to the account the cultural and historical background of a particular community and help them in excelling in the best possible way. The craft based education can be explored further as per the present need of the society. As for example Takli/spinning could be replaced with the teachings of organic farming, bio-fertilizers, mushrom production technology, single cell protein production that whould definitely bear more fruitful results. The teachers should be trained accordingly so that they could help in the achievement of sustainable education growth based on the philosophy of Basic education scheme.

India is getting literacy but it needs to get educated in true sense so that unpleasant incidences of intolerance and violence could be wiped off from the society. The nation could then be secular, sovereign and democratic in true sense. I believe it is time we pay tribute to the father of the nation by inculcating his philosophy of education in the present education system of our country so that we can overcome the shortcoming that are obstructing us from reaching the vistas of true knowledge and development for all.

References

1. Khanal, V. (2017). *BTechs and MBAs in UP line up for sweepers' jobs-Times of India. The Times of India.* Retrieved 4 April 2017, from http://timesofindia.

indiatimes.com/city/lucknow/BTechs-and-MBAs-in-UP-line-up-for-sweepers-jobs/articleshow/55884377.cms

2. Nayar, D. (1989). Towards a national system of education (1st ed.). New Delhi: Mittal Publ.

3. Relevance of Mahatma Gandhi's Educational Philosophy. (2017). Makarand.com. Retrieved 4 April 2017, from http://www.makarand.com/acad relevanceofmahatma gandhi'seducationalphilosophy.htm

✦✦✦

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016